खण्ड: XV अंक: 1 व 2

जनवरी–फरवरी, 2003

चैतन्य लहरी

आपको मेरे प्रति पूर्णतः समर्पित होना होगा। सहजयोग के प्रति नहीं, मेरे प्रति। सहजयोग तो मात्र मेरा एक पक्ष है। सभी कुछ छोड़कर आपको समर्पित होना होगा।

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

1. आदिशक्ति पूजा, 23-05-2002

11. गुरु पूजा, 21-07-2002

22. गुरु पूर्णिमा, 24-07-2002

26. श्री कृष्ण पूजा, 18-08-2002

38. परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा श्रीमान दामले को मराठी में लिखे गए एक पुराने पत्र का अनुवाद।

42. होली पूजा, 29-03-1983

53. प्रार्थना पत्र

54. सहजयोग कार्यक्रम हेतु 'अनुभव'

56. सहज–कृपा (एक अनुभव)

59. सहजयोग प्रसार का आनन्द

66. श्री माताजी इस्तम्बूल में, इस्तम्बूल जन कार्यक्रम, 23-04-2002

69. धूल–कण

70. पर्वत

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
प्रिंटो–ओ–ग्राफिक्स
नई दिल्ली

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :-
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 (G-11) ऋषि नगर, रानी बाग,
दिल्ली – 110034
फोन : (011) 7013464

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :
चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी – 17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

आदिशक्ति पूजा

23-5-2002, कबैला

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज का दिन आप सबके लिए बिल्कुल ही भिन्न प्रकार का है क्योंकि यह आदिशक्ति की पूजा है और आदिशक्ति पूर्ण हैं। ये केवल बायाँ ही नहीं है, जिसके विषय में आप सब जानते हैं। आप सब केवल बाईं ओर को ही जानते हैं, बाईं ओर को, श्री गणेश से लेकर भिन्न चक्रों में उत्थान के माध्यम से। आरम्भ में मैं आपको दाएँ पक्ष के विषय में नहीं बताना चाहती थी क्योंकि जिन लोगों का भी दाईं ओर से उत्थान हुआ वे सब खो गए। ग्रन्थों से उन्हें गायत्री मन्त्र मिल गया परन्तु इसके विषय में भी वे न जानते थे कि यह क्या है? वो तो बस इसे स्मरण कर लिया करते थे। उन्हें इसका वास्तविक अर्थ भी न पता था और इस प्रकार से वो दाईं ओर को चले गए और संभवतः आज्ञा पर जा फँसे। परन्तु वे आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील थे। उन्हें वचन दिया

गया था कि यदि तुम दाएं पक्ष को ठीक कर लोगे तो आत्म–साक्षात्कार के अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच जाओगे।

परन्तु वहाँ तक कोई भी न पहुँच पाया। अधिकतर भयानक क्रोध की स्थिति में चले गए, अन्य लोगों को श्राप देने उन्हें नष्ट करने के भयानक क्रोधी स्वभाव में वे चले गए। दाईं ओर के उनके झुकाव के कारण उन्होंने ये सारी चीजें सीखीं। उनमें कुण्डलिनी की जागृति नहीं थी। अधिक से अधिक उन्हें आज्ञा चक्र तक पहुँचा दिया गया था। तब वे पूर्णान्धकार की भिन्न अवस्थाओं में जा फंसे। ये सारी पुस्तकें बिना सोच के लिखी गई थीं। दाईं ओर से उत्थान प्राप्त कर लेना सुगम नहीं है कुण्डलिनी को जागृत कर लेना ही सुगम है। कुण्डलिनी सीधे ही व्यक्ति को सभी चक्रों के मध्य में ले जाती है। आज्ञा के स्तर तक लाती है और फिर आज्ञा का भेदन करके सहस्रार को पार करती है।

ब्रह्मरन्ध्र, जहाँ से ये भेदन करती है उसका क्या महत्व है? इसके विषय में मैंने आपको कभी नहीं बताया। परन्तु, अब मैं सोचती हूँ कि आपमें से अधिकतर के लिए वह समय आ गया है। बचपन में तालू अस्थि क्षेत्र में बच्चे का तालू होता है जो सदैव धड़कता रहता है। यह इसलिए धड़कता है कि आत्मा ने इस क्षेत्र से प्रवेश किया था। जब यह बन्द होता है तो आत्मा ह्रदय में स्थापित हो जाती है। अब आप आत्माभिमुखी व्यक्ति हो गए हैं परन्तु सहस्रार में किस प्रकार प्रवेश किया जाए यह समस्या बनी हुई थी। तान्त्रिक लोग बाईं ओर से ऊपर को गए और उन्होनें काली विद्या विकसित कर ली अर्थात बाईं ओर को विकसित कर लिया।

तो दाईं ओर के लोग अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के बन गए, अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के। वो बहुत अधिक महत्वाकांक्षी और आक्रामक हो गए और शाप देकर लोगों की हत्या करने लगे। शाप देने में वे बहुत कुशल थे, हमेशा सबसे आगे होते थे, सबको पीछे धकेल कर उनके अधिकारों का हनन करते थे। उन्हें बहुत ही महत्वाकांक्षी तथा शक्तिशाली माना जाता था। तो ब्राह्मण और क्षत्रिय लोगों ने आक्रामकता को अपना लिया और इस आक्रामक स्वभाव के कारण निःसन्देह वे लोग अत्यन्त शक्तिशाली बन गए। पूरे विश्व पर उन्होनें अपना सिक्का जमा लिया और उन्हें अत्यन्त शक्तिशाली तथा तेजस्वी माना जाने लगा। परन्तु वास्तव में वे ऐसे न थे क्योंकि वो तो अत्यन्त क्रुद्ध स्वभाव के थे। क्रोधी स्वभाव के लोग किसी भी प्रकार से आध्यात्मिक नहीं हो सकते।

अतः उन्हें कहा गया कि तुम्हें आध्यात्मिकता प्राप्त हो जाएगी चिन्ता मत करो, चलते रहो और सातों चक्रों का वर्णन दाईं ओर को किया गया। उनके अनुसार भुः, भूर्वः – भुः ये पृथ्वी है, भूर्वः ये पूरा ब्रह्माण्ड है या हम कह सकते हैं कि पूरा अन्तरिक्ष है। स्वाहाः नाभि चक्र पर अग्नि में आहुति देना है, स्वधा दी गई

आहुति का अपने अन्दर अवशोषण करना है। इसके बाद मन है – हृदय। मन के बाद विशुद्धि का स्थान है अर्थात जनः – सामूहिकता, लोग, लोगों के पास जाना – जनः है। तत्पश्चात् आज्ञा है – तपः ये तप है। तप में ईसा मसीह मध्य में होते हैं आज्ञा के बाईं ओर को जैन मत था और दाईं ओर को ईसाई धर्म। वास्तव में ये उत्थान के पथ नहीं थे। ये तो सत्य–साधकों की ऊर्जा के निकास द्वार थे।

भारत में युगों तक ऐसा होता रहा। सभी गुरुओं, साधुओं और तपस्वियों, सबने ऐसा ही किया। वे कहाँ पहुँचे। ये तपस्वी वो लोग थे लो लोगों को शाप दे सकते थे, किसी को भी अभिशप्त कर सकते थे। अपने एक कटाक्ष से वे किसी का वध कर सकते थे, किसी को जला सकते थे। दाईं ओर की सभी शक्तियाँ उनके पास थीं। परन्तु दाईं ओर की इन शक्तियों के साथ वे कहाँ पहुँचे? मुझे कहना चाहिए कि वे नर्क में पहुँच गए। वहाँ किसी को भी आत्म–साक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ। भारत के पुरातन ग्रन्थों को पढ़ें। यूनान, मिश्र, इंग्लैण्ड और जर्मन लोगों के विषय में पढ़ें। सभी आक्रामक थे। कैथोलिक लोग तथा रोमन भी सभी आक्रामक थे तथा अन्य देशों की भूमि एवं सम्पत्तियों पर कब्जा कर रहे थे। ये सब अत्यन्त आक्रामक थे और उन्हें विश्वास था कि अन्य लोगों की हत्या करनी चाहिए। ये अत्यन्त अपमान जनक तथा क्रोधी स्वभाव के थे। किस प्रकार इन्हें सामान्य बनाया जाए और मध्य मार्ग पर लाया जाए? एक पक्ष, जैसा मैंने आपको बताया, भुः, भूर्वः, स्वाहाः, स्वधा अर्थात आहुति थी। ये कार्य गुरुतत्व द्वारा किया जाता था। इसके बाद मनः और जनः है अर्थात सामूहिकता। ये लोग सामूहिक हो जाते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं हैं, क्योंकि वे अत्यन्त शक्तिशाली हैं और बहुत से लोग उनके साथ हैं। आक्रान्ताओं के लिए आक्रान्त स्वभाव से लोगों के साथ युद्ध करके वे उन पर अत्याचार कर रहे थे।

जैसा कि आप जानते हैं, इतिहास में इस प्रकार की पीढ़ी आई और समाप्त हो गई, युद्ध लड़े गए और बहुत से लोग मृत्यु के घाट उतार दिए गए। हिटलर अत्याचार की पराकाष्ठा थी। मानवता की उन्होनें कभी चिन्ता नहीं कि। अतः ऐसे लोग आज्ञा तक पहुँच गए। आज्ञा पर उन्होनें ईसा–मसीह की हत्या की। ईसा–मसीह को उन्होनें नष्ट कर दिया। मध्य मार्ग से आए हुए बहुत से महान सन्तों को उन्होनें समाप्त कर दिया इनमें से कुछ सन्त तो अवतरण थे परन्तु उन्हें भी नष्ट कर दिया गया। श्री राम के समय से यह सब हुआ। ये सब कुछ घटित हुआ। एक के बाद एक अनगिनत राक्षस आए और उन्होनें विश्व की शान्त संस्कृति को नष्ट किया।

हम उन्हें अत्यन्त अहंकारी, दिखावा करने वाले, अत्यन्त आक्रामक लोग कह सकते हैं ये आक्रामकता आई और बहुत

ही वेग के साथ आई, एक के बाद एक करके आई। यह एक सीमा तक पहुँची। जब–जब भी लोगों ने प्रतिक्रिया की उनकी हत्या कर दी गई, उन्हें नष्ट कर दिया गया। इतने भयानक लोगों को सृजन कर दिया गया था!

ये सभी लोग अत्यन्त आक्रामक एवं विनाशशील थे। आज भी ये स्वभाव हमारे अन्दर है, विशेषरूप से कुछ लोगों में क्योंकि वे आक्रामक स्वभाव के हैं। दाईं ओर के सभी लोगों को ये समस्या थी – क्रोध, आक्रामकता तथा अन्य लोगों पर नियंत्रण करना। इनका विकास रूक गया और आध्यात्मिक उन्नति न हो पाई। वे आध्यात्मिकता प्राप्त करना चाहते थे परन्तु इस प्रकार के आचरण के कारण आध्यात्मिकता उनसे भाग गई। हमारे यहाँ बहुत से अवतरण हुए परन्तु उनकी हत्या कर दी गई उन्हें क्रूसारोपित कर दिया गया और समाप्त कर दिया गया। सामान्य मानव की रक्षा की कोई संभावना न थी। एक दुष्ट व्यक्ति आया और उसने पूरे विश्व को नष्ट कर दिया। एक हिटलर आया और उसने सभी लोगों को सभी देशों को और राष्ट्रों को चोट पहुँचाई और हम सब समाप्त हो गए। यह सब केवल दाईं ओर (आक्रामकता की ओर) झुकाव के कारण था जिसे लोगों ने आध्यात्मिकता प्राप्ति का सुगम मार्ग माना था। परन्तु वास्तव में ऐसा न था।

अतः इन दुष्ट लोगों ने सारी सीमाएं लाँघ डाली और एक ऐसी अवस्था पर पहुँच गए जहाँ वे पूर्णतः राक्षस बन गए। बिना इस बात को महसूस किए हुए कि मानव राक्षस नहीं है ये लोग राक्षस बन गए। उनके गुरु भी ऐसे ही थे, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। परन्तु उन्होनें तो अवतरणों को भी नहीं छोड़ा, उन्हें भी सताया, सभी अवतरणों को सताया गया। जिस प्रकार से इन अवतरणों ने अपनी रक्षा की वह वास्तव में प्रशंसनीय था। परन्तु इन परिस्थितियों में वे कोई विशेष परिणाम न दे सके।

अतः पहला कार्य जो मैंने किया वह था कुण्डलिनी का अध्ययन करना ताकि मैं कुण्डलिनी उठाने के काबिल हो सकूं। मैं जानती थी कि मैं इसी कार्य के लिए आई हूँ किसी अन्य कार्य के लिए नहीं। केवल लोगों की कुण्डलिनी उठानें के लिए ताकि वो मध्य मार्ग पर आ जाए, न दाएँ को जाएं न बाएँ को। परन्तु मैंने आपको केवल बाईं ओर का ज्ञान तथा कुण्डलिनी उठाने के विषय में ही बताया। कुण्डलिनी उठाने के माध्यम से आपने अपना सहस्रार भेदन किया और वास्तविकता के सच्चे आनन्द के क्षेत्र में प्रवेश कर गए। आपके सभी दुर्गुण समाप्त होने लगे। मध्य–मार्ग पर सर्वप्रथम मूलाधार आया। मध्य–मार्ग पर मूलाधार को जागृत कर लेने से आप लोग अत्यन्त पवित्र हो गए, आपमें वासना समाप्त हो गई, आपका हल्कापन चला गया और आप अत्यन्त, अत्यन्त पावन व्यक्ति बन गए। जब तक ऐसा नहीं हो जाता आप सहजयोग में

नहीं रह सकते। आप लम्पट और चुलबुले नहीं हो सकते, ऐसे व्यक्ति नहीं हो सकते जो दूसरों का धन हड़पना चाहता हैं। अत्यन्त आक्रामक व्यक्ति भी सहजयोग में नहीं रह सकता।

अतः ऐसे सभी लोगों को सहजयोग से बाहर फेंक दिया गया और जब उन्हें बाहर फेंक दिया गया तो, मैं कहना चाहूँगी, वे अपने दाँत दिखा रहे थे। अपना बाहर फैंका जाना उन्हें अच्छा नहीं लगा। परन्तु अब उनमें से कुछ लोग इस बात को समझते हैं कि उन्होनें गलतियाँ की हैं।

अतः पहली चीज ये है कि आप अपने अन्दर पावित्र्य–विवेक (Sense of Chastity) विकसित करें। उसका सम्मान करें और उसका आनन्द लें। आपके मूलाधार जागृत होने के पश्चात् ही यह घटित हो पाया है। बाईं ओर का यह पहला चक्र हैं जहाँ आपके अन्दर श्री गणेश विराजमान हैं।

परन्तु दाईं ओर को भी हमारे अन्दर देवी–देवता विद्यमान हैं। कमियों को दूर करने के लिए हर चक्र पर देवता विराजमान हैं। श्री गणेश क्योंकि मध्य में हैं इसीलिए हमें उनके शक्तिशाली पावित्र्य का आशीष प्राप्त हुआ और हम पावनता के सौन्दर्य, पावनता की शक्ति को समझने लगे। इस प्रकार से हमने अपने दाईं ओर के दोषों को समाप्त किया। दाईं ओर युद्ध करने के लिए, हत्या के लिए और क्रोध के लिए थी। इन लोगों के लिए शान्ति न थी। ये केवल इतना ही जानते थे कि किस प्रकार लोगों पर रौब जमाना है और किस प्रकार असहिष्णु होना है।

इस प्रकार वे स्वाधिष्ठान के उच्चतम स्तर तक गए। स्वाधिष्ठान में ऊँचा उठने के कारण सृजनात्मक लोगों में सृजन करने की आक्रामकता जाग उठी – यश अर्जन करने के लिए सभी प्रकार की अटपटी और गन्दी चीजों का सृजन करने की आक्रामकता।

तो ये एक अन्य चीज़ है जो हमें स्वाधिष्ठान से प्राप्त हुई। उन लोगों को जो नाम कमाना चाहते थे या पद हासिल करना चाहते थे उन्हें ये चीज़ दाएँ स्वाधिष्ठान से प्राप्त हुई।

नाभि चक्र तीसरा चक्र है। इस चक्र पर लोग धन कमाने के लिए निकल पड़े, लक्ष्मी नहीं, धन कमाने के लिए, किसी भी प्रकार से धन कमाने के लिए निकल पड़े। उन्होनें पूरे विश्व को धोखा दिया। जो धन उन्होनें इस प्रकार एकत्र किया उससे सभी प्रकार के दुष्कर्म किए। या तो उन्होनें धोखाधड़ी की या वे आक्रामक हो गए। भारत जैसे बाईं ओर के देशों में धोखाधड़ी बहुत थी और दाईं ओर के देशों में आक्रामकता थी। मध्य स्वाधिष्ठान पर जब हम होते हैं तब हमारे अन्दर सृजनात्मकता होती हैं – अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त गहनता पूर्ण आध्यात्मिक कला का सृजन। ये सारे गुण समाप्त हो गए और लोग अवतरणों को भी बुरी आदतों से पूर्ण दर्शाने लगे। इस उन्नति के साथ सभी प्रकार की गन्दगी भी आई।

इसके बाद जैसा मैंने आपको बताया नाभि चक्र है। नाभि चक्र पर लोग धन के पीछे पड़ गए। बाईं ओर के लोग धन बना रहे थे और दाईं ओर के धन के कारण आक्रामक हो गए थे। धन कमाने वाले लोगों ने सोचा कि वे विश्व के शिखर पर हैं। जिसने धन प्राप्त कर लिया वह सोचने लगा कि मुझसे श्रेष्ठ कोई भी नहीं है। इस तरह की सोच ने उन्हें समाप्त कर दिया। यह सोच उन्हें समाप्त कर रही हैं और उन्हें उस बिन्दु तक ले जाएगी जहाँ वे इस बात को समझ सकेंगे कि धन विनाश के लिए नहीं है। धन तो निर्माण के लिए है, देश के निर्माण के लिए, मानव में शान्ति, प्रेम, सहयोग तथा सभी प्रकार के अच्छे गुणों के निर्माण के लिए। तत्पश्चात् यही आक्रामक लोग माँ के चक्र पर आए और यहाँ तो माताएँ भी भयानक थीं जिन्होंने अपने बच्चों पर तथा अन्य सभी लोगों पर रौब जमाने का प्रयत्न किया। अपने बच्चों पर वे कुछ भी बलिदान न कर सकीं। हमारे यहाँ बहुत सी महिलाएँ आईं जो अपने पतियों और बच्चों के प्रति बहुत आक्रामक थीं। यहाँ तक कि पुरुषों में भी पितृत्व भाव मृत होकर समाप्त हो गया है।

जब मैं पृथ्वी पर अवतरित हुई तो सभी लोग ऐसे ही थे। इनके कारण मुझे सदमा पहुँचा। ये कैसे मानव हैं! इनके लिए मैं क्या करूँगी? किस प्रकार मैं इनकी कुण्डलिनी जागृत करूँगी? ये तो नाभि चक्र पर ही खो गए हैं। परन्तु अब यह माँ का चक्र है। उनमें न पितृत्व था और न ही मातृत्व। ये लोग इतने स्वार्थी, स्वयं सीमित (Self Centred) तथा रौबीले थे जिन्होनें अपने बच्चों को बाहर निकाल दिया। यह हृदय चक्र था।

तत्पश्चात् सामूहिकता का चक्र आया उसे विशुद्धि चक्र कहते हैं। विशुद्धि चक्र पर लोगों ने पूरे विश्व पर कब्ज़ा करना चाहा। पूरे विश्व को उन्होनें अपना साम्राज्य बनाना चाहा ताकि वे सम्राट बन सकें। उन्होनें साम्राज्य बनाए और इस प्रकार से अमानवीय व्यवहार किए जो कर पाना मानव के लिए असंभव है। मैं कहना चाहूँगी कि ये लोग वास्तव में राक्षस थे। ये राक्षसी गुण आज भी बने हुए हैं। इन लोगों के आचरण से और सारे कार–व्यवहार से आप देख सकते हैं कि ये किस प्रकार अन्य लोगों से व्यवहार करते हैं, उनसे किस प्रकार का आचरण करते हैं और ऐसे लोगों का सृजन करते हैं जो आक्रामक हैं और आध्यात्मिकता विरोधी हैं। इन लोगों के कारण यह विश्व दोतरफा बन गया जिसमें ऐसे लोग हैं जो आक्रामक हैं और दूसरों को कष्ट देते हैं। यह दो तरफा विश्व आज भी है, परन्तु बहुत कम है। इसका श्रेय सामूहिक सूझ–बूझ को जाता है। बहुत सी अच्छी संस्थाओं की स्थापना की गई परन्तु वे भी कुछ विशेष कार्य नहीं कर रही हैं। लक्ष्य प्राप्ति में वे कुछ ख़ास सफल नहीं हैं क्योंकि इनके उच्च पदारूढ़ लोग ही सभी कुछ नियंत्रित कर रहे हैं। परन्तु नियंत्रण किसका? वो

स्वयं को नियंत्रित नहीं करते अन्य लोगों को नियंत्रित करते हैं। उनके आचरण ने इस चक्र के सारे कार्य को ही बिगाड़ दिया है।

अपने आप यदि सामूहिक रूप से आप चहुँ ओर देखें तो सर्वत्र युद्ध हो रहे हैं, लड़ाईयाँ हो रही हैं, मार काट हो रही है और विनाश हो रहा है। यह कैसे हो सकता है? इस विश्व में अब बहुत से आध्यात्मिक लोग हैं। कारण ये है कि आध्यात्मिक लोग अत्यन्त मौन हो गए हैं और अपने आध्यात्मिक जीवन का भरपूर आनन्द ले रहे हैं। ये अत्यन्त निश्चेष्ट एवं शान्त हो गए हैं परन्तु इस प्रकार से शान्ति नहीं आ सकती। आपको गतिशील होना होगा और इस विश्व में शान्ति लानी होगी। इसके लिए आपको कुछ न कुछ करना होगा। अपनी उन्नति से हम लोग बहुत संतुष्ट हैं परन्तु हमें यह देखने की चिन्ता नहीं है कि अन्य लोगों ने क्या उन्नति की है, वे कहाँ तक पहुँचे हैं, हम उनसे कहाँ मिल सकते हैं और किस प्रकार उन्हे परिवर्तित कर सकते हैं? अपने स्तर पर मैं बहुत सी चीजें परिवर्तित कर सकती हूँ, परन्तु आप लोगों ने अपने स्तर पर कितने लोगों को परिवर्तित किया है? आपने क्या किया है? ये बात देखी जानी है। अभी भी आप आज्ञा पर अपने अहंकार में रहते हैं और अपनी ही शान्ति से अत्यन्त प्रसन्न हैं।

आज यह सबसे बड़ी विपत्ति है जिसका सामना आज यह विश्व कर रहा है कि जो लोग आध्यात्मिक भी हैं और जिन्होनें महान बुलन्दियाँ प्राप्त कर ली हैं उन्हें तनिक सी भी चिन्ता नहीं है कि क्या किया जाना चाहिए! अपनी आध्यात्मिकता का आनन्द लेने के लिए वे लोग पूजाओं में आते हैं अधिक से अधिक आध्यात्मिकता प्राप्त करते हैं। परन्तु अन्य लोगों को परिवर्तित करने के लिए उन्होनें कोई सामूहिक कार्य नहीं किया। कुछ लोग, एक दो लोग कार्य कर रहे हैं, बस। बाकी सब मज़े में हैं और इस प्रकार से आनन्द उठा रहे हैं कि लोग उन्हें महान आत्माएँ और अच्छे लोग मानते हैं।

मैं चाहूँगी कि आप लोग अन्तर्वलोकन करके देखें कि आपने कितना सामूहिक कार्य किया है। आप कितने लोगों को लाए हैं। किसके साथ आप बातचीत करते हैं, कितने लोगों को आपने सहजयोग के विषय में बताया है? केवल इतने से लोग यहाँ हैं। ईसा–मसीह के केवल बारह शिष्य थे, वे आप सबसे कहीं अधिक गतिशील **(Dynamic)** थे।

अतः अब आप लोग दाईं ओर (क्रियाशक्ति) का उपयोग करें। जब आप लोग दाईं ओर का उपयोग करेंगे तो प्रगतिशील लोगों का सृजन होगा जोकि बीमार, रोगी, अत्यन्त मौन और निष्क्रिय लोग न होंगे। ऐसे लोगों का सृजन सहजयोग का लक्ष्य न था। सहजयोग का लक्ष्य परिवर्तित करना है बहुत से लोगों को परिवर्तित करना। जो लोग ये कार्य कर रहे हैं, मेरा आर्शीवाद उनके साथ है।

परन्तु जो स्वयं तक सीमित हैं, वह कोई अच्छी बात नहीं है। आपके देश में कितने लोगों ने सहजयोग अपनाया। पता लगाएं कितने लोगों पर आपने सहजयोग कार्यान्वित किया है।

अतः आप का योग अधूरा है। यह बाईं ओर का अधूरा योग है जिसमें आप बहुत, प्रेममय हैं, बहुत करुणामय हैं। ऐसे हैं, वैसे हैं आप आक्रामक हो जाऐं। परन्तु मैंने ये भी देखा है कि लोग लीडर बनना चाहते हैं। वे कुछ बहुत बड़ी चीज़ बनना चाहते हैं। परन्तु आपने कितने लोगों को आत्म– साक्षात्कार दिया है, कितने लोगों से सहजयोग की बातचीत की है? मैंने देखा है कि हवाई जहाज पर जाते हुए, गलियों में चलते हुए लोग सहजयोग की बात करते हैं परन्तु यहाँ पर हम सहजयोग को अपनी महानता के लिए और स्वयं को समझने के लिए उपयोग कर रहे हैं। सहजयोग आपको इसलिए नहीं दिया गया। यह आपको इसलिए दिया गया है कि आप बहुत सारे लोगों को आत्म–साक्षात्कार दें। युवाओं से, युवा पीढ़ी से मेरी प्रार्थना है कि अपनी सहज शक्तियों को बेकार की चीज़ों में वैसे नष्ट न करें जैसे पुराने लोगों ने किया। अच्छा होगा कि आप आगे बढ़ें। सहजयोग की बातचीत करें और सहजयोग को फैलाएं। इन लोगों की रुचि स्कूल चलाने में, अनाश्रितों की देखभाल करने में तथा ऐसे ही अन्य कार्यों को करने में है। यह आपका कार्य नहीं है। आपका कार्य बहुत से सहजयोगी और सहजयोगिनियाँ बनाना है। परन्तु ऐसा नहीं हो रहा मैं देखती हूँ कि ऐसा नहीं हो रहा है। क्रियाशक्ति (Right Side) के उपयोग का अभाव है। आपको क्रियाशील होना पड़ेगा। आपको कुछ नहीं होगा।

कोई आपको मार नहीं सकता, कोई आपको परेशान नहीं कर सकता, कोई आपको गिरफ्तार नहीं कर सकता। ये मेरा वायदा है। आपमें शक्तियाँ हैं परन्तु यदि आप इनका उपयोग नहीं करते तो आप ऐसे ही हो जाएंगे। यही कारण है कि हम निष्चेष्टता के स्तर पर आ गए हैं। हमें ये बात समझनी होगी कि हमें अपनी क्रियाशीलता का उपयोग करना होगा। क्रियाशीलता का बहुत महत्व है।

अगली बार मैं आपको दाईं ओर के विषय में बताऊँगी, आपमें कौन–कौन सी शक्तियाँ हैं। आप लोग चाहे जो करें आप तामसिक प्रवृत्ति (Left Sided) नहीं हो सकते। अतः पूरी सूझ–बूझ के साथ उचित दिशा में आप अपनी क्रियाशीलता (Right Side) का उपयोग करें, हिटलरों की तरह से निरंकुश नियंत्रक बन कर नहीं। सहजयोगियों में हिटलर भी हुए, परन्तु अब आप लोगों के लिए समय आ गया है कि अब आप पूर्वकालीन सन्तों से भी आगे कुछ करें ताकि सहजयोग कार्यान्वित हो सके। इसे स्वयं तक सीमित न रखें। अपने परिवार, अपने बच्चों और अपने आनन्द के लिए इसे सीमित न करें। सहजयोग इस कार्य के लिए नहीं है। यह तो पूरे विश्व को परिवर्तित करने के लिए

है आपको इसके बारे में सोचना होगा। आप क्या कर रहे हैं, आप क्या हैं और सहजयोग से आपने क्या उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं?

इसके बाद हम आज्ञा पर आते हैं। आज्ञा पार करने पर सहजयोगी ऐसे बन गए कि वे कुछ भी सहन कर सकते हैं, कोई भी कष्ट उठा सकते हैं। हम ऐसा नहीं चाहते, हम तो अन्य लोगों की तकलीफें और उनकी आक्रामकता दूर करना चाहते हैं। हमारे पास उस प्रकार की व्यवस्था नहीं है वैसी सूझ–बूझ हमारे पास नहीं है। यदि ये कार्यान्वित हो जाता है तो आप बिल्कुल भिन्न प्रकार के व्यक्ति बन जाएंगे।

अतः हम सन्तों जैसे बन गए हैं, जैसे सन्त अपने आश्रम के हॉल के सभागारों में बैठे रहते हैं वैसे ही बन गए हैं, उससे आगे कुछ नहीं।

अतः बिना किसी आक्रामकता के हम यदि कुछ सकारात्मक कार्य करने का प्रयत्न करें तो बेहतर होगा। मैं जानती हूँ कि आपमें से कुछ लोग अभी भी बहुत आक्रामक हैं और दिखावा करते हैं। ये बात मैं जानती हूँ। परन्तु यदि सामूहिक रूप से कार्य करने की इच्छा आप में जाग जाए तो आप जान जाएंगे कि आपमें क्या कमियाँ हैं। अभी भी आपके व्यक्तित्व में क्या अभाव हैं। ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। आज्ञा चक्र पर बहुत से सहजयोगी लड़खड़ा जाते हैं। मैं नहीं जानती कि उन्हें क्या हो जाता है? मैंने उन्हें बताया है कि वे आज्ञा चक्र पर सबको क्षमा करें परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि आप लोगों को गलत कार्य करते चले जाने की आज्ञा दे दें। आप क्योंकि क्षमा करना चाहते हैं इसलिए झगड़ा न करना, कुछ न कहना, इन चीजों से दूर रहना, बस क्षमा कर देना, बहुत आसान है। नहीं। जाकर उस व्यक्ति से बात करें और उसे बताएं कि ये गलत है। आपको इसका सामना करना पड़ेगा। यदि आप इसका सामना नहीं कर सकते तो आप बेकार हैं। किसी भी अन्य साधारण व्यक्ति की तरह से हैं। आपके आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने का क्या लाभ हुआ।

अतः अब हमें यह समझना है कि इतना ही काफी नहीं हैं कि हमारे अन्दर चैतन्य है कि हम ठीक ठाक हैं तथा लोगों को रोगमुक्त कर सकते हैं। यही अन्तिम – शब्द नहीं हैं। नहीं आपको सहजयोग फैलाना है, आपको जनता में जाना है। इस मामले में सामूहिक होकर आपको सहजयोग फैलाना है। विश्वभर में इतने अधिक सहजयोगियों के होते हुए भी हमने कोई विशेष उन्नती नहीं की है। अतः अब आप ही लोगों ने इसकी योजना बनानी है कि आप क्या करना चाहते हैं, किस प्रकार से इस कार्य को करना चाहते हैं, किस प्रकार से सहजयोग फैलाना चाहते हैं? ये बहुत महत्वपूर्ण है। आप लोग सहजयोग की बात–चीत करने और भजन गाने में बहुत कुशल हैं परन्तु बहुत सारे लोगों को सहजयोग में लाने के पक्के

प्रभावों के बिना ये सब चीज़ें व्यर्थ हैं।

तुर्की जैसे छोटे से देश में पच्चीस हजार सहजयोगी हैं। इसके विषय में आपको क्या कहना है? वे सब मुसलमान हैं। पच्चीस हजार मुसलमानों का सहजयोगी बनना! जबकि अन्य किसी भी देश में यह संख्या बहुत कम है। वो लोग बहुत धनी नहीं हैं परन्तु वो अपने आत्म–साक्षात्कार की तथा अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार देने की चिन्ता करते हैं। आश्चर्य की बात है किस प्रकार यह कार्यान्वित हुआ, किस प्रकार ये फैला!

अपनी समस्याओं, अपने शत्रुओं, अपनी शक्तियों के विषय में सोचने के स्थान पर अन्य लोगों को शक्ति देकर उन्हें सहजयोगी बनाने के विषय में सोचें। ऐसा करना बहुत आवश्यक है। आप यदि सहस्रार में हैं तो आपके पास ये सब शक्तियाँ हैं। सहस्रार में होकर भी यदि आप सहजयोगी नहीं फैलाते तो आत्म–साक्षात्कार लेने का क्या लाभ है? केवल अपने लिए? ऐसा करना अत्यन्त स्वार्थ–पन है। अतः मैं कहूँगी कि अपनी गरिमा, अपना यश, अपना नाम फैलाने के स्थान पर, कृपा करके, सहजयोग में अधिक से अधिक लोगों को लाएँ। अत्यन्त गतिशील शक्ति के साथ कार्य करें।

बहुत से लोगों ने मुझसे शिकायत की है कि सहजयोगी मुर्दों सम हैं। क्या आप ऐसे ही हैं? मुझ जैसे अकेले व्यक्ति ने इतना सारा कार्य कर डाला तो आप लोग क्यों नहीं कर सकते? क्या अपने देश में आपने इसे सर्वत्र कार्यान्वित किया है इसके बारे में सोचें। जब तक आप इस कार्य को नहीं करते आप संपूर्ण नहीं हैं आप अधूरे हैं और आदिशक्ति की शक्तियों को आपने पूरी तरह से नहीं समझा है। इसीलिए मैं आपको बता रही हूँ कि आदिशक्ति के रूप में मेरी पूजा करने के लिए आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। यह अर्ध–निष्क्रियता नहीं है, नहीं। यदि ये कार्यान्वित नहीं होता तो क्या लाभ है? तब यह किसी अन्य एहसास की तरह से है, इसका कोई महत्व नहीं? आपने सहजयोग को केवल फैलाना ही नहीं है लोगों को परिवर्तित करना है और उन्हें महसूस करवाना है।

अपना पूर्ण आशीष, पूर्ण प्रेम और पूर्ण शक्तियाँ मैं आपको देती हूँ परन्तु समझने का प्रयत्न करें, ठीक है?

आप सबका हार्दिक धन्यवाद।

गुरु पूजा

रविवार, 21 जुलाई 2002, कबैला, इटली

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

भारत में सभी लोग मॉनसून की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके विषय में वो बहुत चिन्तित हैं क्योंकि वहां बारिश बिल्कुल नहीं है। अतः मैं बारिश को बन्धन दे रही थी और बारिश यहां हो गई। अब दूरदर्शन पर उन्होनें बताया है कि भारत में वर्षा होने वाली है। परन्तु वर्षा पहले इटली में हुई। मुझे बताया गया था कि इटली में भी आपको वर्षा की बहुत जरूरत है। पहली वर्षा कुछ दिन पूर्व हुई और अब ये दूसरी वर्षा है।

हमारी शक्तियों को समझने की समस्या बनी हुई है। परन्तु वर्षा इतनी करुणामय है कि यह उचित समय पर कार्य करती है। वर्षा के आज्ञाकारी स्वभाव और तुरन्त कार्य करने पर मैं हैरान हूँ।

आज महान दिन है क्योंकि आज हम सब गुरुपूजा उत्सव मना रहे हैं और उन सब महान गुरुओं को स्मरण कर रहे हैं जो पृथ्वी पर सत्य के विषय में बताने के लिए अवतरित हुए। बहुत से गुरु अवतरित हुए और अपने अपने स्तर पर मानव को यह समझाने का जी जान से प्रयत्न किया कि आध्यात्मिकता क्या है। परन्तु इतनी विषमता है कि लोग इस बात को कभी भी नहीं समझे कि आध्यात्मिकता हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है तथा हमें परमात्मा के प्रेम को सर्वव्यापी शक्ति से एकाकारिता प्राप्त करनी है।

उन्होंने अपने सारे प्रयत्न गलत दिशा

में ही किए। निःसन्देह मानव बहुत अधिक बुद्धिमान था, पशुओं से कहीं अधिक और उसने खोज आरम्भ कर दी–सत्य की नहीं, एक प्रकार से अपनी मुक्ति की खोज – या मेरी समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ–अपनी उन्नति की खोज। और इस दिशा में यह भूल गए कि सर्वप्रथम उन्हें आध्यात्मिकता की खोज करनी होगी क्योंकि आध्यात्मिकता महत्वपूर्ण है।

हमारे सम्मुख दो प्रकार की यात्राएं थी। एक बाईं ओर से और दूसरी दाईं ओर से। भारत में, न जाने क्यों, लोग जंगलों में चले गए और सन्त बन गए। वो लोग दाईं ओर की तपस्या कर रहे थे अर्थात एक के बाद एक पंच तत्वों में पेंठना और पंच तत्वों पर स्वामित्व प्राप्त करना।

निःसन्देह इसमें सच्चाई है। आपने देखा है कि किस प्रकार दीपक (बादलों की गर्जन) आपको यह बताता है कि आपकी स्थिति क्या है। मोमबत्ती की ज्योति आपको बता सकती है कि आप भूतबाधित हैं या नहीं। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? मोमबत्ती को इतना अधिक ज्ञान है! मान लो आपको हृदय चक्र की समस्या है, आपको हृदय रोग है, तो मोमबत्ती इसे दर्शाएगी और यदि आप मोमबत्ती के प्रकाश से अपना इलाज करें तो आप स्वयं को रोगमुक्त कर सकते हैं।

अतः यह इतनी संवेदनशील है कि यह केवल रोगमुक्त ही नहीं कर सकती पूर्ण सक्षम भी है। यह केवल इतना ही नहीं बताती कि आप बीमार है और आपको समस्या है परन्तु आपको रोगमुक्त करने में भी सक्षम है। यही कारण है कि भारत में अग्नि की पूजा की जाती थी, प्रकाश की पूजा की जाती थी। सबसे पहले अग्नि की पूजा की जाती थी। संभवत वो जान गए थे कि अग्नि सब कुछ जानती है।

अतः आन्तरिक इन सभी तत्वों की आन्तरिक चेतना के विषय में वो जानते थे और इन्हीं कारणों से वे इसकी पूजा करते थे। पूजा से पूर्व इन तत्वों के देवी देवताओं का आह्वान किया जाता था कि वो पूजा की साक्षी बनें। परन्तु यह सब दांई ओर की गतिविधी (कर्मकाण्ड) बन गई। बांई ओर के बिना दांया पक्ष अत्यन्त भयानक होता है। आपमें यदि दांया पक्ष (कार्यान्वयन शक्ति) नहीं है तो भी यह अत्यन्त भयानक बात है। परन्तु सर्वप्रथम आपको अपने बांए पक्ष (भक्ति पक्ष) को विकसित करना होगा। आरम्भ में सहजयोग में भी हमने यही किया।

करुणा, प्रेम सबके लिए सौहार्द भाव ही बांया पक्ष (भावना पक्ष) है। हम इतना ही कह सकते हैं कि देवी का आशीर्वाद जिसका वर्णन देवी महात्म्य में किया गया है कि देवी आपके अन्दर भिन्न रूपों में विराजमान है। आपके अन्दर वह श्रद्धारूप में विराजमान है, निद्रारूप में विराजमान

है। आपके अन्दर वो भ्रान्तिरूप में विराजती हैं। बांई ओर की बहुत सी चीज़ें हैं। जिनका वर्णन पहले ही किया जा चुका है। जब मैंने आपको सहजयोग के विषय में बताया था तो मैं आपके बाएं पक्ष को बहुत दृढ़ करना चाहती थी।

जिन लोगों ने दाएं पक्ष (राजसी तरीके) अपनाए वो अत्यन्त आक्रामक हो गए और उन्होनें पंच तत्वों के सार पर स्वामित्व प्राप्त कर लिया। यहाँ तक तो ठीक है परन्तु ये लोग अत्यन्त क्रोधी स्वभाव के हो गए। इतने क्रोधी स्वभाव के कि ये लोगों को शापित करने लगे। अत्यन्त कठोर बातें वे लोगों से कहते तथा सर्वव्यापकता पर वे विश्वास न करते। इतनी भयानक चीज को उन्होनें अपना लिया था।

भारतीय शास्त्रों में बहुत सी घटनाओं में आप देख सकते हैं कि लोग शाप दे देते हैं और यह बात आम थी। गुरु लोग किसी को भी इसलिए शाप दे दिया करते थे क्योंकि उनमें करुणा और प्रेम का अभाव था और आक्रामकता की शक्ति के लिए उनके पास और कुछ न था। परन्तु अब हमने देखा कि जो लोग आक्रामक है, भक्ति बिना जो दाईं ओर का मार्ग पकड़ते हैं, परमात्मा के आशीर्वाद के बिना जो चलते हैं वे वास्तव में राक्षस बन सकते हैं और मानवता के लिए बहुत बड़ा खतरा बन सकते हैं (बादलों का गर्जन)। यह बहुत गम्भीर चीज़ है। अपनी बुद्धि द्वारा, अपनी सोचने की शक्ति द्वारा आपका अहम् उस सीमा तक जा सकता है जहाँ यह आपके लिए ही समस्या खड़ी कर दें।

हमने देखा है कि इस समस्या के परिणाम स्वरूप बहुत से रोग हो सकते हैं जो पूर्णतया लाइलाज हैं। दाईं ओर के कुछ लोग तो रक्त कैंसर के शिकार हो सकते हैं। रक्त कैंसर का हमने इलाज किया है परन्तु ठीक होने के पश्चात् भी आप वैसी ही आक्रामकता की ओर लौट सकते हैं क्योंकि आप सोचते है मैं ठीक हूँ। ऐसे लोग सदैव अन्य लोगों में दोष खोजते हैं, कि फलां व्यक्ति अच्छा नहीं है, वह हानि पहुँचा रहा है। ये लोग दूसरों के दोष तो देख सकते हैं परन्तु अपने दोष इन्हें दिखाई नहीं देते। उनका चित्त बाहर की ओर होता है अपने आप पर नहीं। कभी वे यह नहीं देखते कि उनमे क्या दोष है। वे तो बस अन्य लोगों के दोष देखने में लगे रहते हैं। किस प्रकार से वे आक्रामकता की भयानक सीढ़ी पर चढ रहे हैं जो उन्हें भयानक रोगो में ढकेल सकती है।

जैसा मैंने आपको बताया, सर्वप्रथम रक्त कैंसर रोग है। इससे यदि आपने छुटकारा प्राप्त कर लिया तो अन्य प्रकार की समस्याएँ है। आजकल अल्जाइमर (Alzheimer's) नामक एक प्रसिद्ध रोग

है। यह भी दांए पक्ष के बाहुल्य (आक्रामकता) के परिणाम स्वरूप हैं। आपमें यदि भक्ति न हो, वांछित विनम्रता न हो, देवी का आशीर्वाद आपको प्राप्त न हो तो आप इन भयानक रोगों के शिकार हो सकते हैं जो केवल प्राण लेवा ही नहीं है परन्तु अन्य लोगों के लिए भी हानिकारक हैं।

अतः आक्रामकता द्वारा आपका उत्थान नहीं होता। कहते हैं कि आप बहुत बड़े तपस्वी बन सकते हैं जो दूसरों को शाप दे सकें, उन्हें कष्टों में डाल सकें और सोंचें कि यह बहुत बड़ी शक्ति है। यह बहुत बड़ी शक्ति नहीं है। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है क्योंकि आप अन्य शक्तियों द्वारा दबे हुए नहीं होते, नकारात्मक शक्तियों द्वारा, परन्तु वास्तव में आपकी अपनी शक्ति ही आपका जीवन ले लेती है।

अतः कुण्डलिनी जब उठ जाए तो सर्वोत्तम मार्ग भक्ति की ओर (Left Side) चले जाना है, बिना दूसरों की आलोचना किए, बिना उनकी बुराई किए, परन्तु अपने अन्दर अवलोकन करते हुए कि मुझमें क्या कमी है। यह खोजने का प्रयत्न करें कि आपका क्या आदर्श है। इसका आरम्भ तो अपने महत्व से है कि 'मैं अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति हूँ' और इस नजरिये से आप सभी को कष्ट देते चले जाते हैं सभी को सताते रहते हैं। ऐसा सभी कुछ करते रहते हैं। परन्तु अपनी आक्रामक गतिविधियों के कारण आप अत्यन्त सफल हो सकते हैं। हिटलर इसकी पराकाष्ठा था। इस प्रकार से लोग अत्यन्त क्रूर तरीके अपनाते चले जाते हैं।

आजकल, मैं सोचती हूँ, कुछ लोग अपनी आक्रामकता के कारण सर्वत्र शासन कर रहे हैं। बांई ओर (विनम्रता) को उपयोग करने वाले लोगों का अभाव हैं। और जब जब भी अपने भक्ति पक्ष का उपयोग उन्होंने किया तो वे सन्त कहलाए। आप सब लोगों के पास भी भक्ति पक्ष की शक्तियां हैं। आप मे से कुछ लोगों में थोड़ी सी आक्रामकता भी है। परन्तु कोई बात नहीं।

मैं कहूंगी कि आपने बांए पक्ष पर स्वामित्व पा लिया है। आपमें कुण्डलिनी जागृत भी हो गई है। परमात्मा से आपकी एकाकारिता है। अब आप दांई ओर, गतिशीलता की ओर, आ सकते हैं। और इस पक्ष के विषय में जान सकते है, इस की अभिव्यक्ति करने का प्रयत्न कर सकते है। अन्य लोगों पर स्वामित्व जमाकर ही आप इसकी अभिव्यक्ति नहीं कर सके। स्वयं पर स्वामित्व बनाकर भी आप ऐसा कर सकते हैं। आत्म निरीक्षण द्वारा और अपने द्वेषों को देखने से भी आप ऐसा कर सकते हैं। आपका आचरण ऐसा क्यों हैं? क्यों आप दूसरे लोगों को कष्ट देते है? क्यों उन पर प्रभुत्व जमाते हैं? मैंने

देखा है कि ऐसे लोग सदैव आयोजन एवम् प्रबन्धन करते हैं, ये करते हैं वो करते हैं। अपना आयोजन करने के स्थान पर वे अन्य लोगों को आयोजित करते हैं। ये चीज़ें जटिल हो जाती हैं। आपमें यदि प्रेम है, आपमें यदि भक्ति है तो आप एक भिन्न तरीके से अन्य लोगों पर प्रभुत्व बनाए रख सकते हैं। आवश्यक नहीं कि क्रूरता द्वारा या किसी को सता कर आप अपना प्रभुत्व बनाएं, यह कार्य आप अपने प्रेम में भी कर सकते हैं। आप प्रभुत्व जमाना ही नहीं चाहेंगे क्योंकि प्रेम, उदारता और विशाल हृदय के सम्मुख लोग स्वतः ही झुक जाते हैं।

अतः सर्वप्रथम आप अपने अन्दर यह सारे गुण विकसित करें। यह बाईं ओर का कार्य है कि आपको अत्यन्त शान्त होना चाहिए। अन्य लोगों से प्रेम करना चाहिए। उनके प्रति उदार होना चाहिए। आप करुणामय बनके देखें, कि यह आपको क्या प्रदान करता है। कुछ लोग देखे हैं जो अत्यन्त अभद्र हैं। किसी के साथ भी वह अभद्र व्यवहार कर सकते हैं। यह उनका स्वभाव है जिसे उन्होनें अपनी विनम्रता (Left Side) से नियन्त्रित करना है। अभद्रता सन्त का गुण नहीं है। सन्त तो अत्यन्त शान्त होता है और अन्य लोगों के प्रति कभी अभद्र नहीं होता।

अतः प्रथम कार्य अन्तर्अवलोकन है। 'हम कहां गलत हैं? हम कौन से गलत कार्य कर रहे हैं? हमारी शैली क्या है?' एक बार जब आप जान लें कि आपकी शैली तामसिक है (Left Sided) तो आप क्रियाशीलता (Right Side) अपनाकर शक्ति प्राप्त कर लें–दाईं ओर की शक्ति।

दाईं ओर की शक्तियां क्या हैं जिन्हें बाईं ओर की कुशलता के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है? इस दिशा में कुछ महान गुरु हो गए हैं। राजा जनक उनमें से एक थे। वे एक देश के राजा थे, शासक थे–अत्यन्त प्रसिद्ध शासक। परन्तु अत्यन्त उदार होते हुए भी वे महान सम्राट थे, उन दिनों के महान राजा। अपनी निष्पक्षता, स्पष्टवादिता तथा प्रजा से अपने व्यवहार के लिए वे प्रसिद्ध थे। राजा जनक में यह सभी गुण थे। कोई भी चीज़ उन्हें परेशान न कर सकती थी। लोग इस बात को न समझ पाते थे कि बड़े से बड़े सन्त भी उनके सम्मुख क्यों नतमस्तक हो जाते हैं। वो राजा थे अत्यन्त शानों शौकत से रहते थे, बहुत से आभूषण धारण करते थे, बहुत से रथवाहन उनके पास थे, फिर भी न जाने उनमे क्या चीज़ महान थी। क्योंकि कोई भी चीज उनपर हावी न थी। भौतिकता से वे इतने निर्लिप्त थे। सभी कुछ होते हुए भी वे अत्यन्त निर्लिप्त थे। जिस व्यक्ति ने अपने बांए पक्ष पर स्वामित्व प्राप्त कर लिया हो और अब राजा हो ऐसे व्यक्ति का वह बहुत अच्छा उदाहरण है। राजा जनक ऐसे ही व्यक्ति

थे।

इसी प्रकार से हमारे यहाँ, बाद में, ऐसे बहुत से लोग हुए जो अत्यन्त वैभवशाली थे, राजाओं की तरह शक्तिशाली थे। परन्तु अन्दर से वे पूर्णतः दिव्य व्यक्ति थे, कोई भी चीज़ उन्हें डांवाडोल न कर सकती थी। कोई भी चीज़ उनमें महानता या गर्व की भावना न पैदा कर सकती थी। उनके लिए कोई भी पद कोई भी शक्ति इतनी महान न थी। मानव के लिए यह पूर्ण उद्धार है कि अब आप आत्म–साक्षात्कारी लोग हैं। आपको करुणा, प्रेम और सूझ–बूझ से परिपूर्ण होना चाहिए और ये सब गुण ठीक प्रकार से अभिव्यक्त होने चाहिएं।

उदाहरण के रूप में आप कह सकते है कि ईसा–मसीह एक अन्य उदाहरण हैं। यद्यपि वे एक अवतरण थे फिर भी लोगों के लिए क्षमा और प्रेम जितना उनके हृदय में था वह बहुत ही अधिक था। परन्तु वे आध्यात्मिकता सिखाने के लिए पर्वतों पर जाया करते थे। वो समय इन कार्यों के लिए बिल्कुल भी सुरक्षित न था क्योंकि ऐसी बातें करने वालों को लोग पसन्द न किया करते थे। ऐसे व्यक्ति से लोग घृणा करते थे जो परमात्मा के विषय में बताता हो (मेघगर्जन)। उनके साथ भी जो व्यवहार किया गया उसे आप भली भांति जानते हैं। यद्यपि लोगों ने उन्हें क्रूसारोपित कर दिया फिर भी हम महान अवतरण के रूप में उनका सम्मान करते हैं। इसका कारण यह है कि अवतरण होते हुए भी अपनी शक्तियाँ अन्य लोगों को प्रदान करने में उन्होनें अपना सर्वस्व लगा दिया। वे जगह जगह गए सुविधाएँ न होते हुए भी जगह जगह जाकर उन्होनें लोगों को बचाने का प्रयत्न किया।

यह दाईं ओर की गतिविधि थी। अर्थ यह हुआ कि सहजयोगी भी क्रियाशील (Right Sided) हो सकते हैं, परन्तु ईसा–मसीह की तरह से। अन्यथा दाईं तरफ गतिशील होकर वे आयोजन करेंगे, सभी प्रकार के कार्य करेंगे और फिर दाईं ओर की समस्याओं के शिकार हो जाएंगे। इसीलिए मैं चाहती हूँ कि आप आक्रामकता से बचें। परन्तु एक बार जब आप बाईं ओर के कुशल स्वामी सहजयोगी बन जाएंगे तब यह अत्यन्त आवश्यक होगा कि आप कार्यशीलता (Right Side) को अपनाकर पूर्ण आध्यात्मिक व्यक्तित्व बन जाएं। दाईं ओर की गतिविधि क्या है? यह सामूहिकता है। जो आपने पा लिया है। केवल उसी से सन्तुष्ट न हो जाएं। यह महसूस करना अत्यन्त सुगम है कि, 'ओह! हमने आत्म–साक्षात्कार पा लिया है, अब क्या है? अब हम विश्व के शिखर पर हैं।' वास्तविकता यह नहीं है।

आपको बाहर जाना होगा लोगों से बातचीत करनी होगी। लोग आपका अपमान करेंगे, आपको कष्ट देगें, सभी

प्रकार के कार्य करेंगे। परन्तु आप तो पहले से ही उच्च व्यक्ति हैं। आप उनकी बातें सुन सकते हैं कि वे क्या कह रहे हैं। आप उनसे कुछ पूछेंगे नहीं। ऐसे में आप चाहेंगे कि उनके प्रति आप बहुत हितकर हो जाएं। यह भी करुणा है कि आप अपने आत्म-साक्षात्कार को स्वयं तक सीमित नहीं रखना चाहते। इसका उपयोग आप अन्य लोगों के लिए भी करना चाहते हैं ताकि वो भी आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर सकें। यह अत्यन्त आवश्यक है। अगर आपमें ऐसी भावना नहीं है, उन लोगों के प्रति करुणा नहीं है जो आत्म-साक्षात्कारी नहीं हैं तो आप अपने उस समय को स्मरण करें जब आप आत्म-साक्षात्कारी नहीं थे। ये लोग साक्षात्कारी नहीं है और इस कारण से बहुत कष्ट उठा रहें हैं। उन पर किसी भी प्रकार का कष्ट आ सकता है।

अतः अब यदि आपको आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना है तो आपको शान्त होकर इसी में रम नहीं जाना, नहीं। ये कोई ऐसा करना उचित नहीं है। अन्य लोगों को आत्म-साक्षात्कार देने और उनकी रक्षा करने के लिए आपको जी जान से लग जाना है। आत्म- साक्षात्कार आप सबको केवल अपने लिए ही नहीं मिला। यह आप तक सीमित नहीं है। अन्य लोगों के लिए भी है कि आप अन्य लोगों को भी आत्म-साक्षात्कार दें। ज्योंही आप अन्य लोगों को आत्म-साक्षात्कार देना आरंभ करेंगे तो आप दंग रह जाएंगे। आपके अन्दर के बहुत से गुण उभर उठेंगे क्योंकि जब आप अन्य लोगों को देखते हैं तो आपको पता चलता है कि उनके अन्दर क्या कमी है, उनकी क्या आवश्यकता है। आपने उन्हें क्या देना है और किस प्रकार आप उन्हें दे सकते हैं। आप कुछ भी बन सकते हैं। आप कवि बन सकते हैं, लेखक बन सकते हैं। आप यदि दूसरों का सामना कर सकते हैं तो आप कुछ भी बन सकते हैं। प्रतिक्रिया के रूप में आप में यह सब आ जाता है। ये सब गुण आपमें विकसित हो जाते हैं और आप बहुत अच्छे कलाकार बन जाते हैं।

यह सब घटित होना केवल तभी संभव है जब आप अन्य लोगों से मिलें, उनसे सहजयोग की बात करें और उन्हें आत्म-साक्षात्कार के विषय में बताएं। मैं जानती हूँ कि समस्याएं होंगी। यह बात सत्य है। ऐसे भी लोग होगें जो आपका विरोध करेंगे, आपके विरूद्ध उल्टी सीधी बात करेंगे, आपकी सारी गतिविधियों को रोकने का प्रयत्न करेंगे और आपको सभी प्रकार से कष्ट पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील होंगे। कोई बात नहीं। परन्तु आपने यह स्थिति प्राप्त करनी है, लोगों से मिलना है, उनसे बातचीत करनी है और उनसे आत्म-साक्षात्कार के विषय में बताना है आपने उनकी रक्षा करनी है। ऐसा करना

आवश्यक है। परन्तु सर्वप्रथम आपको इस बारें में विश्वस्त होना होगा कि आपके अन्दर दाईं ओर के विकार नहीं हैं, अन्यथा सभी लोग दौड़ जाएंगे। आध्यात्मिक व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह अत्यन्त विनम्र हो। निःसन्देह लोग उसकी विनम्रता का अनुचित लाभ उठाएंगे। सभी कुछ होगा, यह ठीक है। परन्तु यह खेल का एक भाग है जिसकी वह चिन्ता नहीं करता। ऐसी किसी भी चीज का वह बुरा नहीं मानता। ऐसी कोई भी समस्या उसके सामने आए तो वह बुरा नहीं मानता क्योंकि करुणा उसका मुख्य गुण होता है। बांई ओर की जागृति से करुणा का जो गुण उसने प्राप्त किया था वह अब विस्तृत हो जाता है और वह लोगों की रक्षा करना चाहता है। लोगों के पास यदि खाना न हो तो ठीक है, लोग यदि भूखों मर रहे हैं तो बहुत जटिल समस्या है। परन्तु यदि उन्हें आध्यात्मिकता नहीं प्राप्त हो रही तो इस मानव जीवन का क्या लाभ है इस अवस्था तक उनका उत्थान क्यों हुआ? पशुत्व से मानवास्था तक वे विकसित हुए, निकृष्टतम स्थितियों से मानवास्था तक, और अब यदि उन्हें आत्म–साक्षात्कार नहीं मिलता तो यह भूखे मरने से भी, गरीबी से भी, सभी प्रकार की दरिद्रता से भी बुरी बात है। सभी प्रकार की बीमारियों और कष्टों से भी बुरा है। तो क्यों न उन्हें आत्म– साक्षात्कार देने का प्रयत्न किया जाए? क्यों न आप निश्चय कर लें कि उन्हें आत्म–साक्षात्कार दिया जाए? परन्तु सर्वप्रथम और मुख्य चीज़ जो मैंने आपको बताई, वह आपका बाईं ओर से सुदृढ़ होना है। आपको यह कार्य आरंभ कर देना चाहिए क्योंकि आपको आत्म–साक्षात्कार मिल चुका है। बिना अपनी बाईं ओर को सशक्त बनाए, केवल इसलिए आपको यह कार्य आरंभ करना नहीं कर देना चाहिए कि आप आत्म– साक्षात्कार दे सकते हैं।

ऐसा व्यक्ति अत्यन्त विनम्र, अत्यन्त सहज होता है जो न तो किसी चीज के बारे में गिला करता है, न किसी चीज़ की शिकायत करता है और किसी भी हालात से समझौता कर सकता है। किसी चीज़ से वह लिप्त नहीं होता। स्वतः वह साक्षी भाव हो जाता है। निर्लिप्त होने के लिए उसे कुछ करना नहीं पड़ता। ऐसे व्यक्ति के लिए आप जो चाहे करें, उसके लिए जो चाहें ले आए सब ठीक हैं। निःसन्देह वह स्वीकार करेगा। परन्तु किसी भी चीज़ से उसे मोह न होगा। ऐसा निर्लिप्त व्यक्ति सहजयोग को कार्यान्वित कर सकता है। सभी प्रकार से सहजयोग का प्रसार कर सकता है।

आज विश्व की यह सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम अधिक से अधिक सहजयोगी बनाएं। परन्तु यह कार्य करने में लोगों को शर्म आती है। अत्यन्त हैरानी की बात है! परन्तु मैंने देखा है कि जिन

लोगों के पास बिल्कुल भी सत्य नहीं हैं, जिनके बहुत ही बुरे गुरु हैं वो भी दूसरे लोगों के पीछे पड़ जाते हैं, अपने झूठे विचारों का प्रसार करने का प्रयत्न करते हैं परन्तु सहजयोगी, क्यों उन्हें संकोच करना चाहिए किस लिए शर्म करनी चाहिए? ये बात मेरी समझ में नहीं आती।

अतः इसके विषय में सबको बताएं और उन्हें सहजयोगी बनाएं।

आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह गुरु पूजा है। लोग कहते हैं कि गुरु आपको कुछ नहीं दे सकता। परन्तु मैं आपको सीख दे सकती हूँ कि अपने ह्रदय विस्तृत करो, विनम्र बनो और विनम्रता पूर्वक, आक्रामकतापूर्वक नहीं, सहजयोग को फैलाने का प्रयत्न करो। यह कार्य अत्यन्त आवश्यक है। आप यदि ऐसा कर सकते हैं, केवल तभी आप अपने जीवन से, जोकि आध्यात्मिक जीवन है, पूर्ण न्याय करेंगे। ऐसा किए बिना आप आध्यात्मिकता की शक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। यह शक्ति पाने के लिए आपको समझना होगा कि अपने विवेक के माध्यम से सहजयोग को पूर्ण अवसर देना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रायः मुझे जो पत्र प्राप्त होते हैं उनमे लिखा होता है कि फलां व्यक्ति कष्टकर है। फलां व्यक्ति ऐसा कर रहा है, कोई अन्य वैसा कर रहा है। यह सब भूल जाइये। ऐसे लोग सहजयोग के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं। परन्तु यदि आप ठीक मार्ग पर चल पड़े तो आप आश्चर्यचकित रह जाएगें, आपको ऐसे बहुत से लोग मिलेगें जो दिल और दिमाग की शान्ति चाहते हैं और परमात्मा से पूर्ण एकरूपता।

चाहे वो स्वीकार न करें, चाहे वो न कहें, चाहे वो गलत गुरुओं के पास गए हों, परन्तु इस सबके बावजूद भी वो अपने अन्दर सच्ची आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करना चाहेंगे। आज लोगों में यह आम इच्छा है परन्तु उस इच्छा तक पहुँचने के लिए आपको अत्यन्त सहज जीवन और सहज व्यक्तित्व को अपनाना होगा।

आपकी दिलचस्पी यदि धन में है, तथाकथित शक्तियों या अपनी महत्वकाक्षाओं में है, तो सहजयोग कुछ नहीं कर सकता। परन्तु यदि आपकी दिलचस्पी अपनी करुणा में है और आज के विश्व को समझने में है कि ये सारी उथल–पुथल क्यों है, केवल तभी आप यह कार्य कर सकते हैं। मानव का गलत चीज़ों को स्वीकार करना ही इस उथल–पुथल का कारण है। हमें करना यह है कि परमेश्वरी ज्ञान उन तक पहुंचा दें। यह आपकी इच्छा होनी चाहिए और इसी इच्छा के कारण ही आपको बहुत सुख प्राप्त होगा।

शेष सभी इच्छाएं, शेष सभी आवश्यकताएं अत्यन्त अस्थाई हैं। सहजयोग को फैलाने की केवल एक इच्छा

ही इतनी सुन्दर है। कार्य करते चले जाएं और जब-जब आप इस पर कार्य करेंगे आपको प्रसन्नता एवम् आनन्द प्राप्त होंगे। आपको किसी भी प्रकार की समस्याएं नहीं होगी। सहजयोग की महानता का यह चिन्ह है और मैं चाहती हूँ कि आप सब ऐसे ही बन जाएं।

आज का दिन अत्यन्त महान है। क्योंकि आज हम उन सभी सन्तों के विषय में सोच रहे हैं जो पृथ्वी पर अवतरित हुए और जिन्होनें हमारा पथ प्रदर्शन करने का प्रयत्न किया। उन सबने क्या किया? सभी ने पूरे विश्व में सत्य का प्रसार करने का प्रयत्न किया। उन्होनें बहुत से कष्ट उठाए, समस्याएं झेली बहुत सी समस्याएं, परन्तु सहजयोग को फैलाने के लिए और परमात्मा और देवत्व के विषय में बताने के लिए घोर परिश्रम किया।

आज आप सबने भी मुझे यहाँ देना है यह वचन कि जब भी कोई मानव आपको मिलेगा तो आप उसे सहजयोग के विषय में बताएंगे। ऐसा करना केवल आवश्यक ही नहीं, यह विश्व की अत्यन्त गहन आवश्यकता है।

आप यदि इस बात को समझ जाएंगे कि आप इस समय पर, इस संसार में क्यों हैं और विश्व की आवश्यकता क्यों है, तब आप तुरन्त जिम्मेदारी को समझने लगेंगे। आप चाहे पुरुष हों या महिला, जी जान से लोगों को बताने के लिए निकल पड़ें। उन्हे सहजयोग समझाएं। ऐसा कर पाना सभी प्रकार से संभव है और मैं सोचती हूँ कि गुरुओं के रूप में आप पूर्णता को पा लेंगे।

सहजयोग केवल यदि आप तक ही सीमित है तो आप गुरु नहीं बन सकते। गुरु होने का अर्थ यह भी नहीं है कि आप सहजयोग के उपदेश देते रहें, सहजयोग की बातें करते रहें या सहजयोग पर प्रवचन करते रहें, नहीं। जो व्यक्ति अन्य लोगों को आत्म- साक्षात्कार देता है वही गुरु है। आपने कितने लोगों को आत्म-साक्षात्कार दिया, उनकी संख्या गिनने की आवश्यकता नहीं है। इसे तो लहरियों की तरह से, प्रेम सागर की लहरों की तरह से अपने हृदय में महसूस किया जाना चाहिए। लोगों को आत्मसाक्षात्कार लेकर आध्यात्मिक आनन्द में डूबते देखना अत्यन्त सुन्दर अनुभव है। मैं चाहती हूँ कि आप यह कार्य करें। इसी कार्य को करने के लिए मैं पृथ्वी पर अवतरित हुई हूँ।

मुझे भी बहुत से कष्ट उठाने पड़े कोई बात नहीं, इन तथाकथित कष्टों की कोई बात नहीं। मैं इन्हें नाटक की तरह से देखती रही और अब यह सब समाप्त हो गया है। जब तक आप इन कष्टों की ओर अधिक ध्यान नहीं देते ये कष्ट अधिक महत्वपूर्ण नहीं बन पाते।

कल आपने मोहम्मद साहब के जीवन

पर एक नाटक देखा। मेरे हृदय में सदैव उनके लिए एक दर्द था कि किस प्रकार लोगों ने उन्हें गलत समझा और भटक गए। क्यों अब ये लोग गलत कार्य कर रहे हैं। मुझे प्रसन्नता है कि कम से कम आप लोगों में उनकी महानता को महसूस किया है। उसे समझा है और उससे इतना सुन्दर नाटक बनाया है।

मैं नहीं जानती कि किस सीमा तक हम इसका प्रसार कर सकते हैं। परन्तु यह सत्य है कि इसके लिए मोहम्मद साहब ने अपना बलिदान कर दिया। उनके बाद उनकी बेटी, नातिन और बच्चे बलि चढ़ गए। उनके दामाद को मौत के घाट उतार दिया गया और उन्हें समाप्त करके इन लोगों ने भयानक सुन्नी मत का आरम्भ कर दिया।

अब यह सुन्नी धर्म सत्य के बिल्कुल समीप ही नहीं है। यह अत्यन्त आक्रामक और क्रूर धर्म है। पर यह सर्वत्र फैलने लगा और मोहम्मद साहब का वास्तविक इस्लाम धर्म लुप्त होने लगा। जिन लोगों ने उनकी हत्या की थी वे इस्लाम धर्मी कहलाने लगे।

अतः यह बहुत बड़ा अपराध था कि इतने महान और आध्यात्मिक व्यक्ति को स्वीकार नहीं किया गया और जिस व्यक्ति ने उनकी हत्या की उसे अब स्वीकार किया जा रहा है। ऐसा किसी भी धर्म में हो सकता है। परन्तु इस्लामिक संसार में जो हुआ वह निकृष्टतम था। यह बहुत भयानक है क्योंकि परमात्मा के नाम पर यह लोग कितने गलत कार्य कर रहे हैं।

अतः समझने का प्रयत्न करें कि मोहम्मद साहब के साथ जो हुआ वह उनकी नियति न थी। जो घटित हुआ वह वास्तविकता की नियति न थी। यह हम सबकी आखें खोलने वाली घटना है। ताकि हम देखें कि सत्य को सदैव असत्य चुनौती देता है तथा हमें सदैव सत्य पर डटे रहना चाहिए, जो चाहे परिणाम हो। एक दिन ऐसा आएगा जब लोग महसूस करेंगे कि वो गलत मार्ग का अनुसरण करते रहे हैं और सभी प्रकार के मूर्खतापूर्ण कार्य करते रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि अत्यन्त शीघ्र यह सब कार्यान्वित होगा। मेरी इच्छा यदि इतनी शक्तिशाली है तो मुझे विश्वास है कि लोग इस बात को महसूस करेंगे कि करुणामय, सुहृद तथा प्रेममय होना ही प्रसन्नता प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम उपाय है। इससे आगे कुछ भी नहीं है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

गुरु पूर्णिमा

24-07-2002, कबैला लीग्रे

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

जिस प्रकार से आप लोगों ने ये पता लगाया है कि वास्तव में गुरु पूर्णिमा आज है यह बहुत दिलचस्प है। पूर्णिमा के दिन पूरा चाँद होता है। मैं इसके विषय में जानती थी परन्तु सहजयोगियों की सुविधा के लिए हमें शुक्रवार, शनिवार, इतवार ही कार्यक्रम का आयोजन करना होता है। इस बार, मेरे विचार से यह पूजा दो दिन पहले हुई। कोई बात नहीं, आखिरकार चाँद हमारे लिए और हम चाँद के लिए हैं। अतः जैसी गलतियाँ विश्व में चल रही हैं वैसी इसमें कुछ भी नहीं हैं। गुरु तत्व के विषय में मैं आपको बहुत कुछ बता चुकी हूँ और गुरु तत्व वाले लोग जो पृथ्वी पर अवतरित हुए वे जन्मजात आत्म–साक्षात्कारी थे परन्तु उन्होनें किसी अन्य को आत्म–साक्षात्कार नहीं दिया। ये बहुत बड़ा अन्तर है। आत्म–साक्षात्कारी आत्माओं के रूप में उनका जन्म हुआ और वे सूफी बन गए। भिन्न नामों से उन्हें पुकारा गया। परन्तु उन्हें आत्म–साक्षात्कार नहीं दिया गया। वो जन्म से ही आत्म–साक्षात्कारी थे और आत्म–साक्षात्कार के कारण ही उनमें बहुत अधिक ज्ञान था जिसे उन्होनें अन्य लोगों को देने का प्रयत्न किया। वे चक्रों के विषय में सभी कुछ जानते थे। हर चीज़ का उन्हें ज्ञान था। पूर्व जन्मों की उपलब्धियों के कारण ही ये ज्ञान उन्हें प्राप्त था। संभवतः उनमें से कुछ महान गुरुओं के शिष्य रहे हों। मैं नहीं जानती कि उन्हें इस बात का पूरा

ज्ञान किस प्रकार था जोकि आत्म-साक्षात्कार क्या होता हैं और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् हमें क्या उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं।

मेरे विचार में, मोहम्मद साहब ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होनें मिरज की बात की। मिरज अर्थात् कुण्डलिनी के माध्यम से उत्थान। निःसन्देह भारत में सन्तों ने इसके बारे में बातचीत की। परन्तु किसी अन्य देश में गुरुओं ने इतने स्पष्ट रूप से नहीं कहा कि मिरज नाम की भी कोई चीज़ है। इतना ही नहीं मोहम्मद साहब ने केवल मिरज की ही बात नहीं की उन्होनें यह भी बताया कि पुनर्जन्म के समय आपके हाथ बोलेंगे। उन्होनें दो बातें कहीं – पहली यह कि जब आपको आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होगा तो आपके हाथ बोलेंगे। यह कहना बहुत बड़ी बात है क्योंकि इस प्रकार आप समझ सकते हैं विश्वस्त हो सकते हैं कि आपको आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो गया है। उन्होनें आत्म-साक्षात्कार की यह पहचान बताई।

मिरज (कुण्डलिनी) के विषय में दूसरी बात जो उन्होनें बताई वह यह थी कि सफेद घोड़ा कुण्डलिनी के अतिरिक्त कुछ नहीं है। उन्होंने कुण्डलिनी शब्द का उपयोग नहीं किया परन्तु इसे सफेद घोड़ा कहा।

अतः वे ऐसे व्यक्ति थे जो जानते थे कि आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करते हुए व्यक्ति के साथ क्या घटित होता है। आप सबके लिए ये बहुत बड़ा रहस्योदघाटन है और सहजयोग के लिए बहुत बड़ी सहायता। आप लोग आत्म-साक्षात्कारी हैं क्योंकि आप चैतन्य लहरियों को महसूस कर सकते हैं दूसरे उन्होनें इस बात का भी स्पष्ट वर्णन किया कि आप कैसे बन गए हैं।

भारत में बहुत से सन्त हुए बहुत से सन्त, एक से बढ़कर एक। जो भी कुछ उन्होनें कहा वह अत्यन्त असाधारण है, अत्यन्त श्रेष्ठ। परन्तु वास्तव में मनुष्य, मैं सोचती हूँ कि हम अत्यन्त गूँगे हैं। मानव ने कभी इस बात को महसूस नहीं किया कि हमारे यहाँ इतने सारे सन्त हुए। तुर्की में भी, जहाँ पर सुन्नी धर्म हैं, वहाँ भी बहुत से सूफी हुए, विश्वभर में बहुत से सूफी हुए, आत्म-साक्षात्कारी लोग हुए। ये लोग अवतरण तो न थे परन्तु जन्मजात आत्म-साक्षात्कारी थे। अतः उनकी व्याख्याएं और बताई हुई हर बात बहुत अच्छी हैं क्योंकि वे मानव थे और उन्होनें बहुत सी अच्छी बातें कहीं ताकि मानव समझ सके। कोई अवतरण जब कुछ कहता हैं तो वह बहुत ऊँची बात करता है। इस नए उन्नत मानव ने आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त करके जिन बहुत से तथ्यों के विषय में बताया वे वास्तव में असाधारण हैं।

सर्वप्रथम तो उनमें से अधिकतर लोग कवि थे – भारत में कबीर हुए हैं। हम

नहीं जानते कि उनका जन्म किस प्रकार हुआ, कहाँ हुआ उसके माता–पिता कौन थे? ये सारी बातें बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं हैं। इसके बावजूद भी उनकी कविताओं को यदि देखें तो पता चलता है कि वे अत्यन्त महान थे, महान सहजयोगी थे और जिस प्रकार से उन्होनें चीज़ों का वर्णन किया वह अत्यन्त रुचिकर है। अपनी कविता में उन्होनें बहुत ये मूलभूत सत्य उजागर किए, उनके विषय में बताया। वे किसी धर्म विशेष से संबंधित न थे जब उनकी मृत्यु हुई तो हिन्दु और मुसलमान परस्पर लड़ गए, "इनके शरीर का हम क्या करें?" और कहते हैं कि उनके शरीर से जब चादर हटाई गई तो वहाँ पर कुछ फूल मिले, दो तरह के फूल एक हिन्दुओं के लिए, एक मुसलमानों के लिए। तो इस प्रकार से उन्होनें लोगों की मूर्खतापूर्ण लड़ाई का समाधान किया।

सहजयोग में हम किसी बेतुके धर्म से सम्बन्धित नहीं हैं। हम एक ही धर्म से संबंधित हैं – विश्व निर्मला धर्म। बाकी के सभी धर्मों की मूर्खताओं को हमें त्याग देना चाहिए क्योंकि आज जैसे आप देखते हैं सभी धार्मिक समूह एक दूसरे से लड़ रहे हैं, एक दूसरे को मार रहे हैं, समाप्त करने में लगे हुए हैं। यह कोई तरीका नहीं हैं धार्मिक व्यक्ति को ऐसा नहीं होना चाहिए। परन्तु वे परस्पर हत्या किए चले जा रहे हैं। सभी प्रकार के भयानक कृत्य किए चले जा रहे हैं विश्वास नहीं होता कि वो किस प्रकार ऐसा कर रहे हैं – इतनी क्रूरता! किसी भी योगी या महात्मा का पहला गुण यह होता है कि उसमें क्रूरता बिल्कुल भी नहीं होती। वे अपने जीवन बलिदान कर देंगे, कुछ भी कर देंगे परन्तु किसी के प्रति क्रूर न होंगे। जो लोग परमात्मा और धर्म के नाम पर क्रूर हैं वे किसी भी प्रकार से धार्मिक नहीं हैं। धर्म की यही विकृति है। हम यदि सहजयोग से जुड़े हुए हैं तो हम सबको यह बात समझनी चाहिए। करुणा, माधुर्य, सुहृदयता और प्रेम हमारे मुख्य गुण होने चाहिएं। आपके अन्दर यदि ये गुण नहीं हैं तो आप सहजयोगी नहीं हैं। हम एक भिन्न वंश हैं, भिन्न व्यक्तित्व हैं जोकि आत्म–साक्षात्कारी हैं और जो इन मूर्खतापूर्ण धारणाओं से ऊपर हैं तथा जिनमें चैतन्य हैं। जैसा मैंने कहा अब आप इसका प्रचार–प्रसार करें क्योंकि मैं पृथ्वी पर इसलिए अवतरित हुई हूँ कि लोग मोक्ष प्राप्त कर लें, आत्म–साक्षात्कार पा लें। जब तक मोक्ष में विश्वास करने वाले लोग इसे प्राप्त नहीं कर लेते मैं प्रसन्न नहीं हो पाऊँगी।

ऐसे बहुत से लोग हैं जो विश्वास करते हैं परन्तु जिन्हें आत्म–साक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ। आपको कार्य करना है और आप हैरान होंगे कि आपको ऐसे लोग मिलेंगे जो आत्म–साक्षात्कार पाने

के लिए बहुत उत्सुक हैं। आज गुरू पूर्णिमा दिवस पर यह कार्यान्वित होगा। आज का दिन बहुत शुभ है।

मैं आपको विशेष शक्ति का वरदान देती हूँ कि आप अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार दे सकें, अपनी ही समस्याओं में न फँसे रहें। ये आवश्यक नहीं हैं। सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। मुझे जितने भी पत्र प्राप्त होते हैं, उनमें से अधिकतर व्यक्तिगत समस्याओं के विषय में या कुछ अन्य प्रकार की समस्याओं के विषय में होते हैं। आपको देखना चाहिए कि आपके अन्दर क्या समस्या है, आपके अन्दर क्या घटित हो रहा है, हमारे अन्दर ये समस्याएँ क्यों बनी हुई हैं, हमारा कर्त्तव्य क्या है? क्यों हमें आत्म–साक्षात्कार मिला है? अध्यात्मिकता का वैभव हमें क्यों प्राप्त हुआ और इसका हमें क्या करना चाहिए?

मैं आपको बताती हूँ कि प्रतिदिन इसके विषय में सोचें। कम से कम आधे घण्टे के लिए तो आप महसूस करेंगे कि आप बहुत ही समर्थ लोग हैं। सन्तों ने इतना सारा कार्य किया, उन्होनें बहुत कुछ लिखा, वे दुष्टों से लड़े, उन्होनें सभी कुछ किया। आपको ऐसा कुछ भी नहीं करना है परन्तु आपने केवल एक ही काम करना है, आपने सहजयोग को फैलाना है।

अब भी सहजयोग सर्वत्र स्वीकार नहीं किया गया है। लोग इसके विषय में नहीं जानते ये हैरानी की बात है, जबकि सभी प्रकार के भयानक गुरुओं के बारे में लोग जानते हैं। अतः हमने इस कार्य को अपने आचरण से, अपनी सूझ–बूझ से अपने जीवन आचरणों से करना है। ताकि लोग कहें कि ये कोई विशेष लोग हैं।

मैं प्रसन्न हूँ कि आज गुरु पूर्णिमा का दूसरा दिन है। यह बहुत मंगलमय है और आप लोग इसे बहुत बड़ा वरदान समझें क्योंकि यह आपके लिए बहुत बड़ा प्रमाण–पत्र है, बहुत बड़ी उपलब्धि है कि आप सब गुरु बनने के योग्य हो गए हैं। आपको यही बनना है। सहजयोग में बनना महत्वपूर्ण है। बाकी सभी चीज़ें वास्तव में व्यर्थ हैं। आपको बनना है। मेरे विचार से महिलाएं विशेष रूप से संकोचशील हैं वो बहुत कुछ कर सकती हैं और उन्हें चाहिए कि इसे कार्यान्वित करें। वो बिना बात के झेंपती हैं। झेंपने की क्या जरूरत है? लज्जालु महिला होने के कारण आप लोग सहजयोग की गतिविधियों की गहराई में नहीं जातीं। आपको इसकी गहराई में उतरना चाहिए। महिलाएं यदि सहजयोग पर बोलना आरम्भ कर दें तो मेरे विचार से सहजयोग बहुत जल्दी फैलेगा।

सन्तों द्वारा अधूरे छोड़े गए इस कार्य को करने के लिए मैं आपको आशीर्वादित करती हूँ। इसे पूर्ण करना आपका धर्म हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री कृष्ण पूजा

18-8-2002, कानाजौहारी, अमेरीका

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम श्रीकृष्ण की पूजा एक अत्यंत महान व्यक्तित्व के रूप में करेंगे। आप जानते हैं कि वे पृथ्वी पर क्यों अवतरित हुए। अपने विराट रूप को स्थापित करने के लिए नहीं। परन्तु अपने एक ऐसे रूप को स्थापित करने के लिए जिसके कारण यह देश वैभवशाली बना। अपने अवतरण द्वारा उन्होनें लोगों में एक अत्यन्त सुन्दर मनोवृत्ति का सृजन किया कि धार्मिकतापूर्वक किस प्रकार इस संस्कृति को विकसित किया जाए। आपके यहां ऐसे बहुत से महान नेता हो चुके हैं जिन्होनें उनका अनुसरण किया और एक प्रकार से उनकी पूजा की तथा अमेरिका रूपी इस नए विश्व का सृजन किया। परन्तु दुर्भाग्यवश समय बीतने के साथ–साथ लोगों के मस्तिष्क से उनका रूप लुप्त हो गया। इसका कारण ये था कि

यहां पर उनका प्रतिनिधित्व बहुत ही गलत लोगों ने किया, उन लोगों ने जिन्हें, श्रीकृष्ण के बारे में बिल्कुल समझ ही न थी। वे वैभव के महान देवता थे। वे जानते थे कि धन दौलत को किस प्रकार उपयोग करना है और धर्मपूर्वक – अधर्म द्वारा नहीं – किस प्रकार धर्माजन करना है।

यहां के लोग उनके इन गुणों को पूर्णतः भूल गए और शनैः शनैः अपनी शक्ति का दुरुपयोग करने लगे तथा सभी प्रकार के अधर्म आरंभ हो गए – जैसे धोखाधड़ी, धन हथियाना तथा बिल्कुल बेकार की चीज़ों पर धन का खर्च करना। वे कुबेर हैं। उन्हें पैसे की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। इस बात में बिल्कुल भी संदेह नहीं है। वे धन के देवता हैं और धन में ही रहते हैं।

कहा जाता है कि द्वारिका में उन्होनें अपने लिए एक स्वर्ण महल बनाया, पूरा सोने से बना हुआ। अब यह महल समुद्र के जल में डूब गया है और कोई इस बात पर विश्वास नहीं करता कि यह बात सत्य है। परन्तु हाल ही में समुद्र के गहरे जल के बीच में डूबे हुए महल को खोज लिया गया है।

तो उनके विषय में लोगों की सारी सोच गलत थी तथा मिथ्या थी। निश्चित रूप से वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होनें धार्मिकतापूर्वक बेशुमार धन कमाया। वे राजा के पुत्र थे जिन्होने पूरी द्वारिका सोने से बनवाई। आज भी यह मौजूद है। लोगों ने इसे समुद्र में खोज लिया है। हजारों वर्ष बीत चुके हैं परन्तु अभी तक यह विद्यमान है। केवल इसलिए क्योंकि हम श्रीकृष्ण से जुड़े हुए हैं यह आज भी बनी हुई है। इसका कारण यह है कि वे ऐसे व्यक्ति थे जो सत्य पर अडिग थे, वे सत्य में स्थापित थे और जो भी कुछ उन्होनें किया वह सत्य के सिद्धान्तों के अनुरूप था। हर असत्य चीज को उन्होनें समाप्त करने का प्रयत्न किया। विनाशकारी चीज़ों को दूर करने का प्रयत्न किया और सत्य के माध्यम से स्वयं को स्थापित किया। वे सत्य की प्रतिमूर्ति थे, पूर्ण सत्य की और उन्होनें इस बात को सिद्ध किया कि किस प्रकार हर चीज़ में सत्य व्यापक हो सकता है।

मैं उनसे बिल्कुल उलट हूँ क्योंकि मैं तो धन को समझती ही नहीं। परन्तु मेरे जीवन में उस कार्य को श्रीकृष्ण ही देख रहे हैं। मैं इससे बिल्कुल अनभिज्ञ हूँ। बैंकिंग मेरी समझ में नहीं आती, धन या पैसा मेरी समझ में नहीं आता। मैं तो नोट भी नहीं गिन सकती। आपने इसके विषय में क्या कहना है? परन्तु इन सब चीज़ों की देखभाल करने के लिए श्रीकृष्ण हैं और कभी मुझे धन की तथा वैभव की

कमी नहीं हुई। सभी कुछ भरपूर है। संतोष भाव द्वारा भी यह आता है। आपमें यदि संतोष भाव है तो आप धन के पीछे नहीं दौड़ते। आपके देश में क्या हुआ? कुछ लोगों को धन प्राप्त हो गया। थोड़ा सा धन यदि व्यक्ति को मिल जाए तो उसे इसका स्वाद लग जाता है। वे सन्तुष्ट स्वभाव के नहीं हैं। अतः पागलों की तरह से व्यर्थ की चीज़ों पर वे धन खर्च करते चले गए। यह मानवीय दुर्बलता है। मानवीय उत्थान के पश्चात्, ज्योतिर्मय स्थिति तक पहुँचने के पश्चात् लोभ जैसे तुच्छ दोष आपके चरित्र से दूर हो जाते हैं। तब आपमें लोभ शेष नहीं रह जाता और आप अत्यन्त सन्तुष्ट व्यक्ति बन जाते हैं।

धन निःसंदेह आवश्यक है। परन्तु आपके लिए इसका महत्व बहुत अधिक नहीं रह जाता। आप सोचते हैं कि आपको धन की आवश्यकता नहीं है फिर भी आपको धन मिल जाता है। श्रीकृष्ण ही सर्वत्र इस कार्य को करते हैं। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? वे ही यह सब कार्य कर रहे हैं, आपकी देखभाल कर रहे हैं, और धन से आपकी सहायता कर रहें हैं। जब मैंने सहजयोग का आरंभ किया तो मेरे पास एक पाई भी न थी। परन्तु कभी मुझे धन की समस्या नहीं हुई। तो कुबेर के रूप में श्रीकृष्ण ही धन के दाता हैं। जिन लोगों के पास धन नहीं होता उनकी वे देखभाल करते हैं। सत्य पर चलने वाले लोगों को वे धन प्रदान करते हैं, उन लोगों का जो सत्यमय जीवन का आनन्द लेते हैं। उनकी कृपा से ही लोग वैभव का आनन्द ले सकते हैं, उसके बिना नहीं। लोगों के पास बेशुमार धन होता है फिर भी वे और अधिक धन की इच्छा करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि वे धन का आनन्द नहीं लेते और अधिक धन की कामना करते हैं। क्यों? क्योंकि जो भी कुछ उनके पास है उसका वे आनन्द नहीं उठाते।

परन्तु आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आप देखेंगे कि जो भी धन आपके पास है उसका आप आनन्द लेंगे। आप इसका पूर्ण आनन्द लेंगे, पूरी तरह से, और जो कुछ नहीं है उसके पीछे दौड़ते नहीं रहेंगे। आपके पास यदि कोई चीज़ नहीं है तो कोई बात नहीं।

बहुत बार लोगों ने मुझसे पूछा, "श्री माताजी क्यों न हम श्रीकृष्ण की पूजा कुबेर रूप में करें?" मैंने कहा, "ठीक है।" आज हर व्यक्ति कुबेर बनने का प्रयत्न कर रहा है। उन्हें सबक मिल लेने दीजिए, तब हम कुबेर की पूजा करेंगे। यही कारण है कि आज मैं इस पूजा के लिए सहमत हुई हूँ।

क्योंकि अब आपने देखा है कि मनुष्य यदि लालची हो तो क्या होता है। व्यक्ति सभी प्रकार के पाप और गलत कार्य किए चला जाता है जो आपके देश को नष्ट कर सकते हैं। इतना वैभवशाली देश अब गरीब हो गया है। वो सारा धन कहां चला गया? वे लोग बहुत चालाक हैं। आज मुझे किसी ने बताया कि सारा धन बीमा कम्पनियों में है। "हे परमात्मा", मैंने कहा, "बीमा कम्पनियां कहती हैं कि आप यह धन नहीं निकाल सकते", इसके बाद उन्होनें बताया कि उनका धन विदेशों में बने उनके बैंकों में है, आदि–आदि। मैंने कहा, "अब देखो कि ये लोग कभी इस बात से डरते न थे कि ये भी विपत्ति में घिर जाएगें और इस तरह से ये बहुत सारे वर्षों तक चलाते रहे। परन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन कुबेर स्वयं उनका पर्दाफाश कर देंगे।

अतः कुबेर की पूजा करके आज हमें धन के सत्य को स्थापित करना है। धन के पीछे क्या छिपा हुआ है? धन प्राप्त करने का अभिप्राय क्या है? इस देश के पास पैसा था। परिणाम स्वरूप बहुत से अच्छे लोग यहां कार्य करने आए और आपने बहुत सी प्रशंसनीय उपलब्धियां प्राप्त कीं। आपके यहां बहुत से ऐसे लोग आए जिन्होनें बहुत से प्रशंसनीय कार्य किए। मैं सोचती हूँ कि कुछ चीज़ों में अमेरिका के लोग पिछड़े हुए थे, बौद्धिकता में नहीं परन्तु प्रतिभा में। मेरे विचार में यहां के लोग प्रतिभा में थोड़े से पिछड़े हुए थे अतः विदेशों से उन्हे प्रतिभावान लोग प्राप्त हुए। ये लोग अत्यन्त एकाग्र प्रवृत्ति थे। अतः उन्हें चीज़ों को बहुत ही अच्छी तरह से कार्यान्वित किया। कुशाग्र बुद्धि लोग जो उनके पास आए उनका उन्होंने सम्मान किया।

जब आप सत्य के महत्व को भूल जाते हैं तो ऐसा ही होता है। सत्य के बिना धन व्यर्थ है। धन प्राप्त करके तो आप लोग व्यर्थ की भौतिक चीज़ों के पीछे दौड़ते रहे और अधिक धन प्राप्त करने के लिए सभी प्रकार के उल्टे सीधे कार्य करते रहे।

उस दिन मैं लॉस वैगास (Las Vegas) द्वारा यात्रा कर रही थी। जब हम वायुपत्तन पर रुके तो बहुत से लोग वायुयान में आए। वो सब ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानों उनके परिवार के किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई हो। "क्या हुआ?" पहले तो मेरी समझ में ही कुछ न आया। तब इन्होनें मुझे बताया, "श्री माताजी", इन्होनें अपना सारा धन गंवा दिया है।"

जब इनके पास पैसा होता है तो ये उछलते हैं। अगले क्षण जब इनका धन चला जाता है तो ये रोते हैं। ऐसे धन का

क्या लाभ है जो अस्थाई हो और इतना बेकार हो? परन्तु यह मानव का स्वभाव है कि वो माया के पीछे दौड़ता ही रहता है और धन का भी यह गुण है कि यह आपको माया में उलझा देता है। माया इस प्रकार की कि किसी प्रकार से आप थोड़ा सा धन पा लेते हैं। उस धन से कुछ खरीदते हैं और सोचते लगते हैं कि पैसा होना अत्यन्त आवश्यक है ताकि आप बहुत सी चीज़ें खरीद सकें, कारें खरीद सकें, हवाई जहाज खरीद सकें आदि आदि।

जहां भी माया का खेल होता है वहां आप इस पागल पैसे के पीछे दौड़ना शुरु कर देते हैं जो आपको भी पागल बना देता है। यह अच्छी बात है कि इस स्थिति में इन लोगों ने माया और पैसे के मिथ्यापन को पहचान लिया है और मुझे प्रसन्नता है कि उन सबको हथकड़ियाँ लगी और उनकी सारी धन शक्ति समाप्त हो गई है।

अतः श्रीकुबेर ही यह सब चालाकियाँ कर रहे थे। श्री कृष्ण अत्यन्त चालाक हैं, अत्यन्त छली व्यक्तित्व। हर कार्य के पीछे उनकी चालाकी होती है। धन सम्बन्धी मामलों में भी वे पहले आपको मूर्ख बनाते हैं कि धन के पीछे दौड़ो और तब आपको पता चलता है कि ऐसा करना अत्यन्त मूर्खता थी। हमारे देश की एक कथा है। शेख चिल्ली नामक व्यक्ति को थोड़ा सा धन प्राप्त हो गया और वह माया के चंगुल में फंस गया। उसने सोचा कि मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ। वह लगा स्वप्न देखने कि वह क्या कर सकता है। वह गया और जाकर कुछ अंडे खरीदे और सोचने लगा कि, "अब इन अंडों में से छोटे–छोटे बच्चे निकलेंगे जो बड़े हो जाएंगे। इन्हें बेचकर मैं बहुत धनवान बन जाऊँगा। वह इस प्रकार से बातें कर रहा था। अपने मस्तिष्क में यही सोचते सोचते उसे नींद आ गई और नींद में वह उन अंडों पर गिर गया। सारे अंडे टूट गए और माया समाप्त हो गई।

यह कार्य शीघ्र ही होना चाहिए, परन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो व्यक्ति का अन्त या तो जेल में होता है या किसी अन्य विपत्ति में।

सहजयोग आपको पूर्ण दृष्टि प्रदान करता है, माया के बाद होने वाले विनाश की पूर्ण झलक। यह एक ऐसी आन्तरिक चीज़ है कि इसके साथ आप कुछ नहीं कर सकते।

मैं बिल्कुल भिन्न हूँ। मैंने आपको बताया था कि यह (माया) मेरी बिल्कुल समझ में नहीं आती। परन्तु यदि आप पैसे का मूल्य समझते भी हो, यदि आप यह

समझते भी हो कि धन आपके लिए बहुत कुछ खरीद सकता है इसके बावजूद भी आप उसको कोई विशेष महत्व नहीं देते। सहजयोगी की यही पहचान है। स्वभाव से ही उसके लिए धन का कोई विशेष महत्व नहीं होता। ऐसा नहीं कि वो इसके पीछे दौड़ता है या कहता है कि मेरा है। स्वभाव से ही वह धन की परवाह नहीं करता क्योंकि वह इससे ऊपर है। जो व्यक्ति धन से ऊपर है वही सच्चा सहजयोगी है। जो इस मूर्खता में फंसा हुआ है, धन की माया में फंसा हुआ है, वह सहजयोगी नहीं है। निःसन्देह मैंने देखा है कि अधिकतर सहजयोगी अत्यन्त ईमानदार हैं, विशेषरूप से पश्चिम में। परन्तु भारत में एक बीमारी है। जैसे आपके यहां कुछ विषाणु (Viruses) हैं वैसे ही भारत में भी कुछ विषाणु हैं। अतः वे पैसे के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं। उनके लिए धन महत्वपूर्ण है।

विकास प्रक्रिया में आप यदि उस अवस्था तक पहुंच जाते हैं जहां आप नाभि चक्र से ऊपर उठ जाते हैं, नाभि चक्र को पार कर लेते हैं तो पैसा अधिक महत्वपूर्ण नहीं रह जाता। तब धन का अधिक महत्व नहीं रह जाता। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैं अपने लिए कुछ भी नहीं खरीद सकती। केवल दूसरों के लिए खरीदती हूँ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन लोगों ने बहुत सारी अनावश्यक चीज़ें बहुत से तोहफे और उपहार आदि मुझे दिए। परन्तु आप आश्चर्यचकित होगें कि मुझे इससे बहुत दुविधा होती है। इन्हें लेने में मुझे बहुत संकोच होता है। मैं उस स्थान पर पूर्णतः अनुपस्थित होती हूँ जहां पर वे किसी भी प्रकार का व्यापार करते हैं या किसी भी प्रकार की खरीद। इसी प्रकार से सहजयोगियों को अपने मस्तिष्क, अपनी आत्मा पर स्थापित करने होगें और आपको अपनी आत्मा की शक्तियों का आनन्द लेना होगा। एक बार जब आपको वह आनन्द प्राप्त हो जाएगा तब आप लोभ के शिकार नहीं होगें। यह कार्य अत्यन्त सहज है फिर भी कई बार आप इसे नहीं करते। किसी भी चीज़ पर आप मोहित हो जाते हैं, वह कार भी हो सकती है और हवाई जहाज भी। यह सब चीज़ें मेरी समझ में नहीं आतीं। बहुत सारी कारें रखना भी सिर दर्दी है। क्या ऐसा नहीं है? परन्तु लोगों के पास बहुत–बहुत कारें हैं, वो सोचते है कि उससे लोग प्रभावित होते हैं तथा इस प्रकार से वो स्वयं की कोई सीमा नहीं देखते। कुछ भी नहीं। लोग यदि प्रभावित भी हो जाएं तो उसका क्या लाभ है? आपको इससे क्या प्राप्त होता है?

सहजयोगी के पास आनन्द लेने के लिए उसकी आत्मा है। किसी अन्य चीज़

से अधिक, किसी भी अन्य चीज़ से कहीं अधिक, आनन्द लेने के लिए सहजयोगी के पास उसकी आत्मा है। वह किसी भी अन्य चीज़ का स्वामित्व नहीं चाहता। किसी भी अन्य चीज़ का स्वामी होना बहुत बड़ी सिरदर्दी है।

इसका दूसरा पक्ष महालक्ष्मी है। आपके अन्दर यदि यह तत्व है – महालक्ष्मी तत्व, तो आपको कभी धन की समस्या नहीं होगी। इसके विपरीत आपको यह समझ होगी कि किस प्रकार इसे रोका जाए।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैं अपने महालक्ष्मी तत्व से परेशान हो जाती हूँ क्योंकि मैं नहीं जानती कि यह कहां से कार्यान्वित करता है, बिना किसी प्रयास के किस प्रकार यह कार्यान्वित करता है! परन्तु स्वभाव से मुझे इसमें कोई रुचि नहीं है। मैं नहीं जानती कि इस प्रभाव (कार्य) का कारण क्या है। **(Cause of Effect).**

मान लो मैं कोई छोटी सी चीज़ खरीदती हूँ, इस प्रकार की, तो यह दस गुणी कीमत पर बिक जाती है। इसकी कीमत दस गुणी बढ़ जाती है। मैं नहीं जानती क्यों। यह आश्चर्य की बात है मैं कोई छोटी सी चीज़ खरीदूंगी और मुझे पता चलेगा कि यह तो बहुत मंहगी हो गई है। ऐसा किस प्रकार घटित होता है? यह तो मेरे, विचार से महालक्ष्मी का चमत्कार हो सकता है।

अतः मैं आपको बताना यह चाहती हूँ कि आपको अपनी आर्थिक स्थिति की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। लेखा–जोखा करने में ही न लगे रहें। ये न देखें कि बैंक में आपका कितना धन है, आपने अपने पैसे का क्या करना है और उसका कहां निवेश करना है। मैंने लोगों को धन की योजनाएं बनाते हुए पागल होते देखा है।

एक बार जब आप सहजयोगी हो गए तो ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सभी कुछ स्वतः होता है। किसी भी अन्य रोग की तरह से लालच भी आपके अन्दर विद्यमान है। जैसे अन्य रोग होते हैं लालच भी वैसे ही बना हुआ है। जिस प्रकार सहजयोग से रोगों का इलाज हो जाता है वैसे ही लालच भी दूर हो जाता है चाहे यह कितनी ही मात्रा में हो। मैं तो यह भी नहीं जानती कि लालच होता क्या है।

अत्यन्त उदार हो जाना प्रति – सन्तुलन **(Counter Balance)** करने का एकमात्र उपाय है। आप यदि अत्यन्त उदार होगें तो लालच दौड़ जाएगा। ऐसा करने का एक अन्य उपाय भी है। मान लो

आपके घर में आपको कोई चीज प्राप्त होती है जिसे आप समझते हैं कि यह बहुत अधिक है। इससे छुटकारा पाने के लिए नहीं, परन्तु उसे आप बोझ समझते हैं तो ऐसी चीज़ आप किसी अन्य व्यक्ति को दे दें। एकदम से आप सोचने लगें कि यह किसे दी जाए तो तुरन्त आपको याद आ जाएगा। "ओह! फलां व्यक्ति के पास यह वस्तु नहीं है। मुझे यह चीज़ उसे दे देनी चाहिए।" आप जब उस व्यक्ति को ये चीज़ दे देगें तो वह अत्यन्त अनुगृहित होगा और आपके लिए सभी प्रकार की अच्छी बातें बोलेगा। ऐसी अच्छी बातें जो प्रायः कोई भी आपके विषय में नहीं कहता। और यह कार्य आश्चर्यजनक रूप से आनन्ददायी है कि किस प्रकार लोग आपकी उदारता को पसन्द करते हैं।

अतः आपको उदार होना है, बस उदार होना है, स्वयं के प्रति नहीं अन्य लोगों के प्रति। जहां तक संभव हो उदार बने। उदारता अत्यन्त प्रेम प्रदायक है, आपके प्रेम की यह एक अभिव्यक्ति है। मेरे साथ ऐसा बहुत बार घटित हुआ जब मैंने देखा कि जब किसी व्यक्ति को किसी चीज़ की आवश्यकता है मैंने उसे अपने मस्तिष्क में रख लिया और वह चीज़ खरीद कर उस व्यक्ति को दे दी। उस व्यक्ति से जो प्रेम मुझे प्राप्त हुआ वह उस चीज को खरीदने के आनन्द से हजार गुणा अधिक था। मेरे लिए इसका कोई विशेष महत्व नहीं है परन्तु उसके लिए है – उसने यह बात बहुत से लोगों को बताई, "श्रीमाता जी ने यह वस्तु दी। माँ ने मुझे यह दिया।" मैं हैरान थी। तब लोगों ने मुझसे पूछा, 'श्रीमाता जी आपने किस प्रकार उसे यह वस्तु दी?' मैंने कहा, "मात्र प्रेम के कारण।"

उदारता के महत्व को समझते हुए बहुत से लोगों ने सहजयोग अपनाया। अतः उदारता इस विश्व में जीने का सर्वोत्तम मार्ग है। इतनी सारी चीज़ें इकट्ठी कर लेना भी तो सिरदर्दी है। बेहतर होगा कि इनसे छुटकारा पा लें, परन्तु प्रेमपूर्वक। आप यदि ऐसा करते हैं तब आप जान पाएगें कि वो आपकी कितनी सराहना करते हैं।

लालच से मुक्ति पाने का एक अन्य उपाय यह है कि आप कोई सामूहिक सामाजिक कार्य करने का प्रयत्न करें। मान लो आप किसी ऐसे स्थान पर जाएं जहां बहुत से गरीब लोग रहते हों, तो मैं आपको बताती हूँ कि आपका लालच एकदम से छूट जाएगा। आप यह देखकर दंग रह जाएगें कि किस प्रकार ये लोग जीवन यापन करते हैं, किन हालात में, क्यों मैं धन दौलत आदि की इतनी चिन्ता करता हूँ? उन लोगों को देखना आपके

लिए बहुत बड़ा झटका होगा। कभी–कभी आपको लोग अत्यन्त दुर्दशा में रहते हुए दिखाई देते हैं। भारत में भी ऐसा है। एक बार में कोलकत्ता गई और किसी तरह से मुझे उन क्षेत्रों में जाना पड़ा जहां लोग अत्यन्त दारिद्रय की अवस्था में रहते हैं। आप हैरान होगें की बच्चे भी इसी दुर्दशा में पल रहे थे। कई दिनों तक मैंने खाना नहीं खाया। मैं रोये ही जा रही थी। मुझसे खाना भी न खाया जा रहा था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए! मुझे लगा, "ये क्या है? क्यों ये लोग ऐसे है?" मैं असहाय थी और रो रही थी कि कभी तो मैं इनके लिए कुछ कर पाऊँगी।

अत्यन्त प्रशंसनीय बात है कि अपने बाल्यकाल में ही मैंने एक कुष्ट गृह आरंभ किया, अपंग व्यक्तियों के लिए एक गृह चलाया, एक शरणार्थी गृह आरंभ किया। सभी प्रकार के कार्य किए और कभी यह भी नहीं सोचा कि अपना सारा पैसा यदि मैं इन लोगों को दे दूंगी तो मुझे बहुत सारी चीज़ें त्यागनी पड़ेंगी। मुझे अपनी बहुत सी चीज़े बेचनी भी पड़ी क्योंकि उदार होना अत्यन्त आनन्दप्रदायक तथा प्रसन्नताप्रदायक होता है। सभी प्रकार से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि आपको उदार होना चाहिए। उदारता श्रीकुबेर का गुण है। वे अत्यन्त उदार व्यक्तित्व हैं। आपको भी वैसा ही होना चाहिए।

मैंने देखा है कि सहजयोगी अत्यन्त उदार हैं। आजतक मुझे किसी ने भी यह नहीं बताया कि यहां कोई कंजूस व्यक्ति है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि एक दिन ऐसा आएगा जब हमारे बीच अत्यन्त उच्च गुण सम्पन्न लोग होगें।

अन्य पंथों की तरह से सहजयोग में हम यह नहीं कहते कि अपने वस्त्र या अपना परिवार त्यागकर आप जंगलों में रहें या झोपड़ियों में रहें। ऐसा कुछ भी हम नहीं कहते। किसी भी चीज़ को त्यागने की आवश्यकता नहीं हैं। त्यागभाव तो हमारे ह्रदय में होना चाहिए। ये आपके व्यक्तित्व का एक हिस्सा होना चाहिए। किसी चीज़ को त्यागने की आवश्यकता नहीं हैं। आप यदि आध्यात्मिकता में दृढ़ हैं तो किसी का धन हथियाने के विषय में आप सोचेंगे भी नहीं। इसके विपरित अपना सभी कुछ दे डालना पसन्द करेंगें।

मेरे पिता तो मुझसे भी गये गुजरे थे। सदैव वो घर को खुला रखते थे, सारे दरवाजे वे खुला रखते थे। वो कहा करते थे कि यदि दरवाजे खुले होगें तो चोर घर में नहीं घुसेगा। एक दिन एक चोर घर में घुस आया, और उनका ग्रामोफोन ले गया। पुराने समय में, बहुत बड़े भोंपू वाला ग्रामोफोन वो ले गया। अगले दिन

मेरे पिताजी अत्यन्त उदास बैठे हुए थे। मेरी माताजी ने जब उनसे पूछा, "आप उदास क्यों हैं? ग्रामोफोन के कारण?" 'नहीं, मैं इसलिए उदास हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि संगीत का वह ज्ञाता केवल ग्रामोफोन ही ले गया है। रिकार्ड तो वो ले ही नहीं गया।' तब मेरी माँ ने कहा, 'ठीक है, अब हम क्या करें? क्या हम समाचार पत्रों में विज्ञापन दें कि तुम आकर रिकार्ड भी ले जाओ?'

कहने का अभिप्राय है कि इतना सौन्दर्य उनमें था कि आज इतने वर्षों के पश्चात् मैं आपको बता रही हूँ और आप उसका आनन्द ले रहे हैं। कितना उदारतापूर्ण सुन्दरचरित्र था। परन्तु धर्म के माध्यम से यदि आप किसी पर लागू करें कि यह त्याग दो, वो त्याग दो, तो यह कठिन है। त्याग तो अन्दर से होता है। आप यदि किसी चीज़ से लिप्त नहीं हैं तो आपने इसे त्याग दिया है। यह गुण होना ही चाहिए और यदि आप लोग अपनी उदारता और दानशीलता का आनन्द लेते हैं तो उस जैसी कोई बात नहीं है। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो बहुत अमीर हैं, सभी कुछ है परन्तु उनमें उदारता का अभाव है। श्रीकुबेर का यह अन्य गुण है।

इसके अतिरिक्त लोग मुझसे कहते है कि संभवतः कुबेर को बैंकिग का ज्ञान हो। उन दिनों बैंक नहीं हुआ करते थे। हो सकता है कि हो क्योंकि जिस प्रकार से वह बैंक प्रबन्धन करता है तो मुझे लगता है कि वही उन्हें चला रहे हैं। यही कारण है कि अभी तक बैंकों में कोई समस्या नहीं है। मैं नहीं जानती परन्तु वह अत्यन्त चतुर व्यक्ति है, अत्यन्त बुद्धिमान अत्यन्त चुस्त क्योंकि धन व्यवहार करने वाले व्यक्ति में यह गुण होने आवश्यक हैं। यद्यपि पैसे से उन्हें बिल्कुल मोह न था, आप उनके जीवन को देखें कि उन्होनें क्या किया। बचपन में वे अपने गुरु के साथ रहे और गुउओं के झुंड चराने के लिए जंगल ले जाते थे। उनका बचपन इस प्रकार से बीता और बाद में सर्वसाधारण परिवारों के गऊएं चराने वाले ग्वाले, लड़कों के साथ वे खेला करते थे। धन के पीछे वे कभी नहीं दौड़े। वो तो मक्खन चुराया करते थे क्योकि ये महिलाएं अपना मक्खन कंस के सिपाहियों को बेच दिया करती थीं। अतः मक्खन चुरा के वे खा लिया करते थे ताकि ये महिलाएं उन असुरों को ये मक्खन न दे सकें। कल्पना करें कि इतना छोटा सा लड़का इस प्रकार के कार्य करता था! वास्तव में किस प्रकार वह इन लालची महिलाओं को सबक सीखा रहा था क्योंकि ये अपना मक्खन इन भयानक सिपाहियों को बेच देती थी।

सारा मक्खन उनसे चुराकर वे खुद खा जाया करते थे।

जो भी कार्य उन्होनें किया उसमें उदारता की पराकाष्ठा है। पूर्ण विवेक के साथ, वे इतने विवेकशील थे कि अपने मामा का वध करने से भी न चुके। उनके लिए सांसारिक सम्बन्धों का अधिक महत्व न था। भारत में यदि आप देखें तो यहां पर सम्बन्धों को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है। पिता चोर है, पुत्र चोर है, पोता चोर है, सबके सब चोर है। क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं। किसी भी परिवार में मैंने यह नहीं देखा कि परिवार का एक भी सदस्य चोर है तो उसका कोई वंशज ईमानदार हो! यह बड़ी अजीब सी बात है। परन्तु इस प्रकार का लालच उनके मस्तिष्क में घर कर जाता है और वो यह नहीं सोचते कि यह महत्वपूर्ण है। वो केवल इतना सोचते है कि जीवन यापन करने का केवल एक उपाय चोरी ही है। यद्यपि भारत में अत्यन्त ईमानदार लोग भी हैं।

मैंने देखा है कि हमारे नौकर कभी चोरी नहीं करते कभी कुछ नहीं चुराते। इसके लिए उनके पास कोई कारण भी नहीं है। वास्तव में वे कुछ नहीं चुराते। ये आश्चर्यजनक बात है। क्यों वे चोरी नहीं करते? अपने जीवन से वे अत्यन्त संतुष्ट हैं। वे इसमें कुछ परिवर्तन नहीं करना चाहते। वह ऐसी भयानक चीज़ें नहीं प्राप्त करना चाहते जों उन्हें जेल ले जाएं। वे इन चीजों के बारे में सोचते ही नहीं। वे ऐसा क्यों नहीं करते? क्योंकि उनमें लज्जाशीलता बाकी है। गरीब से गरीब लोगों में भी लज्जाशीलता अत्यन्त उच्चकोटि की है। उस समाज में वे ईमानदार व्यक्ति का बहुत सम्मान करते हैं और सभी बहुत ईमानदार हैं। कोई–कोई बेईमान भी हो सकता है परन्तु ऐसे व्यक्ति को कोई सम्मान नहीं करता क्योंकि वे आत्मसम्मान को सबसे बड़ा गुण मानते हैं। इन गरीब लोगों की आप कल्पना करें। यद्यपि उन्हें दिन में एक ही बार खाना पड़ता है फिर भी उनका आत्मसम्मान उनके लिए सब कुछ है। अतः इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण लालच से मुक्ति पाने का तीसरा समाधान आत्मसम्मान है। क्यों आपको चोरी करनी चाहिए? चोरी की या किसी अन्य व्यक्ति की कोई भी चीज़ आपको क्यों स्वीकार करनी चाहिए? आपमें यदि आत्मसम्मान है तो आप किसी भी चीज़ को, जो आपकी अपनी नहीं हैं, छुएंगे भी नहीं।

यदि नौकर ऐसा कर सकते हैं तो क्यों नहीं वो लोग ऐसा कर सकते है जिनकी स्थिति उन नौकरों से कहीं अच्छी है। मेरे विचार से उनका स्वभाव इतने

उच्च स्तर का है कि आत्मसम्मान ही उनके लिए उन सभी चीज़ों से अधिक महत्वपूर्ण है। यह उनके लालच को सन्तुष्ट करता है।

लालच की ये भी विशेषता है कि ये कभी सन्तुष्ट नहीं होता। कभी भी यह शान्त नहीं होता। मैंने देखा है कि जो लोग किसी समय पर बहुत ही धनवान हुआ करते थे वो दरिद्र हो गए हैं। जीवन उनके लिए नरक बन गया है। बिना शानो–शौकत के वो जी नहीं सकते। फिर भी उनकी समझ में यह नहीं आता कि यह सब व्यर्थ है। धन खो देने पर वे स्वयं को अत्यन्त दुःखी मानते हैं।

कुछ लोग ऐसे है जो धन प्राप्त करना चाहते हैं। धन प्राप्त करने के लिए वो कुछ भी कर सकते है। यह बड़ी अजीब बात है। सत्ता के लिए भी ऐसा ही होता है। आपमें यदि अपनी शक्तियाँ है तो आप सांसारिक सत्ता के पीछे नहीं दौड़ते। परन्तु लोग तो सत्ता चाहते हैं, क्योंकि इससे उन्हें धन प्राप्त हो सकता है और धन से वे सत्ता प्राप्त करते हैं। क्यों? आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? मानव की स्थिति क्या है? वह किस स्तर पर है? उत्थान के किस स्तर पर वे हैं? बस पैसे के चक्कर गोल गोल घूमें जा रहे हैं। यह नाभि चक्र है जिसे सन्तुष्ट होना चाहिए। यही आपको सन्तोष प्रदान करता है। आपका नाभि चक्र यदि सन्तुष्ट है तो आपने कुबेर की अवस्था प्राप्त कर ली है। ये देखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि आपका नाभि चक्र सन्तुष्ट है।

और भी बहुत सी चीज़ें हैं परन्तु मेरे विचार से लोभ निकृष्टतम है। किसी प्रकार से यदि इसे संभाल लिया जाए इसे इसके स्तर पर ले आया जाए तो, मैं सोचती हूँ, ये विश्व बहुत बड़ी सीमा तक सुधर जाएगा।

परमात्मा आपको धन्य करें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा श्रीमान दामले को मराठी में लिखे गए एक पुराने पत्र का अनुवाद।

प्रिय दामले,

अनन्त आशीर्वाद,

आपका पत्र मिला। सहस्रार पर खिचावट महसूस करना बहुत अच्छा चिन्ह है क्योंकि सहस्रार के माध्यम से ही अनन्त चैतन्य किरणें मनुष्य के हृदय में पेंठती हैं और अन्तर्अस्तित्व के नए द्वार खुल जाते हैं। परन्तु इस आशीष के सहस्रार में प्रवेश करने से पूर्व इसमें खिचावट होनी चाहिए। हृदय जो कि शान्त है, परन्तु भावुक है उसकी खिचावट को भी हम समझते हैं। परन्तु सहस्रार की खिचावट चहुँमुखी हो जाती है। वहाँ व्यक्ति एक संघटित अवस्था में होता है और धर्म की उस अवस्था में चेतना चैतन्य के लिए, परमात्मा के प्रेम के लिए प्रार्थना करती है। यह सब स्वतः घटित हो जाता है। यद्यपि यह आपकी कुंडलिनी की निपुणता है फिर भी आपके व्यक्तित्व को चाहिए कि कुंडलिनी को

दृढ करें। अपने पूर्व जन्मों में आपने यह गुण अर्जित किए हैं। अतः यह जीवन पूर्वजन्मों से महान है और मेरे कार्य को करने के लिए बहुत से रत्नसम व्यक्ति उपलब्ध हैं। आप यह बात समझें कि यद्यपि शारीरिक रूप से मैं यहाँ हूँ, मैं सर्वत्र हूँ। ये बात महसूस की जानी चाहिए कि यह शरीर भी मिथ्या है। इस अवस्था तक आना कठिन होता है परन्तु शनैः शनैः जब इस मिथ्यापन को देख लिया जाए तो सहज ही में यह सत्य स्थापित हो जाएगा और महान आनन्द की लहरियाँ आपके पूरे अस्तित्व को आच्छादित कर लेंगी। इस पत्र में मैं 'मिथ्या' की व्याख्या कर रही हूँ। यह पत्र सभी लोगों के समक्ष पढ़ा जाना चाहिए और सबको चाहिए कि इसको भली–भांति समझें।

जन्म के तुरन्त पश्चात् ही मिथ्या का आरंभ हो जाता है। आपका नाम, गाँव, देश, जन्मपत्री, भविष्यवाणियां आदि बहुत सी चीजें आपसे जुड़ जाती हैं या अन्य लोग इन सब चीजों को आपसे जोड़ देते हैं। ब्रह्मरन्ध्र यदि एक बार बन्द हो जाए तो बहुत से भ्रामक विचार आपके मस्तिष्क का हिस्सा बन जाते हैं। 'यह मेरा है या ये लोग मेरे हैं। ये मिथ्या विचार बाह्य वस्तुओं के समरूप हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्ति अपने लिए ऐसे बन्धन बना लेता है जैसे, "मेरा शरीर एवम् मन स्वस्थ होना चाहिए।" ये विचार आपके मस्तिष्क में बिठा दिए जाते हैं। मिथ्या सम्बन्ध जैसे "ये मेरे पिता हैं, ये मेरी माँ हैं, ये मेरा भाई है", आपके सिर पर लाद दिए जाते हैं। अहंकार आपमें मूर्खतापूर्ण विचारों को विकसित करता है जैसे, "मैं धनवान हूँ, मैं गरीब हूँ, मैं निस्सहाय हूँ या मैं उच्च परिवार से सम्बन्धित हूँ" आदि आपके मस्तिष्क में भर जाते है। बहुत से अफसर और राजनीतिज्ञ अहंकारी (गधे) बन जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रेम की आड़ में क्रोध, घृणा, सहिष्णुता, जुदाई, ग़म, लिप्तता तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के नाम पर अन्य प्रलोभन भी हैं। मानव अत्यन्त प्रेम के साथ जीवन की इन मिथ्या चीजों को पकड़ लेता है। इन दुर्गुणों से छुटकारा पाने के लिए आप जब प्रयत्न करते हैं तो आपको प्राप्त होता है भ्रामक ज्ञान क्योंकि चित्त तो पिंगला नाड़ी पर चलता है। तब आप सिद्धियों तथा प्रलोभनों में फंस जाते हैं। कुंडलिनी तथा चक्रों का दर्शन भी भ्रामक है क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं होता। इसके विपरीत यह हानिकारक है। आत्मनियंत्रण तथा तपश्चर्या जो आप स्वयं पर लागू करते हैं यह सब आपके चित्त को सीमित करती है। इस प्रकार इनसे मुक्त होने का कोई मार्ग नहीं है। आत्म–साक्षात्कार से भी मिथ्या चीजें एकदम से छूट नहीं जाती। शनैः शनैः यह किनारा करती हैं। दृढ विश्वास से, पूर्ण हृदय पूर्वक यदि आप मिथ्या को अस्वीकार करेंगें तो आपको शुद्ध रूप में

आत्मा का साक्षात्कार हो जाएगा। तत्पश्चात् यह आपमें स्थापित हो जाती है। यद्यपि वही नश्वर मानव चित्त, जोकि प्रेम के स्वभाव में सराबोर होता है, सत्य जिसका न कोई आदि है न अन्त है, वास्तव में जो शिव है, मानव चित्त इसी वास्तविकता को महसूस करने के लिए बना है। इस चित्त का आत्मा से एक रूप होना आवश्यक है। जो चित्त मिथ्या को त्याग कर आगे बढ़ता है वही जाने अनजाने सभी बन्धनों को तोड़ता है और अन्ततः आत्मा बन जाता है। वह न तो कभी व्याकुल होता है और न ही कभी नष्ट होता है। इच्छाओं के पीछे दौड़ने वाला मानव चित्त ही अपने आन्तरिक पथ को छोड़ देता है। यह माया (भ्रान्ति) है। इसकी सृष्टि जानबूझ कर की गई है। इसके बिना मानव चित्त का विकास न हो पाता। माया से आपको घबराना नहीं चाहिए, इसे समझना चाहिए ताकि ये आपका पथ प्रकाशित कर सके। बादल सूर्य को आच्छादित कर लेता है परन्तु इसको प्रकट भी करता है। सूर्य तो सदैव विद्यमान होता है। तो बादल का क्या उद्देश्य है? बादल होने के कारण आप लोगों में सूर्य को देखने की आकांक्षा होती है। सूर्य क्षण भर के लिए चमकता है और फिर बादलों के बीच चला जाता है। बादल आपकी दृष्टि को सूर्य को देखने की शक्ति और साहस देता है।

मानव को इतने गहन प्रयत्न के बाद बनाया गया है। वह यदि अपने पैरों पर एक कदम चल ले तो सब सफल हो जाता है। परन्तु सभी कुछ संभव नहीं हो जाता। इसीलिए मैं आपकी माँ के रूप में अवतरित हुई हूँ। अपनी समस्याएँ मुझे पत्र में लिखकर भेजें। ध्यान में बैठें, परस्पर बैठ कर भी सहजयोग की बातचीत करें। चित्त को हमेशा अपने अन्दर की गहनता में रखा जाना चाहिए। बाह्य चीजों को जहाँ तक संभव हो भूल जाएं। विश्वास रखें कि हर चीज का ध्यान रखा गया है। इस कथन को प्रमाणित करने के बहुत से उदाहरण हैं। तब आप जो भी कुछ करेंगे आपका चित्त आत्मा के साथ एकरूप होगा। पाप पुण्य के सभी बन्धन समाप्त कर दिए गए हैं। सांसारिक और गैर सांसारिक चीजों का अन्तर समाप्त हो जाता है क्योंकि इस अन्तर की सृष्टि करने वाला भयानक अन्धकार समाप्त हो गया है। सत्य ज्ञान के प्रकाश में सभी कुछ मंगलमय हो जाता है चाहे यह श्री कृष्ण द्वारा किया गया विनाश हो या श्री ईसा का क्रूस हो। व्याख्या द्वारा यह सभी बातें नहीं समझी जा सकतीं। केवल मार्गदर्शन भी सहायक न होगा। चलने से ही इस पथ का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

जब मुझे आपके पत्र मिलते हैं तो मैं लक्ष्य तय करती हूँ। कुछ समय पश्चात् यह भी आवश्यक न होगा। परन्तु वर्तमान

में सभी को अपने अनुभव तथा उन्नति लिखनी चाहिए। मैं जब आऊंगी तो हम देखेंगे कि आपने विराट की कितनी नाड़ियाँ जागृत की हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत की पावन भूमि पर यह कार्य आगे बढ़ेगा और जब यह पूर्णतः विकसित हो जाएगा तो सभी देशों तथा दिशाओं में इसका प्रसार होगा। आज (५ मई) जब लन्दन में सहस्रार दिवस मनाया गया तो मैंने केवल २०-२५ लोगों को ही आमंत्रित किया और आगे का कार्यक्रम तय किया।

सभी को अनन्त आशीर्वाद और असीम प्रेम

सदा सर्वदा आपकी माँ निर्मला

होली पूजा

29-3-1983, दिल्ली

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

अग्नि का बड़ा भारी दान है, कार्य है, क्योंकि अग्नि देवता ने होलिका को वरदान दिया था कि किसी भी हालत में तुम जल नहीं सकती। और चाहे किसी भी तरह से मृत्यु आ जाए पर तुम जल नहीं सकतीं। और वरदान दे कर के वे बहुत पछताए क्योंकि प्रहलाद को गोद में लेकर के वह आग में बैठी और अग्नि देवता के सामने यह प्रश्न था, धर्म का प्रश्न था कि मैंने तुमको वचन दे दिया है कि मैं तुमको जलाऊंगा नहीं और अब इस वचन को मैं कैसे पूर्ण करूँ? और प्रहलाद तो स्वयं साक्षात् अबोधिता हैं। स्वयं साक्षात गणेश का प्रादुर्भाव और इनको किस तरह से जला दें। इनको तो कोई भी जला नहीं सकता। ये तो मेरी शक्ति से परे है। तो उन्होनें विचार ये किया कि अहंकार कैसा, कि इतनी बड़ी शक्ति के सामने मैं अपनी शक्ति की कौन सी बात कह सकता हूँ? मेरी ऐसी कोई सी भी शक्ति नहीं है जो इनके आगे चल सके। इनकी शक्ति इतनी महान है। तो इनको तो मैं जला सकता ही नहीं चाहे कुछ भी कर लूँ। इस वक्त दूसरा मेरे सामने बड़ा भारी धर्म खड़ा है।

तो कर्तव्य और धर्म इसमें जो कशमकश हुई तो उस वक्त यह सोचना

चाहिए कि धर्म कर्तव्य से ऊँचा है। धर्म और कर्तव्य एक सर्वसाधारण कर्तव्य से ऊँची चीज़ है और उससे भी ऊँची चीज़ आत्मा है। यानि जो छोटा परिधि बंधा हुआ निमित्त, जो कुछ भी हमारा वलय है, Goal है, उससे जो ऊँचा Goal है, उसको पाना अगर है तो इस छोटे को छोड़ना पड़ेगा और यही कृष्ण ने शिक्षा दी। कृष्ण ने कहा कि ग़र आपको हित के लिए झूठ बोलना पड़े तो झूठ बोलिए। सच बोलने की बात ठीक है पर किसी ऊँची चीज़ के लिए नीची चीज़ को छोड़ना पड़ेगा। जैसे कि कोई आदमी अगर अन्दर घर आ जाए और किसी को मारना चाहता है, खून करना चाहता है, तो एक तो उसकी अनाधिकार चेष्टा है। उसने आप से पूछा 'ये महाशय ऊपर हैं' तो आपने कहा कि हाँ हैं। सच कहना चाहिए और सच कह दिया तो वह तो उसको मार डालेगा। उनकी जान बचाना ही बहुत ऊँची चीज़ है, वह महत्वपूर्ण है। बड़ी चीज़ है। उस बड़ी बात के लिए, बड़े ध्येय के लिए ये छोटी जो चीज़ें हैं उनको छोड़ना पड़ेगा। यही कृष्ण ने अपने जीवन में आ कर बतलाया। श्रीकृष्ण के जीवन को बहुत कम लोग समझ पाए क्योंकि उस जमाने में धर्म की यह दशा होती थी कि लोग धर्म को बहुत ही ज्यादा गंभीरतापूर्वक, बहुत उसको Serious बना कर रखते थे। सब बुद्धाचार्य थे। कि धर्म बहुत ही Serious चीज़ है। इसमें आदमी को बिल्कुल Seriously सब करना चाहिए। क्योंकि कर्मकाण्ड बढ़ गए और कर्मकाण्ड करने में बड़ी आफत रहती है कि ग़र आपने इधर से उधर दीप जला दिया तो भगवान जी नाराज़। इधर से उधर ग़र आपने धूप बत्ती जला दी तो भगवान जी नाराज़। अब बायें हाथ से ग़र आपने कुछ कर दिया तो भी आफ़त।

इन सब बातों की वजह से लोगों में Conditioning आ गई और उस Conditioning की वजह से लोग बहुत गंभीरता से धर्म करने लगे। इतने गंभीर हो गए कि उनका आह्लाद, उनका उल्लास सब खत्म हो गया। राधाजी की जो मुख्य शक्ति थी वो थी आह्लाद दायिनी। सबसे आह्लाद देना, ये उनकी मुख्य शक्ति थी और इसीलिए उन्होनें होली का त्यौहार बनाया। कृष्ण ने आकर के जितनी भी पूजाएं थीं सबको बन्द करके और कहा कि अब पूजा–वूजा मत करो तुम और उस आत्मा की ओर बढ़ो जिसको तुम्हें पाना है। और छोटी–छोटी चीज़ों में मत खोओ। क्षुद्र चीज़ों मैं नहीं खोना है

लेकिन ऊँची चीज़ की ओर अपनी दृष्टि रखनी चाहिए। अब जो आदमी, मैं तो झूठ कभी बोलता नहीं साहब। कभी–कभी ऐसा आदमी (Over) बहुत स्पष्टवक्ता भी हो जाता है, और अहंकार में दूसरों को दुखाता भी है। या नहीं तो

उसी में उसका जीवन सत्यानाश हो जाता है। सच भी क्यों बोलना, धर्म भी क्यों करना? कर्त्तव्य क्यों करना। क्योंकि आपको आत्मा होना है। और किसी भी चीज़ के आप इस तरह बंधन में फँस जाएँ और आपमें (Seriousness) गम्भीरता आ जाए। आप बुढ़ा गए। इसको बुढ़ाना कहते हैं। इसमें कोई फायदा नहीं। तो धर्म जो है वो आदमी को बिल्कुल पूरी तरह से एकदम जमा देता है। जैसे Ice-cream नहीं जम जाती, ऐसे जमा देता हे। पर शक्ति का संचार कैसे हो? उसका आनन्द लोग कैसे उठाएं? तो उन्होंने रंग वगैर खेलना शुरु किया। रंग भी जो हैं देवी के रंग हैं सारे। सातों चक्रों के रंग से रंग खेला जाता है। सारे चक्रों के रंग ही अपने पर उडेल लो। खेलो, उल्लास, आह्लाद, आनन्द में। गंभीरतापूर्वक बैठने की कौन सी जरुरत है?

अगर आप परमात्मा को पाएं तो खुश हों। वल्लभाचार्य के पास एक बार सूरदास जी गए और उनके सामने अपना रोना शुरु किया। बेचारे वे पार नहीं थे तो राते ही रहते थे। तो रोना शुरु किया। तो वल्लभाचार्य तो साक्षात् कृष्ण ही थे, तो उनसे रहा नहीं गया। उन्होंने कहा, "काहे घिघियावत हो?" कि घिघियाते क्यों हो? अब इस घिघियाने के लिए कहीं शब्द नहीं मिलेगा आपको। ये हर समय रोने की क्या जरूरत है? परमात्मा के प्रेम में आदमी आनन्द विभोर हो जाता है। ये अंदर से आने वाली एक आह्लाददायिनी शक्ति है जिसे होना चाहिए, नाकि ये लोग आजकल बजाते फिरते हैं, हरे रामा, हरे कृष्णा। उस तरह की चीज़े नहीं। ये उसकी कापी है जो मैंने कल कहा कि Reality और Concept में बहुत अंतर है। जो असलियत दें उसमें आदमी विभोर हो कर के खुश हो जाता है। उसमें कोई अश्लीलता नहीं हैं, कोई गंदगी नहीं है। उसमें कोई जानबूझ कर के नाटककारी नहीं है। अंदर ही से आदमी खुश हो कर के आह्लाद और उल्लास को महसूस करता है और वही चीज़ जो है बाद में अनेक आघातों से दुखदायी हो गई। सब धर्मों में इसी प्रकार हो गया। जैसे कि मुसलमानों में आपने देखा है कि वो मारते हैं अपने आपको। हाय हुसैन हम न हुए। सुना होगा आपने। याने ये रोने वाला धर्म, ये धर्म ही नहीं है। ग़र धर्म में रोना ही है तो ऐसे धर्म में काहे को जाने का। ऐसे तो रोना ही होता है। सो दुःख पाने वाला व दुःख देने वाला धर्म हो नहीं सकता। लेकिन ये सब धर्मों में ऐसी बातें आ गईं। हिन्दु धर्म में भी आ गईं। माने ये कि जो आदमी बिल्कुल मर्राधल्ला हो वही बड़ा भारी साधू संत माना जाने लगा। बिल्कुल मर्राधल्ला होना चाहिए। उसकी हालत ये होनी चाहिए कि उसमें उद्विग्नता होनी चाहिए। और वो ऐसी दशा में होना चाहिए कि आधा पागल आधा अच्छा। कभी उठा Dance

(नाच) करना शुरू कर दिया। या कभी रोने को बैठ गया। दुबला-पतला, हड्डियाँ, उसका पिचका हुआ मुँह, पचासों उसमें झुर्रियां पड़ी हुईं आँखें बिल्कुल बटन के जैसे बाहर, तंदरुस्ती चौपट और हर तरह की उसमें दुर्दशा। ऐसा आदमी कभी भी धार्मिक हो नहीं सकता। प्रसन्नचित होना चाहिए। शाँत, खिली हुई तबियत, खुला हुआ हृदय, और प्रकाश जैसे उसके अंदर से बह रहा हो। तो होलिका दहन के बाद जैसाकि मैंने कहा, आज से यह तय कर लें कि होली जो अब है वह दिवाली हो जाएगी। इसका आनन्द जो है विभोर होना चाहिए। होली का आनन्द सीमित है। क्योंकि आप एक ही होलिका जलाते हैं। लेकिन फिर वो **Collective Consciousness** में बहता है। जैसे हर आदमी, चाहे वो चमार हो, भंगी हो, कोई भी हो, तो जैसे हमारे खानदान में लखनऊ में, जहां के रहने वाले हैं, जमींदार लोग हैं ये लोग, तो मजाल है कि जमींदार लोग बेचारे अंदर भी आ जाएं घर के। वैसे तो तुम दहलीज पर क्यों आए, ये हद होती थी पहले तो। लेकिन होली के रोज चाहे कोई भी हो, मालिक हो नौकर हो चाहे कोई भी हो, सब आपस में होली खेलते थे। यहां तक कि मालिक के कपड़े भी फाड़े तो भी कोई कुछ नहीं कहेगा। होली के रोज़। इस तरह से एक समाजवाद और एक सामाजिक खुशी का त्यौहार अपने देश में होता है। पर जैसे के होली में भी आदमी फिर एक नीचे के स्तर में उतरने लगता है, अश्लीलता में आ जाता है। ऐसा हर एक जगह होता है। हर चीज़ सड़ने सी लग जाती है। सड़न इसीलिए आ जाती है क्योंकि उसमें जीवन्तता नहीं है। ग़र उसमें जीवन्तता हो तो वह सड़े नहीं। पर इस तरह से जब होने लग जाता है तो वही चीज़ बहुत ही गंदी और बुरी दिखाने लगती है। जब होली का त्यौहार महाराष्ट्र में मनाया जाने लगा तो तिलक वगैरहा लोगों मे इसका बहुत विरोध किया क्योंकि इसमें गाली-गलौच, गंदी गाली। क्योंकि उत्तर प्रदेश के लोगों को वहाँ भईया लोग कहते हैं, मराठी में गालियां है ही नहीं। पर ये सब जो गालियां होती है गंदी-गंदी तो ये सब मराठी के लोग भी वहां हिन्दी की गालियां देते हैं। तो इनके यहां से यही **Import** किया उन्होंने। और अधिकतर गालियां हिन्दी की ही बोलते हैं और मराठी की गालियां तो कुछ होती नहीं हैं। यहां तो पारसी लोग भी बहुत गालियां देते हैं और हमारे पंजाब की भी कुछ गालियां होती हैं जो बंबई में चलती हैं। सो ये गाली गलौच आदि चीज़े जो हैं ये है कि अंदर की जो भड़ास है उसको निकाल लीजिए, वगैरा कहते हैं उसको निकाल देने से अच्छा होता है। पर ये बड़ी गलत चीज़ है। ये कभी निकलती नहीं। ये जुबान पर चढ़ जाती हैं। हमने देखा है कि हमारे **Husband** तो जमींदार **Family** के हैं।

सिवाय हमारे **Husband** को छोड़ कर वहां हर आदमी जो है गाली के सिवा बात ही नहीं करता है। मतलब बड़ों में भी, उनको गाली देने में कुछ लगता नहीं है। फट से गाली दे दी। एक हमारे पति ऐसे हैं, वाकई में बहुत सुचारू रूप के आदमी हैं। कभी मैंने उनके मुँह से गाली नहीं सुनी, किसी के लिए। आज तक कभी उन्हें किसी को गाली देते मैंने सुना नहीं। विशेष बात है। देखिए उनके घर में यदि किसी से बात करते वक्त एक दो गाली भी नहीं दी तो वे सोचते हैं कि उन्होंने प्रेम ही नहीं जताया। वहां तरीका ही ये है कि दोस्त जब मिलेंगे तो पचास पहले गाली देंगे। उसके बाद फिर गले मिलेंगे। सो इसी बात से फिर चढ़ जाती है गाली उसका नुकसान भी बहुत होता है। ये चीज़ चढ़ जाए ग़र जिव्हा पे तो जिव्हा की शक्ति नष्ट हो जाती है। जिव्हा का आदर नहीं होने से आप जो बोलते हैं वही झूठ होगा। जो आदमी मुँह से गाली नहीं देता है उसके जिव्हा पे शक्ति होती है। आप देखते हैं कि भाषण करते-करते कुछ कहना भी होता है तो मैं ठिठक जाती हूँ कि कहीं ऐसा न हो कि जो बातें जैसे ईसा-मसीह ने कहीं थी कि सूअर के आगे मोती नहीं डालना चाहिए। लेकिन अंग्रेजी में सूअर शब्द जो है गाली है, बहुत बुरी गाली है। लेकिन मराठी मैं नहीं है। थोड़ी सी है पर ज्यादा नहीं। अंग्रेजी भाषा में बोलते वक्त मैं नहीं बोलती। हिन्दी में बोलते वक्त ठीक है सूअर किसी को कह दो तो ज्यादा से ज्यादा तय होगा कि बेवकूफ है। लेकिन वहां पे बहुत गंदा शब्द होता है। इस तरह से जहां-जहां जिस तरह का व्यवहार है उसकी मर्यादा रखते हुए आदमी को रहना चाहिए नहीं तो जिव्हा जो है नष्ट हो जाती है। जिव्हा की शक्ति जो सरस्वती की है वो नष्ट हो जाती है। इसलिए भाषण में भी इसको वाचालता कहते हैं वो बुरा होता है, और वाचालता में भी अश्लीलता तो बहुत बुरी चीज़ है। तो एक तरह से हम लोग सुबोध घराने के हैं। और सुबोध घराने के लोगों में एक तरह की सभ्यता **(Decency)** होनी चाहिए। और उस सभ्यता को ले करके हम लोग गाली-गलौच से बातचीज नहीं करते। ..... और इसलिए कहते हैं कि होली मैं कुछ न कुछ गाली देनी ही चाहिए और नहीं दी तो आपने होली मनाई नहीं। और इस तरह से घर में लोग भंग भी पीते हैं। अब बहुतों ने कहा है एक दिन भंग पीने में क्या हर्ज है माँ? एक दिन भंग पी ले तो भंगेड़ी तो नहीं हो जाते हैं। पर अगर आप हमें भंग पीने को कहिए तो हम तो नहीं पीएगें भंग। इसकी वजह ये है कि हम तो पहले ही पिए हुए हैं और हमें कोई जरूरत नहीं पीने की। और लोग इसलिए पीते हैं कि सोचते हैं कि जो **Serious** लोग हैं वो ज़रा से हल्के हो जाएँ। जो **Ego Oriented** लोग हैं वे भंग पी लें तो थोड़ी सी **Left Movement** हो

जाती है तो ज़रा से खिल जाते है। भंग में बकना शुरु कर देते हैं। लेकिन भयंकर प्रकार है भंग भी। क्योंकि हमारे ससुराल जब हम गए तो हमें क्या पता था कि भंग वंग पीते हैं। महाराष्ट्र में ये सब तरीके नहीं हैं। महाराष्ट्र ज़रा इस मामले में ज्यादा सभ्य है। औरतें तो भंग का नाम भी नहीं लेती। उन्हें अच्छा ही नहीं लगता यह सब। तो घर गए तो हमको क्या पता था कि सब भंग पीए बैठे हैं। उन्होंने कहा कि खाना खाईए तो खाना खाने बैठे तो इतनी बड़ी थाली में कायस्थों का जैसे तरीका है इतनी बड़ी थाली में खाना शुरु किया। और मैं तो जितना खाती हूँ आप जानते ही हैं। चलो उस दिन त्यौहार था थोड़ा ज्यादा खा लिया। पर वो खाते ही चली गई, खाते ही चली गई, खाते ही चली गई। हमने कहा भई क्या हो गया? कुछ समझ में ही नहीं आ रहा। वो हंसतें जाएं और खाते जाएं। हमारी जेठानी जी विधवा थीं तो विधवाओं के लिए सब मना है। तो मैंने कहा ये इनको क्या हुआ है जीजी? तो वो सब हंसी जाएं, कोई हर्ज तो है नहीं, ऐसा कोई हर्ज नहीं है। खाते जाएं और हँसी जाऐं। मेरी कुछ समझ ही में नहीं आया कि क्या हो रहा है। तो उन्होंने बताया कि ये सब भंग पीए हुए हैं। तो मैं वैसी उठी थाली पर से नमस्कार करके, हाथ धोये और अपनी अटैची उठा कर के मैं ट्रेन में बैठ गई। किसी के पैर भी नहीं छुए। हमारे यहाँ पैर छूने का रिवाज़ है। कुछ नहीं, सबने कहा कहाँ गई? तो लखनऊ में उन्होंने खबर दे दी कि कहाँ चली गई दुल्हन? तो कहा कि इन लोगों ने भंग पी हुई थी, इन लोगों से क्या हम बात करते? तो हम चले आए। तो हमने कहा सबको भंग ही पीने दीजिए।

तो भंग वंग पीने की सहजयोगियों को कोई जरूरत नहीं। जब चाहे तब मन में ही भंग पी ली। भंग का जो उपयोग है **Left Side** में जाने का है वो हम लोग ऐसे ही करते हैं। मतलब ये कि कोई आदमी यदि बड़ा **Ego-oriented** है, **Dry** है, शुष्क है, गंभीर है तो उसके लिए सहजयोग में पूर्ण व्यवस्था है कि वो अपने आज्ञा चक्र को ठीक कर ले, अपने आज्ञा चक्र को किसी तरह से खुलवा ले। अपने ही आज्ञा चक्र को ठीक कर लें तो वह **Left Side** में काफी आ जाता है। निद्रा के समय यदि आज्ञा चक्र को घुमा करके सो जाएं तो अच्छे से निद्रा आ जाती है। और अगर फिर उसे भंग की दशा से निकलना है तो फिर आज्ञा चक्र को कस ले तो फिर **Right Side** में आ सकता है। तो जब अपने ही हाथ में सारी चीज़ पड़ी हुई है, सारी ही शक्ति हमारे ही में अगर समाई हुई है और जब उसका पूरा ही ज्ञान हमको मालूम है कि कौन सी **Switch** किस वक्त घुमाने का है तो इन बाहर की चीज़ों का अवलम्बन करने की जरूरत नहीं है। तो उस वक्त में भंग हो सकता है **Justified** थी, कृष्ण के जमाने में,

कृष्ण भी पीते नहीं, खाते हैं शायद। सो उन्होंने ये किया, लेकिन बाकी लोगों को जरूरत पड़ी क्योंकि जो **Serious** लोग हैं उनको जरूरत थी कि भंग पीएं जिससे कि जो **Misidentifications** हैं कि हम राजा साहब हैं, हम महारानी साहिब हैं, हम घर के मालिक हैं, हम फलाने हैं, हम कैसे मेहतर से मिलें। भई मेहतर तो घर में झाड़ू लगाता है। तो उसके लिए ये कि पहले तुम भंग पियो और फिर मेहतर और तुम एक हो जाओ।

भूल ही जाओ कि तुम मेहतर हो और वह राजा है। इसलिए भंग पिलाते थे कि तुम्हें होश ही न रहे कि तुम कौन हो। क्योंकि इससे **Identifications** बने हुए हैं कि तुम फलाने हैं हम ढिकाने हैं। भंग पी लिए तो सब एक ही से हैं। अब इसी का उल्टा ऐसा है कि जब कबीर दास जी ने कहा कि सुरति जब चढ़ती है तब सब एक जात होते हैं। तो उन्होंने सोचा कि जब तम्बाकू आदमी खाता है तो भी सब एक जात हो जाते हैं। तो उन्होंने तम्बाकू का नाम सुरति रख दिया। जब हिसाब नहीं लगा पाए तो उन्होंने कहा कि तम्बाकू ही सुरति होएगी। क्योंकि जिसको तम्बाकू की तलब होती है तो वो चाहे राजा हो तो उस वक्त में कोई गरीब भी बैठा हो तो उससे कहेगा कि भई तम्बाकू हो थोड़ी तो देओ भाई, वो मांग लेता है। इसलिए उन्होंने कहा कि तम्बाकू सुरति हो सकती हैं क्योंकि इसमें राजा रंक नहीं रह जाता।

ये इंसान की खासियत है कि किसको कहाँ जा कर मिलाएगा, ये वो ही जाने। लेकिन होली की जो विशेषता है इसमें ये याद रखना चाहिए कि दिवाली इसे अगर बनानी है तो इसमें **Decency** के साथ। **Indecent** काम नहीं होना चाहिए। अश्लीलता बिल्कुल नहीं आनी चाहिए। अगर अश्लीलता आ गई तो फिर वो होली श्री कृष्ण की नहीं। वो तो होली हुई ऐसे लोगों की जो पार नहीं। जो पार हो जाते हैं वो होली खेलते वक्त कोई सी भी अश्लीलता न हो। यानि ऐसे जैसे सहजयोग मैं हम स्त्री पुरुष होली नहीं खेलते हैं। औरतें औरतों के साथ, पुरुष पुरुषों के साथ। सहजयोग में भाभी देवर में हो सकता है। उसका भी एक नियम है।

आप जानते हैं कि जो औरतें बड़ी हैं वो अपने से छोटों के साथ खेल सकती हैं और जो बड़े पुरुष हैं वो उनके साथ स्त्री अगर छोटी हो तो वो होली नहीं खेल सकती। या किसी भी तरह का व्यवहार परदा होता है। उससे उलट गए स्त्री बड़ी हो उसके साथ पुरुष का व्यवहार जो है, खुला होता है। ये अपने यहाँ मान्य होता है। इसलिए भाभी देवर में होली होती है। लेकिन जेठ और दुल्हन में नहीं हो सकती। जेठ से परदा होता है। और ये कायदा आपको आश्चर्य होगा कि सारे हिन्दुस्तान में है। और वो अपने आप ही

चलता है। हम लोगों के अंदर अंतर्निहित है। हमारे संस्कारों में बैठा हुआ है। क्योंकि अपने यहाँ उल्टा काम होता नहीं अधिकतर कि भई जैसे इंग्लैण्ड में आप देख लीजिए कि 80 साल की बुढ़िया है वो 18 साल के लड़के से शादी करेगी, 80 साल की बुढ़िया। उनको कोई हर्जा नहीं। अपने आप कोई सोच भी नहीं सकता कि ये उचित भी है या नहीं। माने ये आपकी बुद्धि ही नहीं ऐसे चलती। तो इधर ये तो सब चीज़ें होती ही नहीं। हमारे संस्कारों की वजह से हमारे अगर बिल्कुल ही, हमारे अंदर बैठे हुए हैं, उनकी वजह से हम बचे हुए हैं कि भई 80 साल की कोई भी स्त्री वो तो माँ हो ही गई। उसको तो माँ मानना ही हुआ। माँ क्या हुई नानी हो गई। तो उनसे ऐसे किसी बेवकूफ के भी दिमाग में बात नहीं आती। कितने भी पतित आदमी के दिमाग में भी ऐसी बात नहीं आती। और इतनी बुढ़िया औरत के दिमाग में भी ऐसी बातें कभी आ ही नहीं सकती। तो हमारे जो संस्कार हैं, भारतीय संस्कार, इन्हीं से हम लोग धीरे-धीरे पूरी तरह से परिपक्वता में आते हैं। वो लोग परिपक्व नहीं होते। उनकी उम्र हमेशा पच्चीस ही में रहती है। उससे ऊपर नहीं उठ पाते और हम लोग परिपक्व हो जाते हैं क्योंकि हमारे अंदर के संस्कार ऐसे हैं कि जो बांध लेते हैं हमें पूरी तरह से। जैसे एक पेड़ है वो कायदे से अगर बढ़े तो परिपक्व हो जाएगा और हवा में लटके तो परिपक्व नहीं हो सकता। वो बुड्ढे भी हो जाते हैं तो भी उनमें बचकाना पन जाता ही नहीं और जो हिन्दुस्तानियों का संबंध भी **Western** लोगों से आता है वो भी कुछ वैसा ही हो जाते है। मैंने देखा है उनकी भी बूढ़ी औरतें, बड़ी-बड़ी लड़कियां होएंगी वो भी वही बेवकूफी की बातें करेंगी जो कि लड़कियां बात करेंगी। उनकी भी समझ में सूझबूझ में परिपक्वता नहीं आती और इस परिपक्वता को पाने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वो जो कायदे कानून बने हुए हैं उनको चलाए। और उसमें बहुत ही आनन्द की बात है। कुछ गड़बड़ी नहीं हो सकती। अपने समाज में कोई दोष नहीं आ सकता। तो होली का जो यह हिस्सा है इसका सहजयोग में छोड़ देना पड़ेगा, अश्लीलता का, और होली का जो प्रेम का हिस्सा है उसे अपनाना चाहिए। कि बगैर भंग पीए हुए ही हम सब एक हैं। यह भावना आप जानते हैं, और विशेष रूप से गले मिलना चाहिए क्योंकि कृष्ण का सारा कार्य प्रेम का है। प्रेम को पूरी तरह से लूटने के लिए उन्होंने कहा है कि ये सब परमात्मा की प्रेम की लीला है। इसमें **Seriousness** है ही नहीं।

लीला! लीलाधर, जिसने लीला का धारणा किया है वो कृष्ण थे इसलिए उन्होंने कहा है सब चीज़ को लीला स्वरूप देखने का है। **Vibrations** पर देखिए। लीलाधर! और ये लीलाधर की जो लीला

है उसमें अश्लीलता कहीं नहीं आएगी और हमारी जो संस्कृति है, सीधी सरल बैठी हुई है। इन लोगों की उल्टी खोपड़ी है जैसे औरतें जो हैं, बदन खोलकर घूमेंगी और मर्द अगर हों और एकाध औरत अगर आ जाए तो फौरन वो अपने कोट के बटन लगाएंगे। हमने कहा कि मर्दों को कोट के बटन की क्या जरूरत है औरतों को ही कायदे से पल्ला लेना चाहिए। पर इनके सभी संस्कृति उल्टी पुल्टी बैठी हुई है और वो कुछ बैठ ही गई है। वो जमेगी अब धीरे–धीरे सहजयोग में आने से वो लोग और जम रहे हैं। अब आप लोगों की जो संस्कृति है उसे कृपया आप लोग न छोड़ें। सहजयोग के लिए यह बहुत महान चीज़ है कि आप लोग हिन्दुस्तानी भी हैं और आपके पास संस्कृति की एक बड़ी भारी एक धरोहर, वस्तु है, उसको आप पकड़े रखें। पकड़ कर उसी पर आप जमें और उसी पर आप परिपक्वता पाएं। लेकिन इसका बिल्कुल मतलब नहीं कि आप बुड्ढाचारी बनिए या किसी तरह से आप बहुत **Serious** आदमी बनें। प्रसन्नचित्त। आपकी माँ जब हँसती है तो आपने देखा है कि कभी–कभी तो 7 मंजिल की हँसी आती है हमको। सब लोग हैरान होते हैं कि गुरु लोग तो कभी मुस्कराते भी नहीं है पर माँ तो हमेशा हँसती रहती हैं और उनके मुख से मुस्कराहट तो कभी जाती ही नहीं। मैं तो एक मिनट से ज्यादा **Serious** नहीं हो सकती हूँ और जब **Serious** भी होती हूँ तो नाटक ही रहता है। और बहुत से लोग इस बात को जान गए हैं इसलिए वो भी नहीं **Seriously** लेते। ये गलत बात है।

तो कृष्ण ने ये चाहा कि जो कुछ भी गलत–सलत हो गया है, राम के जीवन की वजह से, राम का जीवन बहुत ऊँचा, बहुत आदर्श, बहुत गंभीर था। तो उन्होंने देखा कि अब ये सब लोग राम बनने जा रहे हैं तो उन्होंने कहा कि ऐसी बात नहीं। वो तो राम का कार्य राम करके चले गए। अब तो लीला का समय है। लीलामय सम होना चाहिए। और इसीलिए उन्होंने सारे संसार को लीला का एक पाठ पढ़ाया और लीला का अर्थ कभी भी अश्लीलता या अपनी मर्यादाओं से हिलना, अपनी परम्पराओं से उतरना या अपनी जो प्राचीन धारणाएँ जो बहुत सुन्दर अभी तक बनी हुई हैं उनको छोड़ना, ये नहीं है। हाँ रूढ़ी आदि जो गंदी चीज़ें हैं उनको छोड़ देना चाहिए लेकिन पवित्रता की भावनाएं जो आपस की रिश्तेदारी की हैं उसको पूरी तरह से सहजयोग में हम मानते हैं और उसको पूरी तरह से निभाना चाहिए। भाई–बहन के रिश्ते। कल हमारे भाई साहब आए थे। बस देखा उन्होंने की हमारी बहन, उनकी आँखों से आँसू बहे जा रहे थे। वो कुछ और महसूस ही नहीं कर रहे थे। तो ये जो परिपक्वता की भावनाएँ हैं, प्रेम की भावनाएँ हैं इसमें आदमी को चाहिए कि सहजयोग की दृष्टि

से विचार करें। सहजयोग की दृष्टि से जो शोभायमान है वह होना चाहिए। तो माधुर्य को लेते हुए शोभायमान करना चाहिए। तो कोई सा भी **Behaviour** जो कि अशोभनीय है। छोटी–छोटी बातों पे बात करना, छोटी–छोटी बातों मे उलझना, बेकार में आपस में झगड़े करना, किसी भी चीज़ की मांग करते रहना हमको ये चाहिए, वो चाहिए या कोई इस तरह की बातें करना ओछापन है। और ऐसे लोग सहजयोग नहीं कर सकते। एक बड़प्पन ले करके, एक उदारता ले करके अपने को चलना है। सो आजकी तो असल में पूजा जो है वो थोड़ी सी पूजा करनी चाहती हूँ। **Vibrations** इतने हैं कि कोई पूजा की विशेष आवश्यकता नहीं। और मंत्र वंत्र कहने की भी आवश्यकता नहीं।

मंत्र भी गंभीर्य में डाल देता है मुझको। पता नहीं क्यों? तो आज प्रसन्नचित हो कर के बस दो ही तीन मंत्रों में हम आज का खत्म करेंगे।

लेकिन इतना मैं कहूँगी कि होली को दिवाली बनानी ही पड़ेगी और दिवाली को होली। तब सहजयोग का **Integration** पूरा होगा। **Diwali** भी प्रसन्नचित हो करके करनी चाहिए। दिवाली में भी लोग इतना रुपया खर्च करते हैं कि दिवाली के बाद दिवालिया हो करके ..... याने इसी से शब्द दिवालिया निकला है। क्या आप मान सकते हैं कि दिवाली से शब्द दिवालिया निकला हैं। जिसने दिवाली मना ली वो दिवालिया हो गया। दिवालिया शब्द कैसे निकला ये बताएं। कुछ–कुछ शब्द के बड़े सुन्दर हैं उनमें से एक दिवालिया शब्द है कि दिवाली मनाई आपने ठीक है, अब आप दिवालिया हो जाइये। सो हम लोगों को दिवालिया नहीं होना। कोई ऐसी चीज़ नहीं करनी चाहिए जोकि मर्यादा से बाहर है, दिवालिया नहीं होना है। जितना अपने बूते का है, उतना करिए उससे आगे आप परमात्मा पर छोड़ दीजिए। दिवालियापन करने की जरूरत नहीं। और होली में दिवानगी करने की जरूरत नहीं। कोई सा भी ऐसा कार्य नहीं करना है जो **Indecent** हो, जिसमें **Decorum** नहीं हो, जिसमें कोई भी सभ्यता नहीं, न्यूनता हो। सभ्य तरीके से काम करना चाहिए। छोटी–छोटी चीज़ में आपको ध्यान रखना है कि उसमें मर्यादा क्या है। ..... जैसे कल **Artist** लोग बजा रहे थे, उस वक्त किसी को भी उठना नहीं चाहिए। किसी भी **Art** का मान करना चाहिए। आपने बहुत बार देखा होगा कि जब कोई **Artist** बजा रहा होता है तो मैं खुद जमीन पर बैठती हूँ ताकि आप भी सीखिए। मान–पान किसका करना चाहिए, ये सहजयोगियों को बहुत आना चाहिए।

Artist लोग भी आप देखिए, ये **Tradition** है कि पैर पर हमेशा शाल रख कर बजाएगें, अगर असली **Artist** हों तो। क्योंकि हो सकता हैं कि श्रोतागण

में कोई बैठे हो देवी–देवता और मेरे पैर न दिखाई दें। अपने देश की इतनी बारीक–बारीक चीज़ें है कि मैं आपसे क्या कहूँ। इतना सुन्दर अपने देश में यह सब बना हुआ है, इतना सुन्दर कहना चाहिए कि परमात्मा का अंगवस्त्र है कि कहना चाहिए कि उसकी गहनता और उसकी बनावट में इतनी काव्यमयी सारी चीज़ है। बहुत ही सुन्दर काव्यमयी चीज़ है, लेकिन हम लोग उसे नहीं समझ पाते और अपने जीवन में नहीं ला पाते तो वो सब फिर गंदगी हो जाती है। मान पान की बात है। अब कल जेठ बैठे हुए थे हमारे रिश्ते में तो अब आप देखिए, पूरे Lecture में मर्यादा बनी रही कि हमारे जेठ, हमारे बड़े भाई बैठे हुए हैं तो उनके आगे कहाँ तक हम बोल सकते हैं। अब तो हम आदिशक्ति हैं। कौन हमारे लिए जेठ और कौन हमारे लिए बड़े भाई। लेकिन जब इस रिश्ते में बैठे हुए हैं तो उनका मान पान पूरी तरह से रखना चाहिए। हर रिश्ते का मान पान रखना चाहिए। आप कुछ भी हो जाओ। सहजयोगी भी हो गए तो भी आप मान पान को ले के चलो। ये नहीं कि उसको आप तोड़ दें। और इस तरह से जब आप करेंगे तो धीरे–धीरे आपकी समझ में आ जाएगा कि इसमें बड़ा ही माधुर्य है और बहुत ही मीठी चीज़ें हैं। तो आज के होली के दिन सिर्फ होलिका दहन का एक मंत्र अगर आप कहें कि होलिकामर्दिनी, ये मंत्र से आप लोग मेरा पैर धोएगें। और बच्चों को गणेश की स्तुति तो होनी ही चाहिए इसलिए गणेश की स्तुति करके बच्चे पैर धो लें। और फिर 3 मंत्रों से मेरे पैर धो लें और कोई खास चीज़ करने की जरूरत नहीं।

क्योंकि फिर वो Seriousness आ जाती है। क्योंकि कृष्ण ने सब पूजाएँ बंद करवा करके और सिर्फ होली चालू करवाई। छोड़ो पूजा वूजा मत करो। Complete पूजा बंद कर दो। उसी तरह से आज हम लोगों को कृष्ण को याद करते हुए सब पूजाएं बंद कर देनी चाहिएं और सिर्फ ये करना चाहिए कि आज उल्लास व आह्लाद का दिन है। सब अपने होली मिलो क्योंकि आज होली आई है और होली की आनन्द उठाना है और इसकी दिवाली बनाने का मतलब तो मैंने आपसे बताया है कि इसकी जो सुचारू रूप से सभ्यता को लेते हुए अत्यंत कलात्मक ऐसी सुन्दर रचना नई तरह की होली की हमें करनी चाहिए। अतः होली को दिवाली बनाना है और दिवाली को होली बनाना है।

आप सबको मेरा अनन्त आशीर्वाद।

(तिहाड़ जेल के एक कैदी का पत्र)

श्री गणेशाय नमः आदिशक्ति नमः

प्रार्थना पत्र

सेवा में,

परम पूज्य श्री आदिशक्ति साक्षात् श्री श्री माता जी

श्री निर्मला देवी जी सादर हृदयी प्रणाम माँ मैं आपको लाख लाख धन्यवाद करता हूँ कि आपने एक जीरो को फिर से हीरा बना दिया है। डूबते हुए को पार कर दिया है। आप स्वयं साक्षात आदिशक्ति हैं मैं कोटी कोटी नमन व बारम्बार प्रणाम करता हूँ। मैं अपने जीवन से निराश हो गया था की शायद ही अब कभी इस कारागार से मैं बाहर जा सकूँगा। परन्तु आपकी कृपा ने नामुमकिन को मुमकिन में बदल दिया है। मुझको आजीवन कारावास की सज़ा हुई थी। जबकी आप स्वयं अन्तरयामी हैं, यह जानती हैं कि मैं निर्दोष था और बेसहारा था। ऐसे समय पर मुझे कारागार में ही आपके नाम का सहारा मिला। आपके नाम में वो दो क्षण के ध्यान ने वो काम कर दिया है कि मुझको दोबारा जीवन मिल गया है। एक बार मेरी बेल अप्लीकेशन हाई कोर्ट से रिजेक्कट हो गई थी दोबारा आपके नाम के सहारे लगाई तो 17/7/2002 को बिना ग्राऊन्ड के ही मेरी जमानत के आर्डर आ गए हैं। मैं आपका सदा जीवन आभारी रहूंगा और आपकी शक्ति का अनुभव सबको बताऊँगा। पूरा जीवन आपके ही नाम में बिताऊँगा। अब बेल भरने वाला कोई नहीं है पर मुझको ये विश्वास है की जो काम आपके नाम से हो गया है ये काम भी आपके नाम से शक्ति से कृपा से हो जाएगा। जब आप हैं तो मैं ये जानता हूँ कि मेरी बेल भी भर जाएगी। आपकी कृपा से।

आपके नाम व भक्ती में वो शक्ति है कि काम आसान हो जाता है।

जिसके सिर ऊपर तू माता सो दुःख कैसा पावें।

माँ आपसे यही विनती है कि मेरे ऊपर सदा ही अपनी कृपा का हाथ रखना।

सदा मुझमें सहजयोग की भक्ती व शक्ति रखना ताकि मैं जीवन में कभी बहकूं नहीं श्रीमाता जी आपकी जय हो जय हो, जय हो।

सधन्यवाद,

प्रार्थी।

आपका बच्चा सेवक

सरवेश कुमार S/o सन्तलाल

जेल नं० 1 न्यू दिल्ली, तिहाड़

सहजयोग कार्यक्रम हेतु 'अनुभव'

जय श्री निर्मला माताजी की

मेरा अनुभव– मैं तिहाड़ जेल से आप को इसी 'सहजयोग' के बारे में बताना चाहती हूँ कि शुरु–शुरु में मैं भी सब के साथ बैठ जाती थी। जो भी करवाया जाता था मैं करती रहती। मगर एक दो बार मैंने इस क्रिया को कोई महत्व नहीं दिया क्योंकि मुझे ऐसा लगता था कि ये सब करने से कुछ नहीं होता। क्योंकि मैं भगवान के आगे प्रार्थना और भी कई प्रकार के यत्न किये मगर फिर भी मैं ग्यारह साल बाद एक ही केस में दुबारा जेल में हूँ। केस में मेन मेरा पति था। मुझे बेवजह मेरी गोरमन्ट नौकरी की वजह से फंसाया गया था कि केस का सारा मामला मैं अपने ऊपर ले लूं। मेरी तीन बेटियां थीं। मैंने कोई कसूर नहीं किया था न ही उन पुलिस वाले का कहना माना। सच्चाई के मार्ग पर चल रही हूँ। इसी में मेरी नौकरी चली गई और पाँच वर्ष पहले मेरा पति का स्वर्गवास हो चुका है। अब मेरी बेटियां बड़ी हो चुकी है। परन्तु हाई कोर्ट लड़ने के बाद भी मैं आज जेल मैं हूँ। मेरी चिंता का कारण बाहर अकेली मेरी बेटियां, न ही कोई बेटी नौकरी करती है। किराये का मकान है। मुझे नहीं पता वो कैसे जी रही हैं। आजकल का समय देखते हुए मैं हर वक्त परेशान रहती हूँ।

'सहजयोग' में एक जगह बताया जाता है कि "सब को क्षमा कर दो और खुद को भी क्षमा कर दो" प्रार्थना करें श्री माताजी के आगे तो यह सुनकर मेरे अंदर एकदम हलचल हो जाती थी कि यह कैसे हो सकता है। हमारी सारी जिंदगी किसी ने बेवजह बर्बाद कर दी, हम उस को कैसे क्षमा कर सकते हैं? इसी प्रश्न को लेकर मैं खड़ी हो कर पूंछनें लगी। उस समय सहजयोग के जो सदस्य हमारे यहाँ आते थे उन्होंने बड़े प्यार से मुझे समझाया कि तुम एक हफ्ता नियम से सुबह–शाम ये सब करके देखो और हमें बताना। मैंने कहा ठीक है। एक हफ्ता करके देख लेते हैं।

मैं एक हफ्ते तक जितना मुझे समझ आता मैं करती रही। मैंने अहसास किया कि जब मैं श्री माता जी का ध्यान लगा कर बैठती तो मुझे अपने शरीर में कुछ अलग से हरकत का अहसास होता है और मेरा मन शांत हो गया। रात दिन की चिंता अपने आप खत्म होने लगी और मेरे

बच्चे भी ठीक-ठाक श्रीमाता जी की कृपा से अपनी जिंदगी जी रही है। और मैं हर वक्त श्री माता जी का धन्यवाद करती हूँ। और याद करती रहती हूँ। अब ये केस माता जी की कृपा से सुप्रीम कोर्ट में लगा हुआ है। मुझे पूरा श्री माताजी पर विश्वास है कि मुझे माता जी जल्दी यहाँ से निकाल कर मेरे बच्चों के पास ले जायेंगी। मेरी सारी चिंताये हर लेगी।

मैं यहां से निकलने के बाद अपने बच्चों को भी इस सहजयोग का ज्ञान दूंगी और आस-पास जो भी मुझे मिलेगा उनको भी यह मार्ग दिखाऊँगी और मैं भी हमेशा श्री माता जी के चरण कमलों में रहूँगी। मुझे पूरा विश्वास है कि श्री माता जी मुझ पर हमेशा कृपा रखेंगी।

श्री माता जी की जय

श्री माता जी की शरण में,

कुन्ती चोपड़ा

C.J. No. 6A

सहज–कृपा

(एक अनुभव)

यह बात शनिवार दोपहर 2.00–2.30 बजे की है, सहजयोग में आए हुए अभी कुछ ही समय (लगभग एक वर्ष) हुआ था। दुकान पर एक ग्राहक पुराना मोबाइल फोन बेचने के लिए आया (हमारा मोबाइल फोन का व्यवसाय है) जिसके साथ उसका चार्जर (मोबाइल चार्ज करने वाला यंत्र) नहीं लाया था। हमें लगा कि यह फोन चोरी का है। हमने पूछा कि चार्जर कहां है? उन्होंने कहां कि चार्जर नहीं है। हमने कहा कि फिर तो यह फोन कहीं से उठाया हुआ है। होते होते बहस हो गई। बात इतनी बढ़ गई कि हमने पुलिस को बुला लिया और चोरी का फोन बेचते हुए उन महाशय को पकड़वा दिया।

बीच में विषय बदलूँगा। मैं कुछ समय से शनिवार दिल्ली मंदिर समय पर नहीं पहुंच रहा था। इस पूरे सप्ताह मैं माँ से प्रार्थना कर रहा था कि, "शनिवार को माँ दुकान पर ज्यादा ग्राहक न आएँ–मुझे आश्रम जल्दी पहुँचना है। मैं कुतुब मंदिर में लेट नहीं होना चाहता।"

पुनः अपने विषय पर। लगभग एक घंटे पश्चात् उन महाशय का फोन, जिनको पुलिस ले गई थी, आया। मैं सुनकर स्तब्ध रह गया जब उसने कहा कि अभी ऐसी कोई जेल नहीं बनी जो मुझे या हमारे नांगलोई ग्रुप को अंदर करवा सके। तूने तो हमारे साथ जो करना था कर लिया अब तू अपने आपको बचा सकता है तो बचा–हम तेरी दुकान पर आ रहे हैं। देखतें है तेरी कौन रक्षा करता है।" मैंने आँव देखा न ताँव सब स्टॉफ से बोला कि शटर डालो और भागो। मैनें गाड़ी उठाई और सीधा मंदिर के लिए दौड़ पड़ा। उस दिन की बिक्री, सामान सब दुकार पर छोड़, लड़के को शटर डाल कर चाबी घर पर देने को कह कर, भाग गया। जब आश्रम (Delhi Temple) पहुँचा तो सोनू भैया (एक सहजयोगी, अशोक विहार) मिले, उनसे कहा कि भैया बड़ी Problem में फंस गया हूँ, कृपया बंधन दे देना। उन्होंने बंधन दिया और कहा कि Problem दूर हो गई। मैं हँसा, मैंने सोचा कि यह Problem इतनी आसानी से दूर नहीं हो सकती। घड़ी में समय देखा सांय के 6.25 बजे थे। एक बात के लिए तो श्रीमाताजी को धन्यवाद दिया कि माँ आपने मंदिर तो समय पर पहुँचा दिया। 6.30

बजे से रात्रि 9.00 बजे तक वहां मंदिर में बैठा रहा। कोई ध्यान नहीं लगा। केवल एक ही चिंता सता रही थी कि इस समस्या से कैसे निपटा जाए। आश्रम से बाहर आया, मोबाइल से अपने लड़के को (जो दुकान के ऊपर बने कमरें में रहता है) फोन किया कि क्या हुआ? उसने बताया कि चार-पाँच लोग एक मारुति कार में आए थे, खूब गाली-गलौच कर गए हैं, बोर्ड वगैरह सब तोड़ गए हैं और बोल गए है कि अब तो भाग गया पर सुबह कहाँ जाएगा। कह देना कि हम सुबह आएँगे-अपने आपको बचा सकता हो तो बचा ले।" मेरी मानसिक हालत खराब हो गई। घर पहुँचा और लगा सब सहजयोगियों को फोन करने। रात्रि 12.00 बजे तक सब सहजयोगियों को फोन करता रहा। गुरुनानी जी, मेहता जी (Subcentre Leaders) वगैरह सबको फोन किया और कहा कि मैं किसी मुसीबत में फंस गया हूँ कृपया बंधन दे देना। सबने कहा कि Vibrations अच्छी आ रही हैं – बंधन दे दिया – कोई चिंता की बात नहीं है। लेकिन मुझे किसी की बात का यकीन नहीं आया। मैंने कहा कि कल लफड़ा तो होना ही है – उसे तो कोई रोक नहीं सकता। मैं रात्रि 2.00 बजे तक सहज के Treatment जैसे पेपर बर्निंग, कैन्डलिंग, फुट-सोक करता रहा। सुबह 4.00 बजे फिर उठ गया और फिर सारे Treatment कर डाले। अपने पाँच-छ मित्रों के साथ (एक मित्र का रिवाल्वर भी ले लिया) दुकान पर (दुकान सातों दिन खुलती है) चला गया। पड़ोसियों ने कहा कि कल रात क्या झगड़ा हो गया था? अभी वे आते होंगे-पुलिस को फोन करके बुला लो। मैंने सोचा कि पुलिस को बुलाने का तो कोई फायदा नहीं है।

खैर हम प्रातः 10.00 बजे दुकान खोल कर बैठ गए और उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे। 10.00 से 11.00 बजे, 11.00 से 12.00 बजे परन्तु वे नहीं आए। अचानक 12.45 पर उनका फोन आया कि तेरी दुकार पर जो माता की फोटो लगी है ये कौन है? मैं लड़का भेज रहा हूँ, इनके बारे में यदि कोई किताब वगैरह है तो उसे दे देना और कभी किसी से पंगा मत लेना। मैंने पूछा कि क्या आप लोग नहीं आ रहे? तब उन महोदय ने कहा कि 'नहीं'।

बड़ा सुखद क्षण था वह। मैंने श्रीमाताजी को प्रणाम किया, धन्यवाद किया और मित्रों को सारी बातों से अवगत करा उनको जाने को कहा। लगभग 1½ घंटे के पश्चात् उनके गिरोह का एक व्यक्ति आया। मैंने उससे कहा कि भइया मैं आप लोगों से माफी चाहता हूँ मैं, आगे से ऐसी कोई हरकत नहीं करूंगा। मुझे ये तो बता दो कि आप लोग क्यों नहीं आ रहें। तब उसने कहा कि "हम लोग तेरे पास आने के लिए गाड़ी में बैठ गए थे, गाड़ी स्टार्ट कर ली थी कि हमारी गाड़ी के सामने

तेरी ये श्रीमाताजी और हमारी दादी जिसको मरे हुए 20 वर्ष हो गए – आ गईं और बोली कि 'कहीं जाने की जरूरत नहीं हैं, यहीं बैठे रहो। खबरदार यदि उसको हाथ भी लगाया तो।" हमें यह नहीं समझ में आ रहा है कि हमारी दादी तेरी रक्षा के लिए क्यों आई। 20 वर्षों में आज तक कभी भी किसी को भी नज़र नहीं आईं।"

मैंने उनको सहज परिचय पुस्तिका और **Centre-list** दी। दण्डवत होकर दुकान के मंदिर में श्रीमाताजी को प्रणाम किया और धन्यवाद दिया। तुरन्त दुकान बंद करके खुशी–खुशी घर चला गया – खूब झूमते नाचते गाते। (बाद में कभी किसी **Centre** में वे लोग नज़र नहीं आए।)

ऐसी हैं हमारी श्रीमाताजी जो अपने सब बच्चों का ख्याल रखती हैं।

जय श्रीमाताजी!

जैनेन्द्र जैन

भगवान दास नगर, दिल्ली।

सहजयोग प्रसार का आनन्द

(भिन्न पूजाओं के अवसर पर दिए गए प्रवचनों से उद्धृत परम पूज्य श्री माताजी के कथन)

मुझे आशा है कि आप सब लोग सहजयोग प्रसार के महत्व को समझते हैं। आप यदि इसका महत्व नहीं समझते तो आप बिल्कुल बेकार हैं। मेरे लिए यह महानतम कार्य है। जिस प्रकार यहां पर बहुत सी बत्तियाँ है वैसे ही विश्वभर में बहुत से सहजयोगी होने चाहिएं। आप यदि विश्व को परिवर्तित करना चाहते हैं और व्यर्थ जीवन की उथल पुथल से यदि आप बचना चाहते हैं तो आपको उनकी रक्षा करनी होगी, उन्हें उबारना होगा। आपका यही कार्य है। सहजयोग के बदले में आपको यही देना होगा।

(25 दिसम्बर, 2001)

कार्य

आपको अंहकारी नहीं होना है, गौरवशाली बनना है। आपको सहजयोगी होने पर गर्वित होना चाहिए। ऐसे समय पर जन्म लेने पर, जबकि आपको परमात्मा के कार्य की जिम्मेदारी संभालनी है, आपको गर्वित होना चाहिए कि परमात्मा ने आपको इस कार्य के लिए चुना। अतः सर्वप्रथम आपको चाहिए कि उस स्तर तक उन्नत हो जाएं। मैं देखती हूँ कि सहजयोग में कुछ लोग अचानक उदासीन एवं एकांतप्रिय हो जाते हैं। उन्हें कभी क्षमा नहीं किया जाएगा क्योंकि परमात्मा ने आपको इतना कुछ दिया है। मान लो कोई आपको एक हीरा देता है। आपको इसपर गर्व होता है। इस हीरे को आप प्रदर्शन के लिए रख देते हैं। परन्तु जब आपको आपकी आत्मा दे दी गई है तो इस उपलब्धि पर भी आपको गर्वित होना चाहिए और उदासीनतापूर्ण आचरण नहीं करना चाहिए। कुछ लोग सोचते हैं, "अब मैं कोई नौकरी नहीं करूंगा, अब मैं बाहर नहीं जाऊंगा, घर में बैठकर ध्यान धारणा करूंगा।" सहजयोग मे ऐसे लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। "मैं यह कार्य नहीं कर सकता।" "नहीं कर सकता" शब्द सहजयोगी कहलवाने वाले लोगों के शब्दकोष से चला जाना चाहिए।

(21 मार्च, 1983)

मैं चौबिसों घंटे काम कर रही हूँ। एक क्षण भी बरबाद नहीं करती। मुझे आशा है कि आप भी इसी प्रकार से अपने चौबिसों घंटे अपने तथा पूरे विश्व के उद्धार के लिए लगाएंगें।

(4 मई, 1985)

इस विश्व में हर प्राणी को कुछ न कुछ कार्य करना पड़ता है तो सहजयोगियों को क्यों नहीं करना चाहिए? आपके साथ इतनी विशिष्ट घटना हुई है कि आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है। तो क्यों हमें अपना चित्त बरबाद करना चाहिए? क्यों हमें अपनी ध्यान धारणा की उपेक्षा करनी चाहिए? क्यों? हमें उन्नत होना है। हम भिन्न लोग हैं। इस विश्व में हमारी प्रजाति बिल्कुल भिन्न है। हम आत्म साक्षात्कारी लोग हैं। व्यवहारिक रूप से ईसा–मसीह के समय पर साक्षात्कारी लोगों की संख्या नहीं के बराबर थी और उससे पूर्व भी, मुझे आश्चर्य हुआ, चीन तथा अन्य स्थानों पर एक युग ऐसा था जब एक गुरु एक शिष्य की परम्परा थी। आप सबके सब गुरु हैं परन्तु आप अपनी गुरू शक्ति का उपयोग नहीं करना चाहते।

क्यों नहीं महिलाएं भी इस शक्ति का उपयोग करतीं? मैं देखती हूँ कि सहजयोग में महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक अकर्मण्य हैं। मैं स्वयं भी एक महिला हूँ। अकेले–सिर मैंने यह सारा कार्य किया है। तो क्यों नहीं आपको ऐसा ही करना चाहिए। क्योंकि विश्वभर में लोगों का अन्तर्परिवर्तन करना बहुत ही विशाल कार्य है। परन्तु आपके लिए यह बहुत सुगम है। मैं यदि इस कार्य को कर सकती हूँ तो आप क्यों नहीं कर सकते।

अपना पूरा चित्त इस पर लगा दें कि, "हम सहजयोग को कार्यान्वित कर रहें हैं, अपने लिए नहीं, मानवता के हित के लिए।" हमें इसकी आवश्यकता है, हमें इसकी बहुत आवश्यकता है। यदि आप केवल अपने विषय में सोचते हैं, अपने परिवार के विषय में सोचते हैं, तो आपकी करुणा, आपका प्रेम बरबाद हो रहा है। क्या लाभ है? ऐसा तो लोग आत्म साक्षात्कार से पहले भी करते हैं। अपने परिवार से तथा अन्य चीजों से लिप्त हो जाने का क्या लाभ है? आपको पूरे विश्व से लिप्त होना चाहिए। अब आपका सम्बन्ध पूरे विश्व से है।

जैसा मैंने कहा, अब बूंद सागर बन चुकी है। स्वयं को सागर से एकरूप कर लें। आपने यदि देखा हो तो, सागर सबसे गहरा है। इतना गहरा है कि शून्य बिन्दु सागर से आरंभ होता है। फिर भी सागर विनम्र है। निम्नतम स्तर पर यह रहता है परन्तु सारी नदियां आकर इसी में गिरती है। आकाश को बादल भेजने का कार्य सागर ही करता है, और यही बादल वर्षा बनकर जब बरसते हैं तो पुनः समुद्र में ही आकर समाते हैं। पुनः उसी समुद्र में ही वे वापस आ जाते हैं।

अतः केवल वही लोग अधिक साधकों को आकर्षित कर पाएगें जो विनम्र हैं। जो लोग करुणामय हैं वही अधिक सहजयोगी आकर्षित करेगें।

(31 दिसम्बर, 2000)

पूर्ण हृदय से आपको समर्पित होना होगा 'मैं जो हूँ वही हूँ, सदा से मैं वही था 'मैं हमेशा वही रहूँगा' मुझे कम या अधिक नहीं होना है 'ऐसा व्यक्तित्व शाश्वत होता है'। अब यह आप लोगों पर निर्भर करेगा कि अपने जन्म का इस आधुनिक युग में उपयोग करने के लिए, अपनी पूर्ण परिपक्वता तक उन्नत होने के लिए, और जो भी ख़ाका (Design) परमात्मा आपके माध्यम से बनवाना चाहते हैं, उसे कार्यान्वित करने के लिए मेरे अन्दर से जो भी सम्भव हो सके आप निकालें। निःसन्देह, विवेकपूर्वक आप बहुत से कार्य कर सकते हैं। विवेक से आप मुझे स्वीकार कर सकते हैं। भावनाओं के माध्यम से अपने हृदय में आप मुझे अपने समीप महसूस कर सकते हैं। परन्तु यह कार्य केवल ध्यान–धारणा और समर्पण के माध्यम से होगा। 'ध्यान–धारणा समर्पण के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। यह पूर्ण समर्पण है।

(31 जुलाई, 1982)

अब आप कह सकते हैं, "हमें क्या करना चाहिए?" प्रतिदिन अपना सामना करें, वास्तव में यह देखें कि आप अपनी सांसारिक चिन्ताओं पर कितना समय खर्च करते हैं और अपने उत्थान को कितना समय देते हैं। क्या आपने अपना सभी कुछ, अपनी सभी चिन्ताएं सर्वशक्तिमान परमात्मा पर छोड़ दी हैं? क्या आप अपनी पृष्ठभूमि (Background) से पूरी तरह से बाहर निकल आए हैं? मेरे सम्बन्ध दूसरों से कैसे हैं? किस प्रकार मैं सहजयोगियों से बात करता हूँ?

अतः अब निष्कर्मन्यता के लिए समय नहीं बचा। अब आपको उठना होगा और जागृत होना होगा। आज वह दिन है जब मुझे आशा है कि आप निर्विकल्प में कूद पड़ेंगें। परन्तु केवल प्रयत्न करने पर ही आप वहां रुक पाएगें, अन्यथा आप पुनः नीचे की ओर खिसक आएंगे।

अतः मेरे इस प्रवचन को बार–बार सुनें–पढें। इसके विषय में सोचें नहीं। ये न सोचें कि ये किसी अन्य के लिए है। यह आपके लिए है। आप सबके लिए, आपमें से हर एक के लिए, और स्वयं को पहचाने कि प्रतिदिन आप कितना आगे बढ़तें हैं।

(3 मई, 1986)

प्रेम के इस संदेश का प्रसार आप किस प्रकार करने वाले हैं?

दो प्रकार से आप इसे कार्यान्वित कर सकते हैं। व्यक्तिगत रूप से आप इसे किस प्रकार कार्यान्वित करेंगे, तथा सामूहिक रूप से किस प्रकार करेंगे? अतः अगुवाओं को मेरी एक सलाह है कि जो भी सुझाव लोग उन्हें देते हैं उन्हें अवश्य स्वीकार करें। वहां आप केवल अगुवा है। आपने एक दूसरे से सम्पर्क साधना है। किसी पर रौब नहीं जमाना। आपने किसी

पर हुक्म नहीं चलाना। मेरे तथा अन्य लोगों के बीच सम्पर्क साधने वाला व्यक्ति बनना है।

अब आपने देखना है कि किस प्रकार से लोग आपको नए विचार देते हैं, आपने उन्हें दुत्कारना नहीं है। ये मत सोचें कि केवल आप ही ऐसे व्यक्ति हैं जिसे विचार आते हैं। अन्य लोगों से भी विचार लें। हो सकता है कि ब्रह्माण्ड से उन्हें विचार मिलते हों। वो आपको ऐसा भी बता सकते हैं जो किया जाना चाहिए, जिसे लिखा जाना चाहिए और संभाला जाना चाहिए, "हाँ, ऐसा कहा गया था। ऐसा किया जाना चाहिए था।" और तब जो भी संभव हो उसे करने का प्रयत्न करना चाहिए।

आपको यदि संदेह है तो हमेशा आप मुझे टेलिफोन कर सकते हैं और पूछ सकते हैं। परन्तु गतिशीलता में उन्हें (अन्य सहजयोगियों को) लगाएं। हर आदमी इस कार्य में सम्मिलित है।

(11 दिसम्बर, 1988)

गति (Speed)

हमारे पास जो शक्तियां हैं वो सहजयोग की हैं। जैसे श्रीमाताजी के पास सहजयोग का काम करने की शक्तियाँ हैं हमारे पास भी यह कार्य करने की शक्तियाँ है। जिस प्रकार वो कार्य करती हैं वैसे ही हमें भी वो कार्य करना है। परन्तु इस प्रकार की मान्यताएं हैं कि, "श्रीमाताजी सभी कुछ कर रही है। हम क्या कर सकते है?" नहीं, आपने यह कार्य करना है।

यह निर्लिप्तता अत्यन्त आवश्यक है यह बात मैं आपको बता रही हूँ। आपने स्वयं यह कार्य करना है। ऐसा नहीं है "श्रीमाताजी करेंगी। आखिरकार वे सभी कुछ कर रही हैं।" यह बात ठीक है। एक प्रकार से यह बात ठीक है। परन्तु आप लोग माध्यम है .....। अतः चाहे स्रोत के होते हुए भी माध्यमों ने ही परिणाम दिखाने है, हनुमान जी की तरह से आप लोग भी माध्यम हैं और आपको कार्य करना है। आपने ही इस कार्य को अंजाम देना है।

श्री हनुमान की अन्य खूबी यह थी कि वे कालातीत थे .....। सभी कार्यों को वो अत्यन्त द्रुत गति से करते थे ....। श्री हनुमान जी की एक खूबी यह थी कि वे अत्यन्त तीव्रगामी थे। किसी अन्य व्यक्ति के करने से पूर्व वे अपने कार्य को कर डाला करते थे ....!

त्रिफलागार (Trefalgar) जाकर नेपोलियन को पीट लेना तो बहुत अच्छा है परन्तु धर्म के क्षेत्र में मैं सोचती हूँ कि लोग समय के महत्व को नहीं समझते। हम विलम्ब स्वामी है और हममें विलम्ब करने की आदते हैं "ठीक है, मैं टेलिफोन करुंगा, मैं पता लगाऊंगा ...., यह हो जाएगा।" यह हमारा सबसे बड़ा दुर्गुण है....।

बेहतर होगा कि अत्यन्त तेजी से तुरन्त कार्य को करें। कार्य करने का यही समय है। "अगले वर्ष श्रीमाताजी हम देखेंगे। गणपति पुले के पश्चात् हम इस पर ध्यान देंगे। इसके विषय में हम बातचीत करेगें, बहस करेगें आदि।" उनके चरित्र का यह एक गुण है। हमें यह समझना है कि आज जब हम श्री हनुमान की पूजा कर रहे हैं तो हमारे अन्दर वह तीव्र ओजस्विता होनी चाहिए। यह अभी होना है। इसे हम बहुत अधिक नहीं टाल सकते। पहले ही हमें बहुत देर हो चुकी है।

परिणाम देखने के लिए आपको अत्यन्त द्रुतगामी होना होगा। चीज़ों को लटकाते नहीं रहना होगा और न ही छोटी–मोटी चीज़ों से सन्तुष्ट होना होगा। देखना होगा कि कौन से सकारात्मक कार्य आप कर रहे हैं...। अतः आपका चित्त कार्य पर ही होना चाहिए। इसके विषय में हम यही सब कर रहे हैं...। आप भी ऐसा करना आरंभ करें। आपमें शक्तियाँ हैं आपको सब प्राप्त हो जाएगा। सब चीज़ सुव्यवस्थित हो जाएगी। कार्य शुरु कर देना चाहिए।

परन्तु आप यदि मनुष्यों की तरह व्यवहार करते हैं तो पहले किसी चीज़ की योजना बनाते हैं, फिर इसे खारिज करते हैं तो इससे यह कार्यान्वित न होगा। यद्यपि श्री हनुमान जी हर समय पिंगला नाड़ी पर दौड़ रहे हैं परन्तु वे हमारी योजनाओं को चौपट करते रहते हैं क्योंकि उनके स्थान पर हम स्वयं पिंगला नाड़ी पर दौड़ने लगते हैं। यह ठीक है। आप वहां दौड़ रहे हैं। मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा।

तो वे हर समय हमारी योजनाओं को टालते रहते हैं और इस प्रकार हमारी सभी योजनाएं असफल हो जाती हैं। समय तथा अन्य अनावश्यक चीज़ों का बहुत ध्यान देते हैं। परन्तु सहजयोग में अपनी उन्नति के समय पर हम ध्यान नहीं देते। हमारे कुछ लक्ष्य होने चाहिएं, नियत समय होने चाहिएं...।

आपको सहजयोग करना होगा। सहजयोग फैलाना होगा। सहजयोग को एक ऐसे स्तर पर लाना होगा जहां लोग इसे देख सकें...।

आपको साहस करना होगा। सामूहिक रूप से तथा व्यक्तिगत रूप से ये भुलाकर कि क्या होगा। आपको निर्भयतापूर्वक आगे बढ़ना होगा। मेरा अभिप्राय यह है कि न तो आप जेल भेजे जाएंगे और न ही क्रूसारोपित किए जाएंगे। इसका विश्वास रखें कि नौकरी यदि चली गई तो दूसरी नौकरी मिल जाएगी और नौकरी यदि न भी मिली तो आपको अनुदान (Dole) मिल जाएगा, ठीक है। अतः आपको व्यर्थ की चीज़ों की चिन्ता नहीं करनी, ऐसी चीज़ों की जिनके विषय में प्रायः मनुष्य बैठ कर चिन्ता करते हैं। परन्तु इस सारी चिन्ता के बावजूद भी

उन्हें काम मिल जाता है। और वे नौकरियां भी करते रहते है...।"

आप नहीं जानते कि आप लोग देवदूत हैं तथा आपको यही कार्य करना है, अन्य कुछ भी आवश्यक नहीं। हाँ मुझे आशा है कि आज की पूजा से आपका उत्साह, आपका साहसिक स्वभाव आपकी पिंगला नाड़ी को प्रदोलित कर देगा (Vibrate) बिना किसी अहम् के हनुमान जी की तरह से अत्यन्त विनम्रतापूर्वक हम सारे कार्यों को करेगें।

गतिशीलता एवम् विनम्रता का कितना अच्छा सम्मिश्रण था! इसी गुण की अभिव्यक्ति आपने भी करनी है। जितना अधिक कार्य आप करते हैं उतना ही अधिक स्वाग्रह आप करेंगे। आपको पता–चलेगा कि विनम्रता ही एक ऐसा गुण है जो सहायता करता है। आज्ञा पालन, कार्य को अंजाम देने में आपकी सहायता करती है और तब आप विनम्र होते चले जाएगें।

परन्तु यदि आप सोचते हैं कि "मैं तो पहले से ही ऐसा हूँ", तो समाप्त। यदि आप ये समझते हैं कि "परमात्मा ने यह कार्य किया है, परम चैतन्य ही सभी कुछ कर रहा है, मैं तो मात्र साधन हूँ", तब विनम्रता आएगी और आप प्रभावशाली माध्यम बन जाएगें...।

आप यदि परमात्मा का कार्य कर रहें हैं तो आपकी सारी चिन्ताएं ले ली जाती हैं। किसी चीज़ की आपको चिन्ता नहीं करनी, सभी कुछ संभाल लिया जाता है। परन्तु यह अपने बड़प्पन का प्रचार करना नहीं है, ऐसा करना नहीं है। यह तो सामूहिकता को बढ़ावा देना है।

आन्तरिक ऊर्जा उत्पदक (Inner Dynamo)

किसी भी चीज़ को जब आप देखते हैं तो प्रतिक्रिया होती है। परन्तु मेरी दृष्टि जब किसी चीज़ पर पड़ती है तो वह (चीज़) प्रतिक्रिया करती है। जब मैं आपकी ओर देखती हूँ तो आपकी कुण्डलिनी प्रतिक्रिया करती है। मेरी दृष्टि से यह चैतन्यित हो जाता है – कटाक्ष। मेरा हर कटाक्ष चीज़ों को प्रतिक्रिया करने पर विवश करता है तथा निरीक्षण का अर्थ यह है कि "मैं जानती हूँ कि यह क्या है।"

किसी भी व्यक्ति की तरफ देखकर मैं जान जाती हूँ कि व्यक्ति क्या है। किसी चीज़ को देखकर मैं जान जाती हूँ कि यह कैसी है – निरीक्षण। परन्तु सभी कुछ स्मृति में रहता है। जैसे जब हम जा रहे थे तो उन्होंने कहा, "हमारे पास केवल काले पत्थर हैं। मैंने कहा नहीं हमारे पास लाल पत्थर भी हैं।" उसने पूछा, "कहां? क्या आप जानती हैं?" तब मैंने उन्हें ठीक वही स्थान बताया जहां पर ये पत्थर प्राप्त किए जा सकते थे। कहने लगा, "श्रीमाताजी, आप कैसे जानती हैं?" मैंने कहा, "आठ वर्ष पूर्व हम उधर से गुजरे थे

और मैं जानती हूँ कि वहां लाल पत्थर हैं।" तो जिस भी चीज़ को मैं देखती हूँ वह चैतन्यित हो जाती है। और मुझे पता लग जाता है कि उसमें क्या है और उचित समय पर उपयोग किए जाने वाले क्या गुण हैं।

तो यदि आपका इस प्रकार का स्वभाव हो। तो आप हैरान होगें कि कितनी गतिशीलता से ये कार्यान्वित करता है। आपकी ऊर्जा उत्पादक बनाने कि कोई आवश्कता नहीं। यह आपके अन्दर विद्यमान है। इसे कार्य करने दें।

(22 अप्रैल, 1984)

श्री माताजी इस्तम्बूल में

इस्तम्बूल जन कार्यक्रम
23 अप्रैल, 2002 (एक रिपोर्ट)

23 अप्रैल जन कार्यक्रम के दिन पिछले वर्ष की तरह से ही सभागार खचाखच भरा हुआ था। लगभग सात हजार लोग सभागार के अन्दर थे – एक हजार योगी और लगभग छह हजार नए साधक। सर्वप्रथम सहजयोग का संक्षिप्त परिचय दिया गया और इसके बाद श्रीमाताजी का प्रवचन हुआ। पिछले वर्ष के प्रवचन की तरह से ही इस बार भी श्रीमाताजी ने सूफीमत और सहजयोग में समानता पर प्रकाश डाला। आश्चर्य की बात यह थी कि इस बार श्रीमाताजी ने फ्रांस के लोगों को उनके खानपान, मद्यपान और कुछ अन्य आदतों तथा तुर्की और कुछ अन्य अफ्रीकन देशों पर उनके आवंछित प्रभाव के लिए उन्हें दोषी ठहराया। श्रीमाताजी ने कहा कि फ्रांसिसी नाटककार मौलीरे (Moliere) ने इनको मूर्खता के विषय में काफी लिखा है।

"कुछ फ्रांसिसी लोग आपको तथा आपके दूरदर्शन को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं। अतः सावधान रहें। वो ईसा विरोधी कार्य करते है।" श्रीमाताजी ने यह भी कहा कि हमें अपनी संस्कृति को बनाए रखना है। "ईसा मसीह की माँ यहां आईं थी और मैं भी यहाँ आई हूँ, क्योंकि यहाँ के लोग बहुत अच्छे है।"

उन्होनें कहा कि तुर्कीस्तान के लोगों को अपने विवेक का उपयोग करना चाहिए तथा चहुँ ओर पहले सुसभ्य कहलाने वाले फ्रांसिसी प्रभाव के शिंकजे में नहीं फंसना चाहिए।

यह बात सुनकर लगभग 50 लोग उठ कर चले गए। तत्पश्चात् श्रीमाताजी ने कहा कि बिना भली–भांति समझे लोगों को कुछ नहीं करना चाहिए। श्रीमाताजी का इशारा कुछ विशेष कुप्रथाओं की ओर था। इस पर और 50 लोग चले गए। आत्म–साक्षात्कार से पूर्व श्रीमाताजी ने उपस्थित साधकों को प्रश्न पूछने का निमंत्रण दिया। अत्यन्त सहजतापूर्वक उन्होनें साधकों के प्रश्नों के उत्तर दिए। कुछ प्रश्न इस प्रकार से थे:

प्रश्न : महान इस्लामिक सूफी मैवलाना जलालेटीन रूमी (Mevlane Jelalettin Rumi) ने कहा है, "यदि मैं रहस्यों से पर्दा हटाऊँगा तो मैं भस्म हो जाऊंगा तथा अन्य मानव भी भस्म हो जाएगें।"

श्रीमाताजी : यह सत्य है। उस समय तक लोग चेतन न थे। उन्होनें ईसामसीह को क्रूसा रोपित कर दिया, मोहम्मद साहब को सताया। परन्तु मुझे इसका भय नहीं है। उन्हें मुझको भस्म करने दो। मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं है।

प्रश्न : फ्रांसिसी लोगों के बारे में आपने कहा कि वे विश्व शान्ति विरोधी कार्य कर रहे हैं। क्या ये बात फ्रांस के सभी लोगों पर लागू होती है?

श्रीमाताजी : निःसन्देह नहीं। अपवाद **(Exception)** भी है। अपवाद सभी जगह हैं।

प्रश्न : मृत्यु के विषय में आपके क्या विचार है?

श्रीमाताजी : इसके बारे में हम बाद में बात करेंगे आप सभी युवा हो मृत्यु के विषय में न सोचें, वर्तमान को सोचें वर्तमान में बहुत कुछ काम किया जाना है' मृत्यु के विषय में सोचने का अर्थ है वर्तमान से पलायन करने का प्रयत्न करना।

प्रश्न : लोग झूठ क्यों बोलते हैं?

श्रीमाताजी : क्योंकि सत्य तथा सत्य की शक्ति का ज्ञान उन्हें नहीं हैं

प्रश्न : क्या योग मस्तिष्क की शक्ति से प्राप्त किया जाता है?

श्रीमाताजी : यह मस्तिष्क से परे है आत्मा–साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आप इस बात को महसूस करेंगे।

प्रश्न : आपको आत्म–साक्षात्कार कहां प्राप्त हुआ? क्या आप स्वयं को पैगम्बर मानती हैं? परमात्मा के समीप आपका स्थान कहां हैं?

श्रीमाताजी : मेरी चिन्ता मत कीजिए, अपनी चिन्ता कीजिए।

तत्पश्चात् आत्म–साक्षात्कार का सत्र आया, अत्यन्त छोटा सा जिसमें जूते उतारने के लिए भी नहीं कहा गया 'श्रीमाताजी ने कहा कि दस हजार लोगों को आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हो गया है।

पच्चीस मिनट तक साधकों ने अल्लाह हू कव्वाली संगीत सुनते हुए उसके साथ नृत्य करके अपने पुनःर्जन्म को मनाया।

अगले दिन सभी दूरदर्शन चैनलों ने जन–कार्यक्रम के बहुत से दृश्यों को प्रसारित किया एक को छोड़ कर सभी इसके विषय में सकारात्मक थें। परन्तु ये सकारात्मक चैनल श्रीमाताजी के संदेश तथा चैतन्य लहरियों को फैलाने के लिए पर्याप्त न थें। स्टार टी.वी. चैनल ने तो आत्म–साक्षात्कार सत्र के एक भाग का सीधा प्रसारण भी किया। 27 अप्रैल, शनिवार के दिन श्रीमाताजी ने इस्ताम्बूल छोड़ा। योगीजन किंचित उदास हुए क्योंकि माँ हमें छोड़ कर जा रहीं थीं। एक चैनल का नकारात्मक प्रसारण भी उनकी उदासी का कारण था'। परन्तु आश्चर्य की बात है एक कस्टम अधिकारी ने एक

सहजयोगिनी से कहा, "टी.वी. प्रसारणों की चिंता न करें। वे (श्रीमाताजी) अत्यन्त आध्यात्मिक व्यक्ति हैं। ये बात हम जानते हैं।" हम सब हैरान थे और इससे हमारा खोया हुआ आनन्द लौट आया।

एक अन्य आश्चर्य यह था कि इस नकारात्मक दूरदर्शन प्रसारण से प्रभावित पोलिस का मुखिया वायुपतन पर कुछ कठिनाइयां खड़ी कर रहा था। वह श्रीमाताजी के बारे में पूछताछ कर रहा था। उसे भी आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए निमंत्रित किया गया। श्रीमाताजी के दाएं हाथ के इशारे मात्र से उसे जो तीव्र शीतल लहरियां प्राप्त हुईं उनसे वह दंग रह गया और हतप्रभ सा होकर पूछने लगा, "मुझे क्या हो रहा है?"

इस तरह सभी कुछ अत्यन्त सुखकर बन गया। उसने पहचान लिया था कि श्रीमाताजी कौन है।

धूल–कण

बनना चाहती हूँ
सूक्ष्म धूल कण की तरह
वायु के साथ चलता है जो
जाता है सर्वत्र और
बैठ सकता है सिर पर सम्राट के
गिर सकता है या
किसी के चरणों पर
कहीं भी जाकर
बैठ सकता है ये
धूल का ऐसा कतरा बनना चाहती हूँ मैं
सुवासित हो जो
पोषक हो जो
प्रबुद्धता दायक भी तथा।

माता जी श्री निर्मला देवी
(अंग्रेजी का भाष्यान्तर)

पर्वत

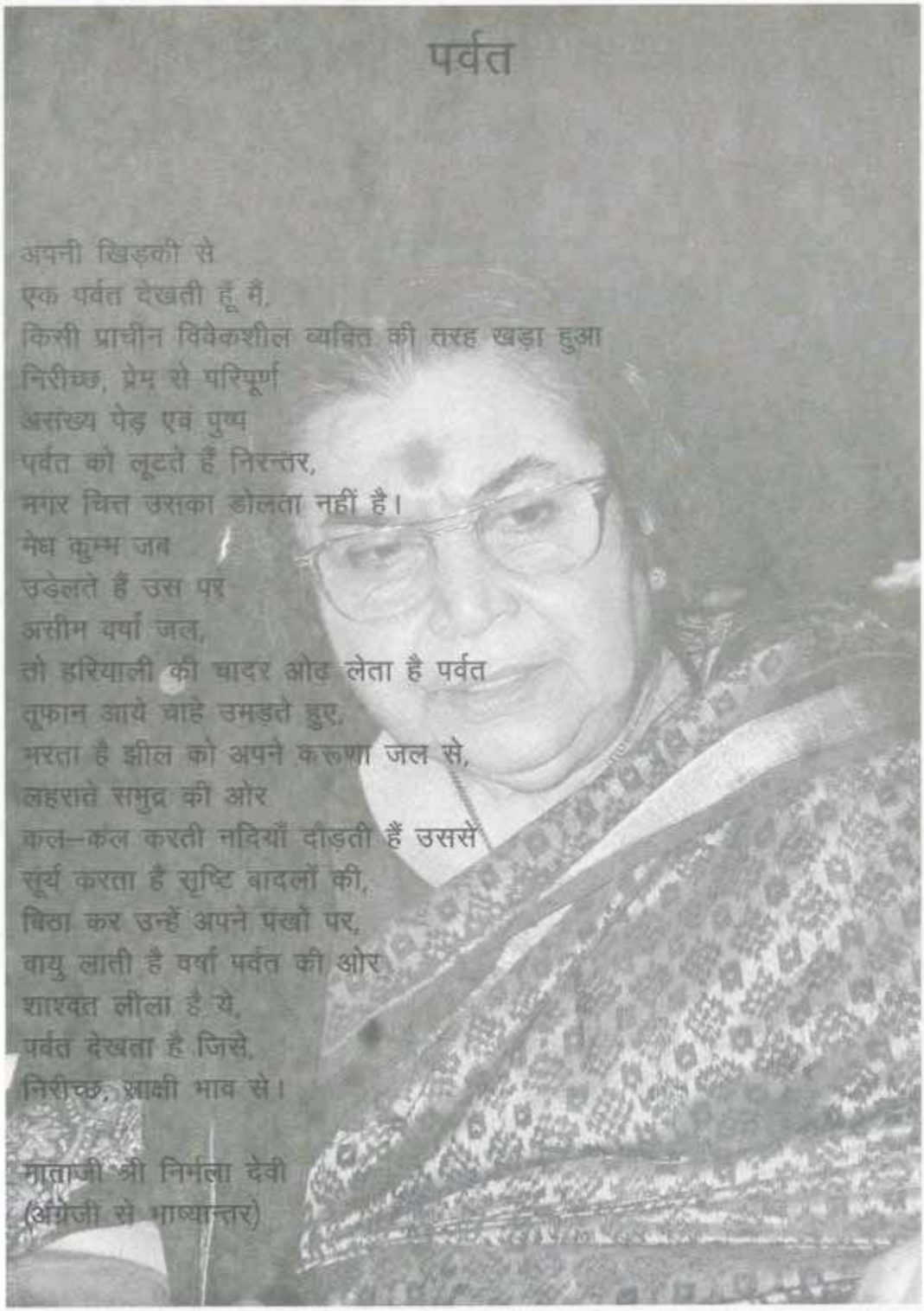

अपनी खिड़की से
एक पर्वत देखती हूं मैं,
किसी प्राचीन विवेकशील व्यक्ति की तरह खड़ा हुआ
निरीच्छ, प्रेम से परिपूर्ण
असंख्य पेड़ एवं पुष्प
पर्वत को लूटते हैं निरन्तर,
मगर चित्त उसका डोलता नहीं है।
मेघ कुम्भ जब
उड़ेलते हैं उस पर
असीम वर्षा जल,
तो हरियाली की चादर ओढ़ लेता है पर्वत
तूफान आये चाहे उमड़ते हुए,
भरता है झील को अपने करुणा जल से,
लहराते समुद्र की ओर
कल–कल करती नदियाँ दौड़ती हैं उससे
सूर्य करता है सृष्टि बादलों की,
बिठा कर उन्हें अपने पंखों पर,
वायु लाती है वर्षा पर्वत की ओर
शाश्वत लीला है ये,
पर्वत देखता है जिसे,
निरीच्छ, साक्षी भाव से।

माताजी श्री निर्मला देवी
(अंग्रेजी से भाष्यान्तर)

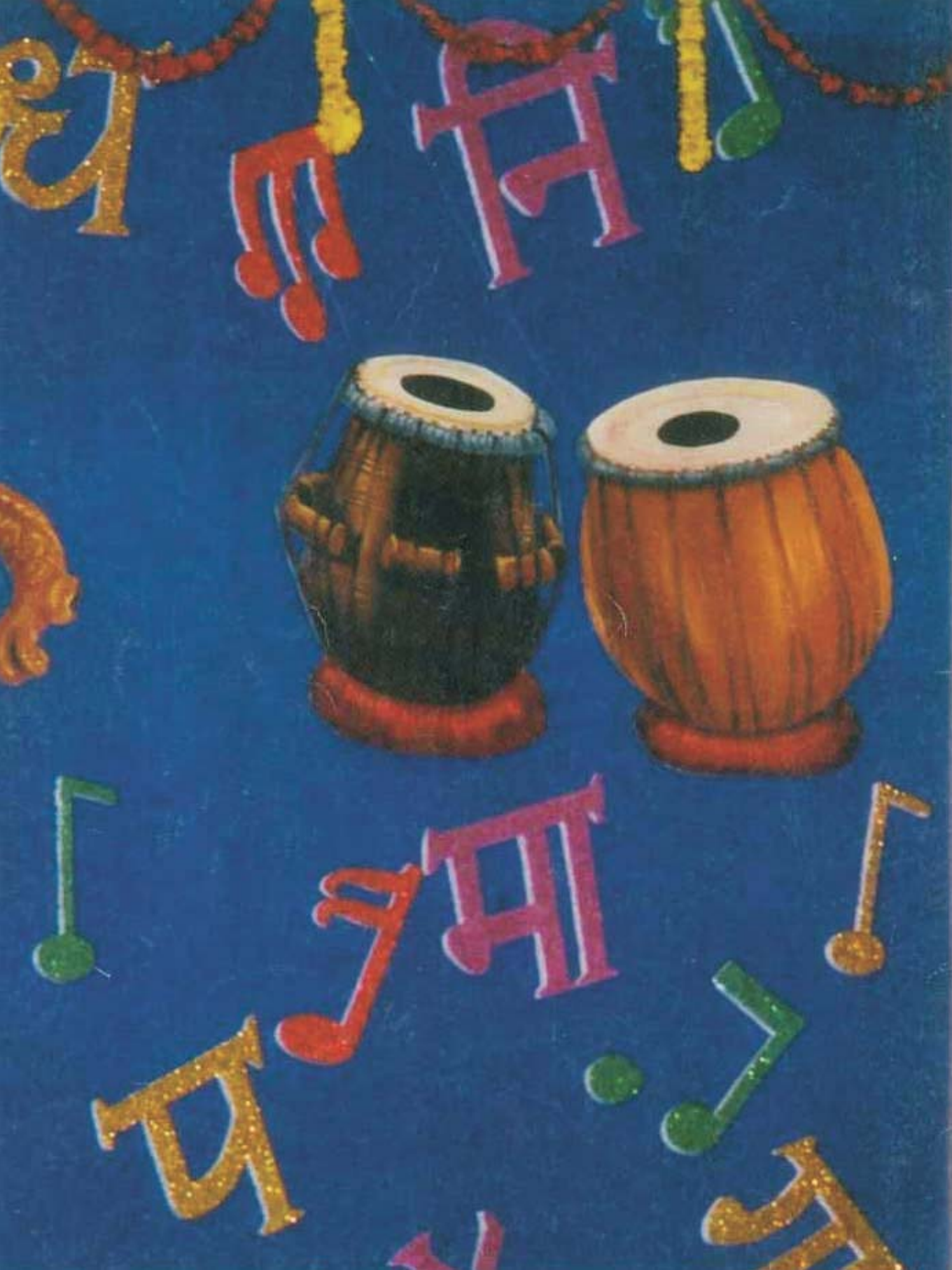
ध
नि
सा
प